राष्ट्रीय संस्करण

प्रिंस चार्ल्स भी आए कोरोना वायरस की चपेट में >>11

वर्ष 3 अंक 288

दैनिक जागरण

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, गुरुवार, 26 मार्च 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 14

कोरोना मीटर

	विश्व	चीन	इटली	भारत	दिल्ली
कुल केस	4,39,941	81,218	69,176	632	35
मौतें	19,744	3,281	6,820	11	2
स्वस्थ हुए	1,11,942	73,650	8,326	43	5

अन्य संक्रमित राज्य

राज्य	केस	मौतें
महाराष्ट्र	122	3
केरल	112	1
कर्नाटक	51	1
तेलंगाना	39	1
उत्तर प्रदेश	39	0
गुजरात	39	1
राजस्थान	38	1
पंजाब	31	1
बिहार	4	1

समय : रात 11 बजे तक

अन्य संक्रमित देश

देश	केस	मौतें
अमेरिका	55,081	785
स्पेन	47,610	3434
जर्मनी	34,009	181
ईरान	27,017	2077

निश्चिंत रहें, पूरी तरह सुरक्षित है आपका अखबार

आप सब इससे अवगत ही होंगे कि प्रख्यात डॉक्टर, वैज्ञानिक, स्वास्थ्य विशेषज्ञ आदि बार-बार यह कह रहे हैं कि अखबारों से कोरोना वायरस के संक्रमण फैलने का कोई खतरा नहीं है। आप पूरी तरह निश्चिंत होने के लिए इस क्यूआर कोड को स्कैन करके खुद देख सकते हैं कि आपका प्रिय दैनिक जागरण समाचार पत्र कितने सुरक्षित तरीके से छपकर आपके हाथों में पहुंचता है। सतर्कता और सजगता की यह प्रक्रिया हम हर दिन-हर क्षण अपनाते हैं, क्योंकि आपकी तरह हम भी कोरोना को परास्त करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस प्रतिबद्धता को और प्रबल करने के लिए यह आवश्यक है कि आप समाचारों के सबसे विश्वसनीय स्रोत से जुड़े रहें। आपकी तरह हमें भी यह भरोसा है कि हम यह जंग जीतेंगे।

कोरोना से जंग 21 दिन में जीत लेंगे : प्रधानमंत्री

मोदी बोले ▶ महामारी को दृढ़ संकल्प से ही हराना संभव

महाभारत के युद्ध के समय श्रीकृष्ण थे सारथी, आज देश की 130 करोड़ जनता है

जागरण संवाददाता, वाराणसी

देश में जारी लॉकडाउन के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी की जनता से वीडियो कांफ्रेंसिंग से बात की। उन्होंने कहा कि महाभारत का युद्ध 18 दिन में जीता गया था। आज कोरोना के खिलाफ पूरा देश लड़ रहा है। उसमें 21 दिन लगेंगे। महाभारत के युद्ध के समय श्रीकृष्ण सारथी थे। आज देश की 130 करोड़ जनता सारथी है।

पीएम ने कहा, देशवासी गलतफहमी से बाहर निकलें। देश इस समय गंभीर संकट से गुजर रहा है। संक्रमण का फैलना नहीं रुका तो कितना नुकसान होगा, इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। यह महामारी गरीब-अमीर नहीं देखती, दृढ़ संकल्प से ही इसे हराना संभव है। आज फिर संकल्प लें कि हम किसी भी हालत में 21 दिनों तक घरों से बाहर नहीं निकलेंगे, उचित दूरी बनाए रखेंगे।

मोदी ने कहा, काशी का अर्थ है शिव यानी कल्याण। महादेव की नगरी काशी में ही इस संकट की घड़ी में सबको मार्ग दिखाने का सामर्थ्य है। काशी ही देश का मार्गदर्शन कर सकती है। काशी तो शाश्वत, सनातन और समयातीत है। लॉकडाउन की परिस्थिति में काशी पूरे देश को सहयोग, शांति, सहनशीलता, साधना, सेवा, समाधान, संयम और संवेदनशीलता-समन्वय की सीख दे सकती है। पीएम ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा, आप सभी पूजा-अर्चना में व्यस्त होंगे। नवरात्रि के पहले दिन मां शैलपुत्री की पूजा की जाती है। उन्हें प्रकृति की देवी कहा जाता है। आज देश जिस संकट से गुजर रहा है, उसमें हम सभी को मां शैलपुत्री के आशीर्वाद की आवश्यकता है। काशी का सांसद होने के नाते मुझे आपके बीच होना चाहिए लेकिन, जो हालात हैं उसके चलते मैं दिल्ली में हूं। मैं काशी के बारे में निरंतर अपने साथियों से अपडेट ले रहा हूं।

पीएम ने बताया कि कोरोना के संबंध में सही जानकारी के लिए सरकार ने वाट्सएप के साथ मिलकर एक नंबर (9013151515) जारी किया है। इस नंबर को आप सभी फोन में सुरक्षित कर लें और उस पर नमस्ते लिखकर वाट्सएप करें। इसके बाद कोरोना से जुड़ी हर जानकारी मिलती रहेगी। उन्होंने कहा, कोरोना से लड़ने के लिए करुणा का भाव जरूरी है। नवरात्र में नौ दिन हम कन्याओं को भोजन कराते हैं। इस बार नवरात्र 21 दिन का समझकर नौ गरीब परिवारों को रोज भोजन उपलब्ध कराना ही मां की सच्ची आराधना है। पशुओं के सामने भी भोजन का संकट है। उन्हें भी भोजन उपलब्ध कराएं।

- अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी के लोगों से किया सीधा संवाद
- कोरोना के संबंध में जानकारी के लिए वाट्सएप नंबर 9013151515 जारी

पीएम का आह्वान

- 21 दिनों तक नौ गरीब परिवारों की लें जिम्मेदारी, यही मां की सच्ची सेवा और साधना
- पशुओं के सामने भी भोजन का संकट, उन पर भी दिखाएं दया

राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के बीच पीएम ने बुधवार को अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी के लोगों से वीडियो कांफ्रेंसिंग से कोरोना वायरस पर चर्चा की। प्रेट्र

वायरस से पीड़ित लाखों लोग हुए ठीक

प्रधानमंत्री ने संवाद के दौरान कहा कि कोरोना वायरस से लाखों लोग ठीक हो चुके हैं। भारत में भी बड़ी संख्या में लोग ठीक हुए हैं। यदि आपने सरकार की ओर से जारी गाइडलाइन का पालन किया तो इस महामारी को हम पूरी तरह रोक देंगे।

डॉक्टर-नर्स ईश्वर की भूमिका में, उन्हें परेशान किया तो ठीक नहीं

मोदी ने एक सवाल का जवाब देते हुए कहा कि मुझे शिकायतें आई हैं कि कुछ लोग डॉक्टर-नर्स के साथ गलत व्यवहार कर रहे हैं। यह उचित नहीं है। डॉक्टर और नर्स इस समय ईश्वर का रूप हैं, जो अपनी जिंदगी की परवाह न करते हुए लोगों की सेवा में लगे हैं। पुलिस, प्रशासनिक अधिकारी, मीडियाकर्मी व आवश्यक सेवा से जुड़े लोग जान की परवाह न करते हुए सेवा कर रहे हैं। इनके लिए सम्मान का भाव होना चाहिए। हमें उनका हौसला बढ़ाना चाहिए।

इनसे किया संवाद

पीएम के सामने वस्त्र कारोबारी अखिलेश खेमका, सामाजिक कार्यकर्ता मोहिनी झंवर, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के प्रो. केके बाजपेयी, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा. गोपालनाथ और गृहणी अंकिता खत्री ने अपने सवाल और विचार रखे।

मोदी के संपूण लॉकडाउन के एलान में टूटा राजनीतिक दायरा पेज>>3

मुनाफाखोरों को सरकार की कड़ी चेतावनी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- खाद्य एवं उपभोक्ता मंत्रालय और गृह मंत्रालय ने राज्यों को लिखा
- राज्यों को तीन महीने का राशन एडवांस में उठाने का निर्देश

कोरोना के प्रकोप को रोकने के लिए 21 दिनों के राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन की घोषणा के बाद आवश्यक वस्तुओं के मूल्य में महंगाई का रुख दिखने लगा है। सरकार ने इसे गंभीरता से लेते हुए मुनाफाखोरों को कड़ी चेतावनी दी है। केंद्रीय उपभोक्ता एवं खाद्य मंत्री रामविलास पासवान ने कहा है कि अनाज व अन्य जरूरी चीजों की आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है।

गृह मंत्रालय ने भी सभी राज्यों के मुख्य सचिवों और पुलिस प्रमुखों को लिखे पत्र में कहा है कि वे सोशल डिस्टेंसिंग का पूरी तरह पालन कराएं व लॉकडाउन के दौरान आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित करें। पत्र के मुताबिक, लॉकडाउन का पूरी तरह पालन कराना जरूरी है मगर आवश्यक वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति भी उतनी ही जरूरी है। इसके लिए एक नोडल ऑफिसर की नियुक्ति की जा सकती है।

पासवान ने कालाबाजारी करने वाले निर्माताओं व व्यापारियों को कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी है। बाजार में जिंसों की आपूर्ति सुनिश्चित करने को लेकर केंद्र निरंतर राज्यों के संपर्क में है। उन्होंने कहा, जिंस बाजार में किसी चीज की कमी नहीं है। सरकार ने कई अहम कदम उठाए हैं।

दरअसल, पिछले एक सप्ताह के दौरान कई जिंसों के मूल्य बढ़े हैं जिनमें दालें और सब्जियां प्रमुख हैं। सरकार का दावा है कि सभी जिंसों की पर्याप्त आपूर्ति हो रही है। केंद्रीय एजेंसियां भी बाजारों पर नजर रखें हैं, लेकिन निचले स्तर पर खुदरा व्यापारियों की कुछ जगहों पर मनमानी की सूचना है। इसके लिए सभी राज्य सरकारों को अपने स्तर पर कार्रवाई करने को कहा गया है।

पासवान ने एक ट्वीट में निर्माताओं व व्यापारियों से इस संकट के दौर में मुनाफाखोरी से बचने को कहा है। केंद्र ने 23 मार्च को ही राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को तीन माह का एडवांस राशन एफसीआइ के गोदामों से उठाने को कह दिया है, ताकि लोगों को परेशानी न हो।

केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में हुए फैसले की जानकारी देते हुए केंद्रीय सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावडेकर ने कहा, सरकार 27 रुपये प्रति किलो की लागत वाला गेहूं दो और 37 रुपये किलो वाला चावल तीन रुपये किलो के भाव पर 80 करोड़ जनता को मुहैया करा रही है। सरकारी गोदामों में इस समय 4.35 करोड़ टन अतिरिक्त खाद्यान्न पड़ा हुआ है, जिसमें 2.72 करोड़ चावल और 1.63 करोड़ टन गेहूं है। इस तरह सरकार के पास पर्याप्त अनाज है।

आज से सामान्य हो जाएगी जरूरी चीजों की आपूर्ति व्यवस्था : गृह मंत्रालय पेज>>3

अखबार सुरक्षित, बिना आशंकित हुए पढ़ें : जावडेकर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- महामारी के खिलाफ जंग में सोशल डिस्टेंसिंग मूल मंत्र
- कैबिनेट की बैठक में हर सदस्य एक दूसरे से बैठा दूर

बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आवास पर बुलाई गई कैबिनेट की बैठक में सोशल डिस्टेंसिंग का पालन किया गया। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में हुई बैठक में मंत्रियों के बीच एक मीटर की दूरी रखी गई थी। एएनआइ

कोरोना से जंग में सोशल डिस्टेंसिंग की अहमियत को देखते हुए कैबिनेट से लेकर प्रेस ब्रीफ्रिंग और आपसी संवाद तक का तौर तरीका बदलने लगा है। बुधवार को प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में हुई केंद्रीय कैबिनेट की बैठक अलग तरीके से हुई, जिसमें बीच की गोल मेज गायब थी और हर मंत्री के बीच कम से कम तीन फीट की दूरी थी। बताया जा रहा है कि मंत्रियों और उच्चाधिकारियों के बीच भी अधिकतर संवाद फोन से हो रहा है। वहीं कोरोना पर जानकारी देने के लिए हुई प्रेस ब्रीफिंग में भी पत्रकारों को आनलाइन सवाल पूछने के लिए प्रेरित किया गया। वहीं यह भी साफ किया गया कि समाचारपत्रों से डरने की जरूरत नहीं है। समाचार पत्रों से जानकारी मिलती है और उसका फायदा उठाएं।

मंगलवार को पीएम ने राष्ट्र के नाम संबोधन में कहा था कि सोशल डिस्टेंसिंग हर किसी के लिए है, जिसमें वह भी शामिल हैं। बुधवार को कैबिनेट बैठक में इसकी झलक भी दिखी। सभी मंत्रियों की कुर्सी इस तरह से लगाई गई थी कि उनके बीच तीन फीट की न्यूनतम दूरी रहे। गृहमंत्री अमित शाह ने भी इसकी जानकारी देते हुए कहा, 'सोशल डिस्टेंसिंग वक्त की जरूरत है, हम इसका पालन कर रहे हैं, क्या आप कर रहे हैं?'

बाद में केंद्र सरकार की दो मीडिया ब्रीफिंग हुई। दोनों में पत्रकारों को सवाल ऑनलाइन पूछने के लिए प्रेरित किया गया। लिखित सवाल पत्रकारों की ओर से पत्र सूचना कार्यालय के डीजी ने पूछे और मंत्री व सचिव ने उत्तर दिया। एक सवाल के जवाब में सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावडेकर ने कहा, समाचारपत्र सुरक्षित हैं। उन्होंने आश्चर्य जताया कि अखबार ग्राहकों तक नहीं पहुंच रहा है। जावडेकर ने कहा, 'खुद मेरे घर आज कोई अखबार नहीं आया। लोगों को आशंकित नहीं होना चाहिए। हर काम की तरह समाचारपत्र पढ़ने के बाद हाथ धो लें।' ज्ञात हो, वैज्ञानिकों ने कहा है कि छिद्रदार होने की वजह से समाचारपत्रों में संक्रमण की आशंका नहीं होती है।

अखबार छूने से नहीं फैलता कोरोना पेज>>6

सरोकार

कतरन से सहेज रहे सांसों की सरगम

इटावा : उप्र के दो सिलाई कारीगरों ने मानवता की मिसाल पेश की है। बचे-खुचे कपड़ों से मास्क बनाकर निश्शुल्क बांट रहे हैं। कोरोना को हराने का जज्बा जगाती लाइव स्टोरी। (पेज-7)

जागरण विशेष

जिंदगी का दायरा बढ़ा रहे ये छोटे गोल घेरे...

प्रयागराज : कोरोना को लेकर अब हर कोई सतर्क नजर आ रहा है। जरूरत पर लोग बाहर भी निकल रहे हैं तो पूरी सतर्कता के साथ। प्रयागराज से प्रेरक रिपोर्ट। (पेज-7)

कोरोना को हराना है

सशस्त्र बल कोरोना से युद्ध स्तर पर मुकाबला करें : रावत • पेज 3

उत्तर प्रदेश में पान मसाला बनाने और बेचने पर प्रतिबंध • पेज 4

डब्ल्यूएचओ के विशेषज्ञों से प्रियंका चोपड़ा ने पूछे सवाल • पेज 4

लोगों की मदद के लिए तैयार रहें स्वयंसेवक : मोहन भागवत • पेज 5

21 मार्च के बाद विदेश से आए 64 हजार लोगों पर खास नजर • पेज 5

आप की सतर्कता से रुक सकती है तीसरी स्टेज • पेज 6

प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने से ही हारेगा कोरोना वायरस • पेज 7

केंद्र सरकार ने शुरू की वैकल्पिक एकेडमिक कैलेंडर की तैयारी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- एनसीईआरटी सहित सभी स्वायत्त संस्थानों को काम शुरू करने के निर्देश

कोरोना संकट को देखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने वैकल्पिक एकेडमिक कैलेंडर की तैयारी शुरू कर दी है। मंत्रालय ने एनसीईआरटी, सीबीएसई सहित सभी स्वायत्त संस्थानों को इस पर तेजी से काम शुरू करने को कहा है। मौजूदा एकेडमिक कैलेंडर के तहत देश भर में एक अप्रैल से नया स्कूली सत्र शुरू हो जाता है, जबकि उच्च शिक्षण संस्थानों का सत्र एक जुलाई से शुरू होता है।

सीबीएसई की 10वीं और 12वीं की परीक्षाएं अभी भी जिस तरह से फंसी हुई है, उसका असर उच्च शिक्षण संस्थानों के एकेडमिक कैलेंडर पर पड़ना तय है, अगले 21 दिनों के लिए पूरी व्यवस्था ठप है। ऐसे में पढ़ाई भी प्रभावित होगी। मंत्रालय के अफसरों ने कहा, नए एकेडमिक कैलेंडर के तहत स्कूलों में मई-जून में होने वाले ग्रीष्मकालीन अवकाश को खत्म किया जा सकता है। नवोदय विद्यालय संगठन ने अपने स्कूलों में छुट्टियां घोषित कर दी है। अब उसके स्कूल 25 मई को खुलेंगे।

और टलेंगी नीट, जेईई और बोर्ड की बाकी बची परीक्षाएं : मंत्रालय ने नेशनल टेस्टिंग एजेंसी, सीबीएसई व एनआईओएस जैसे संगठनों को भी प्रस्तावित परीक्षाएं और टालने की सलाह दी है। इनमें सीबीएसई की बाकी बची परीक्षाओं के साथ नीट, जेईई और एनआईओएस से जुड़ी परीक्षाएं शामिल हैं। मंत्रालय ने इस संबंध में सभी संस्थानों को निर्देश जारी कर दिया है।

वैकल्पिक गर्भगृह में विराजमान हुए रामलला

जागरण संवाददाता, अयोध्या

- मूल गर्भगृह से रामलला को अपने हाथों में लेकर वैकल्पिक गर्भगृह तक पहुंचे मुख्यमंत्री आदित्यनाथ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को नवरात्र के पहले दिन अयोध्या स्थित रामलला को नए गर्भगृह में स्थापित किया और प्रार्थना की। जीतू निषाद

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को ब्रह्म मुहूर्त में रामलला को नए गर्भगृह में स्थापित किया। वह तड़के 4:10 बजे मूल गर्भगृह में पहुंचे, जहां तीन बजे से ही 10 वैदिक आचार्य रामलला से वैकल्पिक गर्भगृह में चलने की प्रार्थना कर रहे थे। प्रार्थना समाप्त होने के बाद रामलला को नए गर्भगृह में ले जाने का जिम्मा स्वयं मुख्यमंत्री ने उठाया और करीब सौ मीटर दूर वैकल्पिक गर्भगृह की ओर रवाना हुए। यह सफर करीब पांच मिनट में पूरा हुआ। वैकल्पिक गर्भगृह में रामलला के विराजमान होते ही मंदिर निर्माण का पहला चरण पूरा हो गया है।

योगी ने कहा, मौजूदा पीढ़ी सौभाग्यशाली है, जो रामजन्मभूमि पर भव्य मंदिर का निर्माण देख पाएगी। इसका सपना हमारे पूर्वज, पूज्य संतों ने देखा था और उसका प्रथम चरण आज चैत्र शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि के साथ पूर्ण हुआ।

मुख्यमंत्री ने दिया 11 लाख रुपये का चेक : मंदिर निर्माण के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय को 11 लाख रुपये का चेक प्रदान किया। यह राशि मुख्यमंत्री ने गोरक्षा पीठाधीश्वर के तौर पर मंदिर निर्माण के लिए व्यक्तिगत सहयोग के रूप में प्रदान की।

सदियों बाद आया यह क्षण : रामलला की स्थापना के बाद तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्यों और चुनिंदा सहयोगियों से मुखातिब मुख्यमंत्री ने भारतीय नव वर्ष की बधाई देने के साथ इस दिन को बेहद सौभाग्यशाली बताया। उन्होंने कहा, रामलला की गरिमा का यह क्षण सदियों बाद आया है। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर रामलला से वैश्विक महामारी से लड़ने में सक्षम बनाने की प्रार्थना की।

जनगणना और एनपीआर की प्रक्रिया फिलहाल स्थगित

नई दिल्ली : कोरोना को फैलने से रोकने के लिए तीन हफ्ते के लॉकडाउन के एलान के बाद भारत के महापंजीयक (रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया) ने 2021 की जनगणना के पहले चरण व नेशनल पॉपुलेशन रजिस्टर (एनपीआर) को अपग्रेड करने की प्रक्रिया को स्थगित कर दिया है। प्रक्रिया एक अप्रैल 2021 से 30 सितंबर तक होनी थी। (पेज-3)

टोक्यो ओलंपिक अगले साल गर्मियों से पहले होने की उम्मीद

लुसाने : अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के अध्यक्ष थॉमस बाक ने बुधवार को कहा कि टोक्यो ओलंपिक अगले साल गर्मियों से पहले हो सकते हैं लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि इन खेलों के कार्यक्रम को बनाना मुश्किल चुनौतीपूर्ण होगा। जापान के पीएम व बाक ने मंगलवार को टोक्यो ओलंपिक को अगले साल के लिए स्थगित कर दिया था। (पेज-12)

राहत की बात

तेजी से नहीं बदल रही वायरस की जेनेटिक संरचना

कोरोना के कहर से जूझ रहे लोगों के लिए राहत, दवा और वैक्सीन विकसित होने पर लंबे समय तक रहेगी कारगर, भारत में पाए गए कोरोना वायरस काफी हद तक एक समान

नीलू रंजन, नई दिल्ली

कोरोना के कहर से जूझ रहे लोगों के लिए एक राहत देने वाली खबर है। इंफ्लुएंजा की तरह कोरोना वायरस अपनी जेनेटिक संरचना तेजी से नहीं बदल रहा है। यानी चार महीने पहले चीन के वुहान में उसकी संरचना जैसी थी अब भी लगभग वैसी ही है। इसके कारण कोरोना वायरस के खिलाफ लंबे समय तक काम करने वाला वैक्सीन बनाना आसान होगा। जबकि इंफ्लुएंजा जैसे कई वायरस लगातार अपनी जेनेटिक संरचना बदलते रहते हैं और उनके लिए हर बार नई वैक्सीन तैयार करनी पड़ती है।

भारत में कोरोना वायरस के स्वरूप पर नजर रख रहे भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) के वैज्ञानिकों के अनुसार भारत में पाए गए कोरोना वायरस काफी हद तक एक समान हैं। जबकि ये कई देशों में रहने वाले लोगों के माध्यम से भारत पहुंचे हैं। सामान्य रूप से कोरोना वायरस एक से दूसरे मानव शरीर के भीतर गुजरते समय अपनी संरचना बदलता रहता है, जिसे म्युटेशन कहते हैं। कोरोना वायरस में म्युटेशन की यह प्रक्रिया नहीं देखी जा रही है। पिछले हफ्ते आइसीएमआर के वैज्ञानिक रमन गंगाखेड़कर ने बताया था कि भारत में मिले कोरोना के वायरस की जेनेटिक संरचना 99.9 फीसद वुहान शहर में मिले वायरस के समान थी। साथ ही उन्होंने वायरस के म्युटेशन से उसकी जेनेटिक संरचना बदलने की आशंका भी जताई थी।

प्रतीकात्मक फोटो

ऐसा नहीं है कि सिर्फ भारत में ही कोरोना वायरस की जेनेटिक संरचना एक समान मिल रही है। पूरी दुनिया में यह वायरस काफी हद तक एक समान ही पाया जा रहा है। इस कारण यह माना जा रहा है कि कोरोना वायरस में इंफ्लुएंजा जैसे दूसरे वायरस की तरह तेजी से जेनेटिक संचरना बदलने के गुण नहीं हैं। इस कारण यदि इस वायरस को रोकने के लिए कोई वैक्सीन बनती है या फिर इससे प्रभावित मरीजों के लिए कोई कारगर दवा ईजाद की जाती है तो वह लंबे समय तक कारगर रहेगी। वैसे आइसीएमआर के वैज्ञानिकों का कहना है कि इस वायरस के बारे में निश्चित रूप से कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। लंबे समय तक कोरोना वायरस पर नजर रखने के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है। यह कहना भी मुश्किल है कि कितनी जल्दी वैक्सीन तैयार हो सकती है।

मंत्रिसमूह ने कोविड-19 से बचाव की स्थितियों की समीक्षा की पेज>>3

सेंसेक्स में 1,862 अंकों की जबर्दस्त उछाल

मुंबई : दुनियाभर में कोरोना के कहर के चलते बड़ी गिरावटों का सामना करने वाले घरेलू शेयर बाजारों में रौनक लौटती दिख रही है। बुधवार को बीएसई का सेंसेक्स 1,861.75 अंक बढ़कर 28,535.78 अंक पर बंद हुआ। मंगलवार को सेंसेक्स में 692.79 अंकों की बढ़त दर्ज की गई थी। वहीं एनएसई का निफ्टी 516.80 अंक उछलकर 8,317.85 पर बंद हुआ। (पेज-10)

वैश्विक कूटनीति पर भी दिखने लगा कोरोना का असर

नई दिल्ली : कोरोना को लेकर वैश्विक कूटनीतिक सरगर्मी बढ़ने लगी है। अमेरिका-चीन के बीच आरोप-प्रत्यारोप शुरू हो चुका है, वहीं यूरोपीय संघ के देशों के बीच भी आपसी सामंजस्य बिगड़ रहा है। ऐसे में गुरुवार को समूह-20 देशों के नेताओं की वर्चुअल मीटिंग पर सभी की नजर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी गुरुवार को इस शिखर बैठक में सम्मिलित होंगे। (पेज-11)

काबुल में गुरुद्वारे पर आत्मघाती हमला, 25 श्रद्धालुओं की मौत

- अफगान सुरक्षाबलों ने हमलावरों को ढेर कर 80 लोगों को बचाया
- तालिबान ने हमले में हाथ होने से किया इन्कार, आइएस ने ली जिम्मेदारी

काबुल, एजेंसियां : अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में बुधवार सुबह आतंकियों ने एक गुरुद्वारे पर आत्मघाती हमला किया, जिसमें 25 श्रद्धालुओं की मौत हो गई। सुरक्षाबलों ने जवाबी कार्रवाई में सभी हमलावरों को ढेर कर 80 लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। तालिबान के प्रवक्ता जबीहुल्ला मुजाहिद ने हमले में अपने संगठन का हाथ होने से इन्कार किया है। आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट (आइएस) ने हमले की जिम्मेदारी ली है।

काबुल के शोर बाजार क्षेत्र में स्थित इस गुरुद्वारे पर आतंकियों ने सुबह करीब पौने आठ बजे हमला किया। उस समय वहां करीब 150 श्रद्धालु थे। स्थानीय मीडिया के अनुसार, छह घंटे की लंबी लड़ाई के बाद गुरुद्वारे की धर्मशाला पर हमला करने वाले चारों हमलावरों को मार गिराया गया। गृह मंत्रालय ने बताया कि सुरक्षाबलों ने महिलाओं और बच्चों सहित 80 लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला। अफगानिस्तान की संसद के इकलौते सिख सदस्य नरिंदर सिंह खालसा ने कहा कि गुरुद्वारे के अंदर मौजूद एक व्यक्ति ने उन्हें फोन कर इस हमले की जानकारी दी। मीडिया में हमले से संबंधित कुछ तस्वीरें जारी की गईं हैं, इनमें सुरक्षाबल घायलों को स्ट्रेचर पर ले जाते दिखाई दे रहे हैं। एक वीडियो में अस्पताल के बाहर परिजन अपने लोगों का इंतजार कर रहे हैं।

अफगानिस्तान में 1980 में सिखों की आबादी पांच लाख थी पेज>>11

30 अप्रैल तक कर सकते हैं इग्नू की परीक्षा के लिए आवेदन। कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) ने तारीख को बढ़ाया है। इससे पहले यह तारीख 31 मार्च तक थी।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
गुरुवार 26 मार्च 2020

आवश्यक सेवा के लिए 1031 पर फोन कर बनवाएं ई-पास

मुख्यमंत्री ने की घोषणा ▶ लॉकडाउन के दौरान रोजाना इस्तेमाल की वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति की जाएगी सुनिश्चित

कहा, घर पर ही रहकर इस संकट से निपटने में लोग धैर्य रखें, दुकानों पर न लगाएं भीड़

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को कहा कि लॉकडाउन के दौरान राजधानी में रोजाना इस्तेमाल की वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी। आवश्यक सेवा से जुड़े लोगों जैसे सब्जी विक्रेताओं, किराना दुकानदारों एवं दुग्ध विक्रेताओं को ई-पास जारी किए जाएंगे। यह पास हेल्पलाइन नंबर 1031 फोन करके बनवाया जा सकता है।

राजनिवास में उपराज्यपाल अनिल बैजल व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन के साथ बैठक की। इसके बाद संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में मुख्यमंत्री ने कहा कि ई-पास के लिए हेल्पलाइन नंबर मुहैया कराए जाएंगे। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे घबराहट में खरीदारी नहीं करें। आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित करना सरकार की जिम्मेदारी है। इनकी कमी नहीं होने दी जाएगी। लॉकडाउन में घर पर ही रहकर इस संकट से निपटने में लोग धैर्य रखें। बैजल ने कहा कि सरकार दिल्ली में लॉकडाउन का कड़ाई से क्रियान्वयन सुनिश्चित करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोई भी समस्या होने पर हेल्पलाइन नंबर 011-23469526 पर दिल्ली पुलिस आयुक्त कार्यालय में संपर्क किया जा सकता है।

इस तरह मिलेगा ई-पास : जरूरी सेवा से जुड़े लोगों को 1031 पर फोन करके अपनी डिटेल्स देनी होंगी। इसके बाद लोकेशन के आधार पर एक वाट्सएप नंबर दिया जाएगा, जिस पर डिटेल वाट्सएप करनी होंगी। इसके बाद वाट्सएप पर ई-पास आ जाएगा। दूध, सब्जी आदि खरीदने जाने के लिए आम जनता को इस पास की जरूरत नहीं है।

भीड़ लगाने से लॉकडाउन का मकसद खत्म हो जाएगा : मुख्यमंत्री ने कहा कि राशन या सब्जी की दुकान तक जाने पर कोई रोक नहीं है। लेकिन वहां भीड़ न लगाएं। इससे लॉकडाउन का मकसद खत्म हो जाएगा। केजरीवाल ने कहा कि घबराने की जरूरत नहीं है। लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए सरकार काम कर रही है। दरअसल, मंगलवार शाम को पीएम मोदी द्वारा लॉकडाउन का एलान करने पर दुकानों पर भीड़ जुटनी शुरू हो गई थी।

अफवाहों पर न दें ध्यान : केजरीवाल ने कहा कि जिंदगी की मूलभूत चीजों की जरूरतों को पूरा करना निहायत जरूरी है। इसके लिए पूरी व्यवस्था की जाएगी।

डिजिटल प्रेस कॉन्फ्रेंस से पत्रकार वार्ता को संबोधित करते मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल। सौ. दिल्ली सरकार

दवाइयों की सप्लाई बाधित नहीं होगी। इनके लिए ई-पास जारी करने की व्यवस्था की जा रही है। अफवाह पर बिल्कुल ध्यान न दें। जरूरी वस्तु की कोई परेशानी नहीं होने दी जाएगी।

डॉक्टर व नर्सों को धमकी देने वाले मकान मालिकों पर होगी सख्त कार्रवाई : मुख्यमंत्री ने कहा कि सुनने में आया है कि डॉक्टर और नर्सों को कुछ मकान मालिक अपने घर से निकालने की धमकी दे रहे हैं। मकान मालिकों का कहना है कि ये डॉक्टर और नर्सें 24 घंटे कोरोना के मरीजों के बीच रहते हैं। इसलिए इन्हें कोरोना हो गया है अगर यहां रहेंगे तो उन्हें भी कोरोना हो जाएगा। मुख्यमंत्री केजरीवाल ने सख्त चेतावनी दी कि इस तरह की शिकायतों को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यह गलत है। उन मकान मालिकों को कहना चाहता हूं कि भगवान न करे कि कल को आपके बच्चे को कोरोना हो गया तो वह डॉक्टर और नर्स ही काम आएंगे और कोई काम नहीं आएगा। इसलिए, ऐसा मत कीजिए। इसके बाद भी अगर कोई मकान मालिक नहीं माना तो दिल्ली सरकार आदेश जारी कर दिया है। दिल्ली पुलिस ऐसे मकान मालिकों पर सख्त से सख्त कार्रवाई करेगी।

सहयोग से ही सफल होंगे सरकार के प्रयास : केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली सरकार ने कई स्थानों पर गरीबों के लिए खाने की व्यवस्था की है। 72 लाख लोगों को 7.5 किलो मुफ्त राशन दे रहे हैं। हम 8.5 लाख परिवारों को पेंशन दे रहे हैं। इसके बावजूद ऐसे बहुत सारे लोग हैं, जो इसके दायरे से बाहर हैं। ऐसे लोग भी होंगे, जिनके पास राशन कार्ड नहीं है, जिनको पेंशन नहीं मिलेगी, जो बिल्कुल भुखमरी की कगार पर होंगे। ऐसे लोगों के लिए दिल्ली सरकार ने कई रैन बसेरों में खाने का इंतजाम किया है। रैन बसेरे में पहुंचने वालों संख्या में वृद्धि को देखते हुए ऐसे स्थानों की संख्या बढ़ाने के आदेश दिए गए हैं। इन स्थानों पर भी सामाजिक दूरी बनाए रखने का पूरा ध्यान रखा जा रहा है।

कोरोना से लड़ रहे हर कर्मचारी का सभी सहयोग करें : उपराज्यपाल

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : उपराज्यपाल अनिल बैजल ने कोरोना महामारी के दौरान मकान मालिकों द्वारा डॉक्टरों, पैरामेडिकल स्टाफ व अन्य स्वास्थ्यकर्मियों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाओं पर चिंता व्यक्त की है। इस संबंध में उपराज्यपाल ने सभी जिला मजिस्ट्रेट/जिला पुलिस उपायुक्त एवं निगमों के जोनल उपायुक्त को कानूनी प्रावधानों के तहत ऐसे मकान मालिकों के खिलाफ सख्त दंडात्मक कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही इस संबंध में प्रतिदिन अतिरिक्त मुख्य सचिव (गृह) को रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा है। उन्होंने संकट की इस घड़ी में सभी से सामूहिक सहयोग की अपील की है। दिल्ली सरकार ने पहले ही इस महामारी को रोकने के लिए महामारी रोग अधिनियम 1897 के अंतर्गत दिल्ली महामारी रोग, (कोरोना कोविड-19) विनियम, 2020 को अधिसूचित किया है जिसके अंतर्गत इस प्रकार का व्यवहार दंडात्मक श्रेणी में आता है। उपराज्यपाल ने संबंधित विभागों को स्वास्थ्यकर्मियों के लिए उनके आवास से कार्यस्थल / अस्पताल तक सुगम आवागमन की उचित परिवहन व्यवस्था सुनिश्चित करने का भी निर्देश दिया।

लोगों को परेशानी से बचाने में जुटी दिल्ली सरकार

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना एक बड़ी मुसीबत के रूप में सामने आया है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल सहित दिल्ली की पूरी कैबिनेट लोगों को सुविधा दिलवाने के काम में लगी है। मुख्यमंत्री नौकरशाही के साथ-साथ इस मुद्दे पर अपने मंत्रियों, विधायकों और कार्यकर्ताओं से भी फीडबैक ले रहे हैं। जहां भी जनता को परेशानी की बात आ रही है, वह उपराज्यपाल से बात कर समस्या का हल निकाल रहे हैं। कोरोना का प्रकोप बढ़ने के बाद से मुख्यमंत्री कैबिनेट के अन्य सहयोगियों से भी लगातार फीडबैक ले रहे हैं। दिल्ली सरकार में इन दिनों प्रमुख रूप से इसी पर काम हो रहा है कि किस तरह इस दौरान होने वाली परेशानी से लोगों को बचाया जा सके। 22 मार्च को जब जनता कर्फ्यू लगाया गया तो सीएम ने 25 फीसद बसों को चलाए जाने की अनुमति दी थी। सरकार की मानें तो इसका मकसद यह था कि यदि किसी को इमरजेंसी में कहीं जाना पड़ जाए तो वह कम से कम अपने गंतव्य तक पहुंच सके। मगर उस दिन जब बसों में अधिक भीड़ हुई तो मुख्यमंत्री ने अगले ही दिन 50 फीसद बसें चलाए जाने की घोषणा की। इसी तरह अब कर्फ्यू के दौरान लोगों को जरूरी चीजें मिलती रहें, इसे देखते हुए जरूरी दिशा निर्देश जारी किए हैं।

द्वितीय

ब्रह्मचारिणी

देवी आराधना के पर्व वासंतिक नवरात्र के दूसरे दिन भगवती दुर्गा की नौ शक्तियों के दूसरे स्वरूप मां ब्रह्मचारिणी के दर्शन-पूजन का विधान है। देवी ब्रह्मचारिणी का स्वरूप पूर्ण ज्योतिर्मय एवं अत्यंत भव्य है। दाएं हाथ में जप की माला व बाएं हाथ में कमंडल है। जगदंबा के इस स्वरूप की आराधना से तप, शक्ति, त्याग, सदाचार, संयम और वैराग्य में वृद्धि के साथ विजय प्राप्ति होती है। देवी ब्रह्मचारिणी का ध्यान करते हुए 'सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते, स्वर्गापवर्गदे देवी नारायणि नमोस्तुते'। मंत्र से तीन वर्ष की कन्या के पूजन का विधान है।

गौरी दर्शन यात्रा : गौरी दर्शन यात्रा के क्रम में दूसरे दिन ज्येष्ठा गौरी के दर्शन का विधान है।

आज का संदेश : देवी का स्वरूप लक्ष्य प्राप्ति के लिए सतत प्रयासरत रहने का संदेश देता है।

-पं. ऋषि द्विवेदी

न्यूज गैलरी

अब 30 अप्रैल तक जमा करें संपत्ति कर

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 21 दिनों की लॉकडाउन की घोषणा के बाद दक्षिणी निगम ने एक बार आम माफी योजना की आखिरी तारीख को बढ़ा दिया है। दिल्ली सरकार द्वारा 31 मार्च तक लॉकडाउन की घोषणा के बाद इसे 15 अप्रैल कर दिया था, लेकिन प्रधानमंत्री के 21 दिनों के लॉकडाउन की घोषणा के बाद निगम ने इसे 30 अप्रैल कर दिया है। इस योजना के तहत नागरिक बकाया संपत्ति कर पर सौ फीसद ब्याज और जुर्माने की छूट प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ ही निगम ने संपत्ति कर एकत्र करने के लिए हर वार्ड में लगाए जाने वाले कैंपों को भी 19 अप्रैल तक स्थगित कर दिया है। (जासं)

जेएनयू के सभी गेट बंद किए गए : कुलपति

नई दिल्ली : जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के कुलपति प्रो. एम जगदीश कुमार ने कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के लिए लॉकडाउन के सिलसिले में कैंपस के लिए कुछ बातों की अहम जानकारी दी है। उन्होंने जेएनयू कैंपस में रहने वाले सभी शिक्षकों, अन्य स्टाफ और छात्रों को कहा है कि वे अपने कमरों में ही रहें और बाहर ना निकलें। जेएनयू के सभी गेटों को अगले 21 दिनों तक के लिए बंद कर दिया गया है। साथ ही जेएनयू की जिन दुकानों में आवश्यक वस्तुएं प्रदान की जाती हैं, वहां पर सिर्फ परिवार के एक ही सदस्य को जाने के निर्देश दिए गए हैं। सभी इमारतों व केंद्रों को बंद कर दिया गया है। साथ ही स्वास्थ्य केंद्र भी खुला है। इसमें बहुत ही ज्यादा जरूरत पड़ने पर ही जाएं। जेएनयू के विशेष केंद्रों की लैब में बायोलॉजिकल सामग्री को संभाल रहे लोगों को सुरक्षाकर्मियों द्वारा अनुमति लेने के बाद और उन्हें अपनी पहचान बताने के बाद ही अंदर प्रवेश करें। इसमें किसी भी तरह की कोई कोताही न बरतें। (जासं)

कालिंदी कुंज मार्ग पर 101 दिन बाद चले वाहन

नई दिल्ली : सीएए व एनआरसी के विरोध में चल रहे धरना-प्रदर्शन के चलते शाहीन बाग में कालिंदी कुंज मार्ग 15 दिसंबर से बंद था। इससे फरीदाबाद से नोएडा जाने वालों को काफी लंबा चक्कर लगाकर जाना पड़ा रहा था। लेकिन मंगलवार को रास्ता खाली होने के बाद आवश्यक कार्य से जुड़े लोगों ने शाहीन बाग रोड का प्रयोग किया। नोएडा से फरीदाबाद जाने वाले आम नागरिकों को बेहद जरूरी होने पर ही सड़कों पर निकलने के लिए कहा गया है। (जासं)

आदेश के उल्लंघन पर 183 एफआइआर दर्ज

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

कोरोना वायरस के संक्रमण पर अंकुश लगाने के लिए लॉकडाउन किए जाने के बावजूद बुधवार को भी दिल्ली के विभिन्न इलाकों में रहने वाले लोगों ने सरकारी आदेश का जमकर उल्लंघन किया। लापरवाह लोग बगैर जरूरी काम से घरों से बाहर निकले। हालांकि गत दो दिनों की अपेक्षा ऐसे लोगों की संख्या में कमी आई है। दिल्ली पुलिस ने अब ऐसे लोगों के खिलाफ सख्ती करनी शुरू कर दी है।

रविवार रात ही पुलिस आयुक्त एसएन श्रीवास्तव ने पूरी दिल्ली में धारा-144 लगा दी थी। इसके तहत जरूरी काम के बिना घरों से बाहर निकलने पर मुकदमा दर्ज किए जाने के आदेश हैं। इसी के तहत बुधवार को 183 लोगों के खिलाफ सरकारी आदेश का पालन न करने की धारा के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। यह धारा जमानती है इसलिए इन्हें थाने से जमानत मिल गई।

दिल्ली पुलिस के अतिरिक्त जनसंपर्क अधिकारी एसीपी अनिल मित्तल के मुताबिक लॉकडाउन के बावजूद घरों से बाहर निकलने वाले 5,103 लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। इनमें बगैर जरूरी काम से बाहर निकलने वाले 956 लोगों के वाहनों को जब्त कर लिया गया। दिल्ली पुलिस ने 6141 जरूरतमंद लोगों को कर्फ्यू पास जारी किया है। पुलिस अधिकारी का कहना है कि कोरोना के संक्रमण को देखते हुए दिल्ली पुलिस लगातार लोगों से अपील कर रही है कि वे अपने-अपने घरों में कैद रहें। अत्यंत जरूरी हो तभी घरों से बाहर निकलें। हालांकि लॉकडाउन के तीसरे दिन पूरी दिल्ली में पुलिस ज्यादा सख्त दिखाई दी, लेकिन और अधिक सख्ती करने की जरूरत है। बुधवार को सभी थानाक्षेत्र में पुलिसकर्मी जगह-जगह बैरिकेड लगा चेकिंग करते दिखाई दिए। कॉलोनियों व सोसाइटियों के प्रवेश द्वारों पर भी बैरिकेड लगाकर पुलिसकर्मी लोगों से बाहर निकलने का कारण पूछते रहे।

लॉकडाउन के दौरान कनॉट प्लेस आने वाले लोगों से कर्फ्यू पास व परिचय पत्र देखते पुलिसकर्मी। जागरण

राजधानी में निर्बाध जारी रहेगी जलापूर्ति

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली जल बोर्ड के उपाध्यक्ष राघव चड्ढा ने विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक कर पेयजल आपूर्ति की स्थिति की समीक्षा की। साथ ही कर्मचारियों के आवागमन में हो रही परेशानियों पर भी चर्चा हुई। इस दौरान उन्होंने जल बोर्ड को निर्बाध पानी की आपूर्ति का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि जल बोर्ड के टैंकरों का आवागमन बिना रोकटोक हो सकेगा। टैंकरों के संचालन के लिए पुलिस पास की जरूरत नहीं होगी। जल बोर्ड रैन बसेरों में टैंकर से पानी की आपूर्ति भी सुनिश्चित करेगा।

उन्होंने जल बोर्ड को निर्देश दिया कि पानी के टैंकरों के संचालन में परेशानी आए तो पुलिस व जिला मजिस्ट्रेट की मदद लें। अधिकारियों को निर्देश दिया कि आवश्यक रसायनों और अन्य वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए । साथ ही सीवरेज शोधन से संबंधित कार्य भी जारी रहेंगे। बैठक में यह बात आई कि जल बोर्ड के कई कर्मचारी एनसीआर के शहरों से आते हैं। उन्हें आवागमन में परेशानी हो रही है। इस जल बोर्ड को स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर इस समस्या को हल करने का निर्देश दिया गया।

हाई कोर्ट समेत सभी अदालतें 15 अप्रैल तक के लिए निलंबित

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

कोरोना के कारण केंद्र सरकार द्वारा 21 दिन तक पूरे देश को लॉकडाउन करने के फैसले के बाद दिल्ली हाई कोर्ट ने अहम निर्णय लिया है। दिल्ली हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल मनोज जैन ने एक अधिसूचना जारी कर दिल्ली हाई कोर्ट के साथ ही सभी निचली अदालतों की कार्यवाही को 15 अप्रैल तक के लिए निलंबित कर दिया। इसके साथ ही सभी जिला एवं सत्र न्यायधीश को कहा कि वे अपने अधीन कार्य करने वाले न्यायधीशों एवं कर्मचारियों को घर से काम करने की अनुमति दे सकते हैं।

दूसरी तरफ दिल्ली हाई कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेते हुए जमानत पर बाहर कैदियों की जमानत अवधि 15 मई तक के लिए बढ़ा दी है। पैरोल पर जेल से बाहर आए कैदियों की भी पैरोल 15 मई तक के लिए बढ़ा दी गई है। जिन मामलों में स्थगन दे दिया गया था, उन सभी मामलों का स्थगन भी 15 मई तक के लिए बढ़ा दिया गया है। यह आदेश उन सभी मामलों पर प्रभावी होगा, जिसको लेकर 16 मार्च से पहले आदेश पारित हुआ था। मुख्य न्यायमूर्ति डीएन पटेल, न्यायमूर्ति सिद्धार्थ मृदुल एवं न्यायमूर्ति तलवंत सिंह की पीठ ने कहा कि कोरोना को फैलने से रोकने के लिए अदालतों की संख्या कम कर दी गई है।

सीबीएसई ने मान्यता के लिए आवेदन की तारीख बढ़ाई

जासं, नई दिल्ली : कोरोना वायरस के चलते केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने नोटिस जारी कर स्कूलों को मान्यता पाने और बढ़ाने के लिए आवेदन की आखिरी तारीख बढ़ा दी है। नोटिस के मुताबिक जो स्कूल सीबीएसई से मान्यता चाहते हैं या जो मान्यता बढ़ाने या दूसरे बोर्ड से अब सीबीएसई से जुड़ना चाहते हैं, उनके पास आवेदन करने के लिए 30 अप्रैल 2020 तक का समय है। बोर्ड के अधिकारियों के मुताबिक 30 अप्रैल तक आवेदन करने पर किसी भी स्कूल से लेट फीस नहीं ली जाएगी। कई स्कूलों को आवेदन करने में आ रही परेशानी को ध्यान में रखते हुए तारीख बढ़ाई गई है।

नहीं आएगी सेमेस्टर पढ़ाई में बाधा

राहुल मानव, नई दिल्ली

लॉकडाउन की स्थिति में भी दिल्ली के शिक्षण संस्थान अपने छात्रों की अकादमिक गतिविधियों को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। कोरोना के चलते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू), जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), जामिया मिल्लिया इस्लामिया आदि विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर अपने-अपने छात्रों को ऑनलाइन सेमेस्टर की पढ़ाई करवा रहे हैं।

जेएनयू के कुलपति प्रो. एम जगदीश कुमार ने कहा है कि छात्रों को ऑनलाइन अकादमिक गतिविधियों में व्यस्त रखा जा रहा है। इसके लिए प्रोफेसरों को निर्देश दे दिए गए हैं। वहीं, आइपी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. महेश वर्मा ने कहा कि संस्थान के अधीन आने वाले सभी 140 कॉलेजों को और द्वारका सेक्टर 16 सी के कैंपस के शिक्षकों को भी सेमेस्टर की पढ़ाई को ऑनलाइन पूरी करने के लिए कहा गया है। शिक्षक इस काम को बखूबी कर रहे हैं। वहीं, आइआइटी दिल्ली के निदेशक प्रो. वी. रामगोपाल राव ने कहा है कि छात्रों की सेमेस्टर की पढ़ाई को ऑनलाइन पूरा कराने के लिए ईमेल भेज दिया गया है।

ली जा रही हैं ऑनलाइन परीक्षाएं : जामिया मिल्लिया इस्लामिया की कुलपति प्रो. नजमा अख्तर ने बताया है कि जामिया के प्रोफेसर ऑनलाइन छात्रों की कक्षाएं ले रहे हैं और उनका जनवरी से अप्रैल तक के सेमेस्टर की बची हुई पढ़ाई को पूरा करवा रहे हैं। ये कक्षाएं गूगल क्लासरूम के जरिये ली जा रही हैं। साथ ही ईमेल पर छात्रों को असाइनमेंट दिए जा रहे हैं। साथ ही उसकी परीक्षाएं भी ली जा रही हैं। इन परीक्षाओं का मूल्यांकन विभागों के अध्यक्षों की निगरानी में ऑनलाइन माध्यम से प्रोफेसर कर रहे हैं।

डीयू के प्रोफेसर ले रहे ऑनलाइन कक्षाएं : दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) के नॉन कॉलिजिएट वूमेन एजुकेशन बोर्ड (एनसीवेब) की निदेशक प्रो. गीता भट्ट ने बताया कि एनसीवेब के 26 केंद्रों में 13 हजार से ज्यादा छात्राएं पढ़ती हैं। अब इनकी ऑनलाइन कक्षाएं ली जा रही हैं। साथ ही एक अन्य एप के जरिए कुछ शिक्षक वीडियो लेक्चर भी ले रहे हैं। गूगल क्लासरूम में प्रोफेसर एक अकाउंट तैयार करते हैं और उसका लिंक छात्रों को भेज देते हैं। इस लिंक से जुड़कर छात्र ऑडियो लेक्चर सुन रहे हैं। इसके लिए छात्रों को एक निर्धारित समय दे दिया जाता है।

अस्पतालों ने तैयार किया बैकअप प्लान

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना से जंग के लिए बड़े व सरकारी अस्पतालों ने बैकअप प्लान तैयार किया है। इसके तहत अस्पतालों ने डॉक्टरों व नर्सिंग कर्मचारियों की अलग-अलग टीमें तैयार की हैं। कोरोना के इलाज के लिए उनकी ड्यूटी रोटेशन के आधार पर होगी। एम्स ने भी कोरोना के इलाज के लिए रेजिडेंट डॉक्टरों की दो टीमें तैयार की हैं। पहली टीम अगले चार सप्ताह तक ड्यूटी पर तैनात रहेगी। इसके बाद दूसरी टीम ड्यूटी पर आएगी।

एम्स के इस आदेश में कहा गया है कि अगले चार सप्ताह तक संस्थान के 25 फीसद रेजिडेंट डॉक्टर कोरोना टीम के हिस्सा होंगे। इसमें करीब सभी विभागों के रेजिडेंट डॉक्टर शामिल किए गए हैं। एम्स ने अपने आदेश में कहा है कि इस टीम में शामिल रेजिडेंट डॉक्टरों को अपने विभाग में रिपोर्ट करने की जरूरत नहीं है। इस टीम के सभी सदस्य कोरोना से निपटने के लिए बनाई गई टीम के प्रमुख को रिपोर्ट करेंगे। चार सप्ताह बाद अन्य 25 फीसद रेजिडेंट डॉक्टर अपनी सेवा देंगे। निजी क्षेत्र के स्पाइन इंजरी सेंटर ने भी कोरोना के इलाज के लिए आइसोलेशन वार्ड की व्यवस्था की है।

पुलिस आयुक्त बोले, खाना, दवा और पशुओं का चारा पहुंचाना भी जरूरी

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

जिस तरह लोगों के लिए खाना और दवाएं जरूरी हैं, उसी तरह से पशुओं के लिए भी चारा और दवाएं जरूरी हैं। इन चीजों की डिलीवरी को भी रोका नहीं जा सकता। जरूरी वस्तुओं और सेवाओं में कोई कमी न हो, इसके लिए पुलिस को बेहतर तरीके से कार्य करने की जरूरत है। दिल्ली पुलिस को इस समय में ऐसा कार्य करने की जरूरत है कि इन परिस्थिति से निकलने के बाद लोगों को दिल्ली पुलिस पर नाज हो। ये बातें बुधवार को दिल्ली के पुलिस आयुक्त एसएन श्रीवास्तव ने सभी पुलिसकर्मियों से कहीं।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में धारा 144 लागू है। राजधानी सहित पूरे देश में लॉकडाउन है। इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में लोगों को कुछ कठिनाइयां हो सकती हैं। सभी को आवश्यक वस्तुएं जैसे राशन, दवाएं, दूध, सब्जी आदि की जरूरत है। आवश्यक सुविधाएं जैसे, बिजली, पानी, इंटरनेट, मोबाइल फोन आदि सामान्य परिस्थितियां बनाए रखने के लिए जरूरी हैं। इन सभी सुविधाओं के लिए संबंधित व्यक्तियों का अपने काम पर जाना भी आवश्यक है। बुजुर्गों को भी सहायकों की जरूरत है। पशुओं को भोजन पहुंचाने वाले लोगों का कार्य करना भी जरूरी है। पशुओं का चारा ले जाने वाले वाहनों का भी निर्धारित स्थान पर पहुंचना जरूरी है। होम डिलीवरी सर्विस करने वाले अस्पताल और एयरपोर्ट से जुड़े लोगों को अनावश्यक रोकना नहीं चाहिए। ऐसी स्थिति में पुलिस को ऐसी ड्यूटी करनी चाहिए कि किसी भी व्यक्ति को जरूरी सेवाओं व वस्तुओं की कमी न रहे। इसमें पुलिस उनकी सहायता करे।

घर पर ही रहें पचास साल से अधिक उम्र के पुलिसकर्मी

जासं, नई दिल्ली : कोरोना के संक्रमण से बचने के लिए दिल्ली पुलिस को भी अत्यधिक सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं। पुलिस आयुक्त एसएन श्रीवास्तव ने स्पेशल सेल व क्राइम ब्रांच आदि सभी यूनिटों के डीसीपी को निर्देश दिए हैं कि वे अब ऑफिसों में एक कमरे में बैठकर मीटिंग न लें, बल्कि फोन पर ही मीटिंग लें। आयुक्त के साथ उच्च अधिकारियों की रोज बार-बार होने वाली बैठकों को भी काफी हद तक कम कर दिया गया है। साथ ही यूनिटों में तैनात 50 साल से अधिक उम्र के पुलिसकर्मियों को घर पर आराम करने की सलाह दी गई है। मुख्यालय सूत्रों के मुताबिक स्पेशल सेल, क्राइम ब्रांच, पीसीआर, स्पेशल ब्रांच आदि यूनिटों में तैनात 50 साल से अधिक उम्र के पुलिसकर्मियों को अत्यधिक सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं। आयुक्त ने कहा है कि उन्हें घर पर ही आराम करने दिया जाए। अगर संबंधित अधिकारियों को ऐसे पुलिसकर्मियों को किसी जरूरी काम के लिए कार्यालय बुलाने की जरूरत पड़े, तभी उन्हें बुलाया जाए।

पहल

नेशनल बुक ट्रस्ट ने ऑनलाइन उपलब्ध कराईं सौ से अधिक किताबें, 18 भाषाओं और नामी लेखकों की हैं ये किताबें

घर पर मुफ्त में पढ़ें अच्छी-अच्छी किताबें

संजीव गुप्ता, नई दिल्ली

कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव में अब किताबें भी मददगार बनेंगी। घर बैठे न केवल हर प्रमुख भाषा में नामी लेखकों की किताबें पढ़ने का मौका मिलेगा, बल्कि उनसे जीवन का अनुभव भी प्राप्त होगा। चूंकि किताबें आत्मबल बढ़ाने में सहायक होती हैं, लिहाजा इनकी मदद से लॉकडाउन के तीन सप्ताह की अवधि का समय बिताना भी सहज हो सकेगा।

दरअसल, कोरोना से मुक्ति के लिए छिड़ी देशव्यापी जंग में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एनबीटी) ने भी योगदान देने की पहल की है। इसके अंतर्गत एनबीटी ने 'स्टे होम इंडिया विद बुक्स' लांच किया है। इस पहल के जरिये एनबीटी ने अपनी वेबसाइट एनबीटी इंडिया डॉट जीओवी डॉट इन पर 100 से अधिक किताबें पीडीएफ में तैयार कर अपलोड की हैं। गुरु रविंद्रनाथ टैगोर और प्रेमचंद जैसे ढेरों नामी लेखकों द्वारा लिखित एवं 18 भाषाओं में प्रकाशित इन पुस्तकों को मुफ्त में डाउनलोड कर पढ़ा जा सकता है। हर आयु वर्ग के पाठकों को ध्यान में रखकर वेबसाइट पर अपलोड की गई किताबों में से अनेक किताबें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर भी आधारित हैं।

> घर में देशवासियों को बोरियत न हो, इसी के मद्देनजर यह पहल की गई है। किताबें पढ़ने से न केवल अच्छा लगेगा, बल्कि समय भी व्यतीत होगा और जीवनोपयोगी अनुभव भी मिलेगा। वेबसाइट पर अपलोड किताबों की संख्या भी अभी और बढ़ाई जाएगी।
>
> -युवराज मलिक, निदेशक, एनबीटी

इन भाषाओं में उपलब्ध हैं ये पुस्तकें : हिंदी, अंग्रेजी, असमिया, बांग्ला, गुजराती, मलयालम, उड़िया, मराठी, कोकबोरोक, मिजो, बोडो, नेपाली, तमिल, पंजाबी, तेलुगु, कन्नड़, उर्दू और संस्कृत।

कुछ प्रमुख किताबों के शीर्षक : होलीडेज हैव कम, एनिमल्स यू कांट फॉरगेट, नाइन लिटिल बंडर्स, द पजल, गांधी तत्व सत्यकाम, वूमैन साइंटिस्ट इन इंडिया, एक्टिविटी बेस्ड लर्निंग साइंस, ए टच ऑफ ग्लास, गांधी : नॉन वायलेंस इत्यादि।

प्रतिकात्मक विजुअल

अभी दो दिन और चलेगा तेज हवा और बारिश का दौर

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : मौसमी उतार-चढ़ाव के बीच गुरुवार शाम एक बार फिर दिल्ली की फिजा में बदलाव देखने को मिलेगा। आज तेज हवा के साथ बारिश भी होगी। शुक्रवार को इस बदलाव का सर्वाधिक असर देखने को मिलेगा। हालांकि शनिवार से मौसम साफ हो जाएगा। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि मार्च में अभी तक दिल्ली में 103.3 मिलीमीटर बारिश दर्ज हो चुकी है जो कि मार्च में अभी तक की सर्वाधिक बारिश है।

बुधवार को अधिकतम तापमान सामान्य से तीन डिग्री अधिक 33.3 डिग्री सेल्सियस, जबकि न्यूनतम तापमान 16.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।प्रादेशिक मौसम विज्ञान विभाग दिल्ली के प्रमुख कुलदीप श्रीवास्तव ने बताया कि मजबूत पश्चिमी विक्षोभ के असर से गुरुवार और शुक्रवार को बादल बादल छाए रहेंगे। गुरुवार शाम को 25 से 30 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चलने व हल्की बारिश होने की संभावना है।

सीवर प्लांट में रिपेयरिंग के लिए उतरे कर्मचारी की मौत

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

ओखला इलाके के हरिकेश नगर गांव में बुधवार सुबह सीवर प्लांट में रिपेयरिंग के लिए उतरे दो कर्मचारी जहरीली गैस की चपेट में आ गए। दमकलकर्मियों ने सीढ़ी के जरिये उन्हें बाहर निकाला। इनमें से एक की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, दूसरे को गंभीर अवस्था में अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। ओखला थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

दक्षिण-पूर्वी दिल्ली जिले कि पुलिस उपायुक्त आरपी मीणा ने बताया कि बुधवार सुबह 11.15 बजे पुलिस को सूचना मिली थी कि सीवर प्लांट की सफाई के दौरान दो लोग उसमें गिर गए हैं। पुलिस मौके पर पहुंची और दमकल की टीम ने मौके पर पहुंचकर राहत कार्य शुरू किया। ओखला फायर स्टेशन के इंचार्ज फूलसिंह मीणा के नेतृत्व में हवलदार मोहन, फायर ऑपरेटर पंकज कुमार, जितेंद्र, रोहित व नवीन ने सीढ़ी की मदद से प्लांट में प्रवेश किया और सुरेश सोनू व जसबीर को प्लांट से बाहर निकाला। अस्पताल ले जाने पर डॉक्टरों ने सोनू को मृत घोषित कर दिया। जसबीर का इलाज चल रहा है। जहां हादसा हुआ है वह प्लांट दिल्ली जल बोर्ड का है और यहां सफाई का काम ठेके पर दिया गया है।

सोनू व जसबीर के साथी कर्मचारी मुरारी ने पुलिस को बताया कि सोनू की दिन में ड्यूटी थी। बुधवार सुबह वह प्लांट में रिपेयरिंग करने उतरे थे। वहां वह जहरीली गैस की चपेट में आकर बेहोश हो गए। उन्हें बचाने जसबीर उतरे और वह भी बेहोश हो गए। दोनों को बचाने मुरारी नीचे उतरे, लेकिन गैस ज्यादा होने के चलते वह ज्यादा नीचे नहीं जा पाए।

53526 करोड़ का उत्तराखंड का बजट सदन में एक घंटे में पारित कर दिया गया। इसके साथ ही विधानसभा अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई।

प्रधानमंत्री मोदी के संपूर्ण लॉकडाउन के एलान में टूटा राजनीतिक दायरा

संजय मिश्र, नई दिल्ली

- विपक्ष शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने 21 दिन के लॉकडाउन को कारगर बनाने में झोंकी ताकत
- छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने स्थानीय भाषा में लोगों को संबोधित कर लॉकडाउन का महत्व बताया
- महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने तो यहां तक कहा कि कोरोना वायरस का यह संकट विश्व युद्ध जैसा है

कैप्टन अमरिंदर सिंह।

ममता बनर्जी।

उद्धव ठाकरे। सभी फाइल

कोरोना वैश्विक महामारी के खिलाफ निर्णायक जंग के लिए 21 दिन के संपूर्ण लॉकडाउन की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की घोषणा पर अमल में अब पूरा देश जुट गया है। विपक्ष शासित राज्यों के कई मुख्यमंत्रियों ने भी जबरदस्त गंभीरता और संकल्प दिखाया है।

शायद अब लोगों को अहसास हो गया है कि कोरोना से खिलवाड़ ठीक नहीं है। यही कारण है कि बुधवार को पूरे देश में अनुशासन दिखा और पुलिस-प्रशासन के साथ-साथ सरकारें भी सख्त दिखीं। पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह, वामदल शासित राज्य केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन, बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी समेत सभी विपक्ष शासित राज्यों के मुख्यमंत्री लॉकडाउन लागू करने के लिए सक्रिय और सचेत दिखे। साथ ही उम्मीद जताई कि प्रधानमंत्री का यह आह्वान देश को कोरोना महामारी के इस तांडव से बचाने में कारगर साबित होगा। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने स्थानीय भाषा में लोगों को संबोधित कर लॉकडाउन का महत्व बताया। वहीं महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने तो यहां तक कहा कि यह संकट विश्व युद्ध जैसा है और जैसा जंग में होता है कि हम अपने सबसे सुरक्षित क्षेत्र में होते हैं। इस समय हमारा घर ही सबसे सुरक्षित जगह है क्योंकि हमें नहीं मालूम कि कोरोना का यह शत्रु किधर से हम पर हमला कर दे। मालूम हो कि केरल और महाराष्ट्र दो ऐसे राज्य हैं जहां कोरोना का संक्रमण सबसे ज्यादा फैला है।

तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने भी कहा कि संपूर्ण लॉकडाउन के पीएम के एलान पर अमल में किसी तरह की गुंजाइश नहीं छोड़ेंगे। चेतावनी जारी करते हुए उन्होंने कहा कि लोग नहीं माने तो कर्फ्यू लगेगा और फिर बाहर देखते ही गोली मारने के आदेश तक जारी किए जा सकते हैं। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जहां एक ओर राजधानी में कोरोना की चुनौती से निपटने के लिए केंद्र के साथ कदमताल कर रहे हैं तो दूसरी ओर बुधवार को उन्होंने भी दोटूक कहा कि 21 दिन के संपूर्ण लॉकडाउन की प्रधानमंत्री की घोषणा का सभी को पालन करना चाहिए क्योंकि हमारी जिंदगी के लिए यह बहुत जरूरी है। कांग्रेस की ओर से पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने भले ही खुले तौर पर इस फैसले का स्वागत नहीं किया है, लेकिन पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदंबरम और पार्टी प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने लॉकडाउन को जरूरी बताया है।

कोरोना से निपटने के लिए चिदंबरम ने दिया दस सूत्रीय फॉर्मूला

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- कहा, वायरस के खिलाफ जंग में मोदी कमांडर और जनता योद्धा
- गरीबों के खाते में नकदी ट्रांसफर करने का भी दिया सुझाव

कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में 21 दिनों के संपूर्ण लॉकडाउन को ऐतिहासिक जंग बताते हुए कांग्रेस नेता व पूर्व वित्तमंत्री पी. चिदंबरम ने सरकार को दस सूत्रीय फॉर्मूला सुझाया है। उन्होंने कहा कि लॉकडाउन से खासतौर पर आमलोगों की बढ़ी आर्थिक परेशानियों को देखते हुए उन्हें नकदी और राशन के रूप में तत्काल सहायता मुहैया कराई जानी चाहिए।

संपूर्ण लॉकडाउन का समर्थन करते हुए चिदंबरम ने बयान जारी कर कहा कि यह एलान कोरोना के खिलाफ नया जंग है जिसमें जनता योद्धा है और प्रधानमंत्री कमांडर। हम सभी का कर्तव्य है कि इस समय हम प्रधानमंत्री, केंद्र और राज्य की सरकारों को पूरा समर्थन दें। उन्होंने कहा कि घरों से बाहर नहीं निकलने की घोषणा बिल्कुल ठीक है मगर हमें यह सोचते हुए प्लानिंग भी करनी होगी कि 21 दिनों तक लोग कैसे जीवन बिताएंगे। उनकी रोजमर्रा की जिंदगी की जरूरतें और रोजी रोजगार का संरक्षण जरूरी है।

चिदंबरम का सुझाव है कि पीएम-किसान योजना के तहत राशि को छह हजार से बढ़ाकर 12000 हजार रुपये कर दिया जाए। साथ ही यह अतिरिक्त राशि लाभार्थी के खाते में तत्काल ट्रांसफर किया जाए। पट्टे पर खेती करने वाले किसानों को भी इसके दायरे में लाया जाए। मनरेगा के तहत रजिस्टर्ड मजदूरों के खाते में भी तत्काल 3000 रुपये की राशि नगद ट्रांसफर की जाए। जबकि शहरी क्षेत्र के गरीबों को मदद देने के लिए जनधन बैंक अकाउंट वाले खाताधारकों को 6000 हजार रुपये दिए जाएं। इसी तरह सभी राशन कार्ड धारकों को अगले 21 दिन के भीतर 10 किलो चावल या गेहूं बिल्कुल मुफ्त होम डिलेवरी की जाए। सभी पंजीकृत नियोक्ताओं से किसी व्यक्ति की छंटनी नहीं करने को कहा जाए। ऐसे संकट में आने वाले कर्मचारियों का एक महीने का वेतन सरकार देगी इसकी गारंटी ऐसी कंपनियों को दी जानी चाहिए।

पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री पी. चिदंबरम ने कहा कि यदि उपरोक्त किसी योजना के तहत जिन लोगों को कोई लाभ नहीं मिल पाता है तो उनके लिए सभी ब्लॉक के वार्ड में एक रजिस्टर पर अपना ब्योरा और आधार कार्ड नंबर लिखने की सुविधा दी जाए। न्यूनतम जांच परख के बाद सरकार रजिस्टर में नाम दर्ज कराने वाले ऐसे सभी लोगों के खाते में 3000 रुपये ट्रांसफर करे ताकि उनका जीवनयापन हो सके।

न्यूज गैलरी

लॉकडाउन से छूट की नई गाइडलाइंस जारी

नई दिल्ली : गृह मंत्रालय ने बुधवार को नई गाइडलाइंस जारी कीं जिसमें कुछ ऐसे अतिरिक्त लोगों और सेवाओं को जोड़ा गया है जिन्हें लॉकडाउन से छूट प्रदान की गई है। इसके मुताबिक रिजर्व बैंक और रिजर्व बैंक से रेगुलेट होने वाले वित्तीय बाजार, वेतन एवं लेखा अधिकारी, कैग के फील्ड अधिकारी, पेट्रोलियम पदार्थ और इसकी आपूर्ति श्रृंखला से जुड़े लोग और वन कर्मियों को लॉकडाउन के दायरे से बाहर रखा गया है। एयर पोर्ट और रेलवे स्टेशनों पर कार्गो ऑपरेशन में लगे लोगों, कोयला खनन की गतिविधियां,दिल्ली स्थित रेजीडेंट कमिश्नर के अधिकारी और कर्मचारी, बंदरगाहों, हवाई अड्डों व स्थलीय सीमा पर तैनात कस्टम क्लीयरेंस को भी लॉकडाउन से छूट प्रदान की गई है। प्राणी उद्यानों के संचालन एवं रखरखाव, नर्सरियों, वनों में आग, पौधों में पानी देने, गश्त और उनके आवश्यक परिवहन से जुड़े वन कर्मचारियों, बच्चों, दिव्यांगों, वरिष्ठ नागरिकों, निराश्रित महिलाओं, विधवाओं, निगरानी गृहों और पेंशन सेवा के संचालन से जुड़े सामाजिक कल्याण विभाग के कर्मियों को भी लॉकडाउन से छूट दी गई है। (प्रेट्र)

राज्य सुनिश्चित करें, मीडिया के काम में बाधा न आए : पीसीआइ

नई दिल्ली : भारतीय प्रेस परिषद (पीसीआइ) ने सभी राज्य सरकारों और प्रशासनिक प्राधिकारियों से यह सुनिश्चित करने की सलाह दी है कि लॉकडाउन के दौरान मीडिया के कामकाज में किसी तरह की बाधा नहीं आए। पीसीआइ ने एक बयान जारी कर कहा है, 'इस मुश्किल घड़ी में, प्रिंटिंग प्रेस का निर्बाध संचालन सुनिश्चित करना, मीडिया से जुड़े व्यक्तियों के कामकाज की सहूलियत और समाचारपत्रों व पत्रिकाओं का निरंतर वितरण महत्वपूर्ण है।' कोरोना वायरस से पैदा हुए हालात के बारे में देश के लोगों तक नवीनतम जानकारी पहुंचाने और उन्हें जागरूक करने के लिए यह आवश्यक है कि मीडिया संस्थान को जरूरी समर्थन और सहायता मिलती रहे। (प्रेट्र)

आज सामान्य हो जाएगी जरूरी चीजों की आपूर्ति व्यवस्था

प्रथम पृष्ठ से आगे

गृह मंत्रालय ने गुरुवार तक देशभर में जरूरी चीजों की आपूर्ति व्यवस्था ठीक होने का दावा किया है। मंत्रालय की वरिष्ठ अधिकारी पूनम सलिला श्रीवास्तव ने बताया कि केंद्र राज्यों के साथ संपर्क में है। साथ ही इससे निपटने के लिए गृह मंत्रालय ने भी संयुक्त सचिव की अगुआई में एक कंट्रोल रूम तैयार किया है, जहां से निगरानी रखी जा रही है। राज्यों से भी हेल्पलाइन नंबर जारी करने को कहा गया है। ज्यादातर ने जारी भी कर दिया है।

जनगणना व एनपीआर की प्रक्रिया फिलहाल स्थगित

बड़ा कदम ▸ लॉकडाउन को देखते हुए आरजीआइ ने किया फैसला

विपक्ष लंबे समय से एनपीआर पर रोक लगाने की कर रहा था मांग

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

प्रतीकात्मक।

कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए तीन हफ्ते के लॉकडाउन के एलान के बाद भारत के महापंजीयक (रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया) ने 2021 की जनगणना के पहले चरण और उसके साथ नेशनल पॉपुलेशन रजिस्टर (एनपीआर) को अपग्रेड करने की प्रक्रिया को स्थगित कर दिया है। यह पूरी प्रक्रिया एक अप्रैल 2021 से 30 सितंबर तक पूरी की जानी थी। लेकिन आरजीआइ ने अभी तक जनगणना के दूसरे चरण, जिसमें देश में रहने वाले लोगों की गिनती की जाती है, को स्थगित नहीं किया है।

ध्यान देने की बात है कि एनपीआर को एनआरसी और सीएए से जोड़कर विपक्ष इसका विरोध कर रहा था। विपक्ष शासित कई राज्यों की विधानसभा में जनगणना के पहले चरण के साथ एनपीआर नहीं करने का प्रस्ताव भी पारित किया था।

दरअसल पहले से चली आ रही परंपरा के मुताबिक देश में हर 10 साल बाद जनगणना की जाती है। इस बार 2021 की जनगणना दो चरणों में की जानी थी। पहले चरण में मकानों की गणना एक अप्रैल से 30 सितंबर, 2020 के बीच और दूसरे चरण में देश में रहने वाले सभी व्यक्तियों की गणना नौ फरवरी से 28 फरवरी, 2021 के बीच होनी थी। पहले चरण में मकानों की गिनती के साथ ही असम को छोड़कर देश के अन्य राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में एनपीआर के अपडेशन का काम भी होना था। लेकिन मंगलवार को राष्ट्रीय आपदा कानून के तहत पूरे देश में लॉकडाउन की घोषणा के बाद आरजीआइ ने जनगणना 2021 के पहले चरण और उसके साथ होने वाले एनपीआर के अपडेशन के साथ ही फील्ड से जुड़े सभी काम जो एक अप्रैल, 2020 से शुरू होने थे, को अगले आदेश तक स्थगित कर दिया है।

गृह मंत्रालय के उच्च पदस्थ सूत्रों के अनुसार कोरोना वायरस का प्रकोप थमने के बाद नवंबर के पहले इसे कभी भी कराने का फैसला किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि 2021 के फरवरी में होने वाली जनगणना को स्थगित नहीं किया गया है और इसे तय समय पर ही कराने की कोशिश की जाएगी। लेकिन सब कुछ कोरोना का कहर थमने के समय पर निर्भर करता है।

मंत्रिसमूह ने कोविड–19 से बचाव की स्थितियों की समीक्षा की

नई दिल्ली, एएनआइ : केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने बुधवार को मंत्रिसमूह के साथ कोविड-19 से निपटने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा की। इस दौरान अब तक उठाए गए कदमों, सोशल डिस्टेंसिंग के मौजूदा हालात और राज्यों की ओर से वायरस के प्रसार को रोकने के लिए की जा रही सख्ती पर चर्चा हुई।

स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने जानकारी दी कि 21 मार्च के बाद से देश में करीब 64,000 लोग अन्य देशों से आए हैं। इनमें से 8,000 लोगों को विभिन्न केंद्रों में क्वारंटाइन किया गया है, जबकि 56,000 लोगों को क्वारंटाइन किया गया है। उन्होंने बताया कि अभी देश में इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आइसीएमआर) के नेटवर्क में कुल 118 प्रयोगशालाओं में इस समय कोरोना जांच की सुविधा उपलब्ध है।

मंत्रिसमूह को यह बताया गया कि गुजरात, असम, झारखंड, राजस्थान, गोवा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश और जम्मू-कश्मीर में कोरोना के इलाज के लिए विशेषरूप से अस्पताल तैयार किए जा रहे हैं। बैठक के दौरान राज्यों को मजबूत करने की दिशा में जरूरी सहायता पर भी विमर्श किया गया। राज्यों को निर्देश दिया गया कि लॉकडाउन के दौरान आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़े।

न्याय योजना जैसी स्कीम लागू करे सरकार : राहुल गांधी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- कांग्रेस ने चुनावी घोषणापत्र में न्याय योजना के तहत हर गरीब को 72 हजार रुपये देने का किया था वादा
- सुरजेवाला ने पूछा, बिना काम करोड़ों मजदूरों, किसानों और वंचितों के कैसे कटेंगे 21 दिन

कोरोना महामारी के खतरे को लेकर कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम ने सरकार को जहां दस सूत्रीय सुझाव दिए हैं, वहीं पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी का कहना है कि चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार के साथ-साथ सरकार को न्याय योजना जैसी स्कीम शुरू करनी चाहिए।

हालांकि, चिदंबरम की तरह राहुल ने प्रधानमंत्री की ओर से घोषित लॉकडाउन का स्वागत तो नहीं किया है, लेकिन सरकार को यह याद जरूर दिलाया है कि लोगों की जिंदगी बचाना उसकी बड़ी जिम्मेदारी है। उन्होंने अर्थव्यवस्था की चुनौती को सामने रखते हुए कहा कि दिहाड़ी मजदूरों के खाते में फौरन नकदी ट्रांसफर किया जाए और उन्हें मुफ्त राशन मुहैया कराया जाए। इसमें कोई भी देरी विनाशकारी होगी।

राहुल ने कहा है कि मौजूदा हालत के कारण व्यापार ठप है। इसीलिए टैक्स छूट से लेकर आर्थिक सहायता दी जाना चाहिए ताकि नौकरियां बची रहें। उन्होंने न्याय योजना जैसी स्कीम भी शुरू करने को कहा है। ध्यान रहे कि कांग्रेस ने अपने चुनावी घोषणापत्र में न्याय योजना की घोषणा की थी, जिसमें पांच करोड़ गरीबों के खाते में सालाना 72 हजार रुपये देने का वादा किया गया था।

> 'कोरोना जैसी वैश्विक चुनौती के खिलाफ केंद्र, राज्य और पूरा देश मिलकर लड़ रहा है। केंद्र की ओर से पीडीएस में सस्ते अनाज दिए जा रहे हैं। हमने अर्थव्यवस्था को राहत देने के लिए भी कुछ इंतजाम किए हैं और कुछ किए जाने वाले हैं। दिल्ली समेत कुछ राज्यों की तरफ से भी गरीबों को मदद पहुंचाने की कोशिश हो रही है। हम कोरोना के खिलाफ जीतेंगे।'
>
> –प्रकाश जावडेकर, केंद्रीय सूचना प्रसारण मंत्री

वहीं, कांग्रेस मीडिया विभाग के प्रमुख रणदीप सुरजेवाला ने 21 दिनों के लॉकडाउन को तो सही ठहराया मगर सवाल उठाया कि सरकार ने इन दिनों की चुनौतियों से निपटने के लिए कोई ठोस प्लानिंग नहीं की है। पीएम ने अपने संबोधन में यह नहीं बताया कि करोडों मजदूरों, किसानों से लेकर कमजोर वर्ग के लोगों की जिंदगी बिना काम के 21 दिन कैसे कटेगी।

भाजपा पांच करोड़ गरीबों को खाना खिलाएगी

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

- एक करोड़ पार्टी कार्यकर्ताओं को सौंपी गई है इसकी जिम्मेदारी
- जेपी नड्डा ने लिया फैसला, इस मुहिम की प्रगति की होती रहेगी समीक्षा

देश में लॉकडाउन के चलते भारतीय जनता पार्टी के लाखों कार्यकर्ता रोजाना पांच करोड़ लोगों को खाना खिलाएंगे। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा पिछले दो दिनों से पार्टी के लाखों कार्यकर्ताओं के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये संवाद कर रहे हैं। राष्ट्रीय पदाधिकारियों और प्रदेश अध्यक्षों के साथ ही वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये यह चर्चा हो रही है। उन्हें कहा गया था कि भाजपा के एक करोड़ ऐसे कार्यकर्ताओं की सूची तैयार करें, जो लॉकडाउन की इस विषम परिस्थिति में गरीबों के भोजन का पूरा ध्यान रखें। नड्डा ने सभी कार्यकर्ताओं को यह भी संदेश दिया है कि इस पूरे क्रम में सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान रखें और जिला प्रशासन के साथ समन्वय बनाकर काम करें।

सूत्रों के अनुसार भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने बुधवार को पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारियों के साथ बैठक की है। इस बैठक में यह फैसला लिया गया है कि देश में जारी 21 दिन के लॉकडाउन की अवधि में कोई भी गरीब और मजदूर भूखा न सोए। इसके लिए पार्टी के एक करोड़ कार्यकर्ता देश भर में पांच करोड़ जरूरतमंद लोगों को खाना खिलाएंगे। वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये नड्डा ने निर्देश दिया है कि हरेक कार्यकर्ता जरूरतमंद पांच लोगों को खाना खिलाने की जिम्मेदारी ले।

सूत्रों का यह भी कहना है कि पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारी नियमित रूप से वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए बैठक करके खाना खिलाने के इस अभियान की प्रगति की समीक्षा करेंगे। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना से बचाव के लिए देश में 21 दिनों के लॉकडाउन का एलान किया है। इस दौरान आपात सेवाओं को छोड़ सभी दफ्तर, दुकानें और उद्योग धंधे बंद रहेंगे। ऐसे में दैनिक मजदूरी करके रोजी-रोटी कमाने वालों को खाने के लाले न पड़े, सरकार के साथ-साथ सत्तारूढ़ दल भाजपा ने भी इसका खयाल रखने का प्रण लिया है।

सशस्त्र बल युद्धस्तर पर कोविड–19 से मुकाबला करें

- सीडीएस जनरल रावत ने सैन्य अफसरों से किया आह्वान
- सेना मुख्यालय भी एक दिन के लिए बंद, आज से 15 फीसद स्टाफ रहेगा

जनरल बिपिन रावत। फाइल

नई दिल्ली, एजेंसियां : कोविड-19 के तेजी से बढ़ते संक्रमण को देखते हुए चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत ने कहा है कि अब समय आ गया है कि सैन्य बल हर तरह की सहायता को युद्धस्तर पर प्रभावित लोगों तक पहुंचाएं। इसमें कोरोना वायरस संबंधी क्वारंटाइन सुविधाओं के साथ ही विशेषज्ञ स्तर की देखभाल भी शामिल है। वहीं वायुसेना ने भी अपने अफसरों से लॉकडाउन के चलते अपनी कल्याणकारी योजना के लिए फंड जारी करने में असमर्थता जताई है। कोरोना वायरस की विभीषिका सैन्य बलों को प्रभावित न करे, इसके लिए दिल्ली के साउथ ब्लाक स्थित सेना मुख्यालय को भी बंद कर दिया गया है।

चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल बिपिन रावत ने बुधवार को कहा कि समय आ गया है कि नोवल कोरोना संक्रमण से युद्ध में सशस्त्र बल अपने निर्धारित कार्यक्षेत्र से आगे बढ़कर काम करें। रक्षा अफसरों को चुनौतियों के लिए तैयार रहना चाहिए। सीडीएस ने कहा कि सैन्य बलों से यह उम्मीद की जाती है कि वह सरकार की मदद करें और जिन लोगों को तत्काल देखभाल की जरूरत है उनके लिए आइसोलेशन और क्वारंटाइन के लिए बुनियादी व्यवस्था करें। साथ ही विशेष चिकित्सा केंद्रों की व्यवस्था करें।

जनरल रावत ने इस बात पर भी बल दिया कि सैन्य बल हर चुनौती के लिए तैयार रहते हुए सभी सरकारी एजेंसियों के साथ पूरे तालमेल से काम करें। उन्होंने कहा कि कोविड-19 भारतीयों को नुकसान पहुंचाने में तभी कामयाब होगा जब समय-समय पर दिए जा रहे दिशा-निर्देशों का पालन नहीं होगा। सेना ने सभी सैन्य अफसरों और उनके परिजनों को पहले ही यह निर्देश जारी किए हैं कि वह सभी नियमों का पालन पूरी तत्परता से करें। हाल ही में सीडीएस (जो सैन्य विभाग के सचिव भी हैं) ने विदेश से लाए गए लोगों के लिए क्वारंटाइन फैसिल्टी बनाने के लिए कैबिनेट सचिव और अन्य वरिष्ठ सरकारी अफसरों के साथ बैठकें की हैं। अब तक इटली, ईरान, चीन और दक्षिण एशिया देशों से करीब 1500 भारतीयों को वापस लाया गया है। इन्हें क्वारंटाइन में गुरुग्राम, जैसलमेर, मुंबई और हिंडन में रखा गया।

सूत्रों के अनुसार दूसरी ओर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संपूर्ण लॉकडाउन के आह्वान के बाद दिल्ली के रायसीना हिल्स स्थित साउथ ब्लॉक में बुधवार को सेना के मुख्यालय को भी बंद कर दिया गया है। गुरुवार से यहां 15 फीसद के न्यूनतम स्टाफ के साथ फिर से कामकाज शुरू होगा। बुधवार को सैन्य मामलों के विभाग के दफ्तर को भी बंद कर दिया गया है। इससे पहले, मुख्यालय में सैन्य स्टाफ 50 फीसद तक कम कर दिया गया था। साथ ही सेना प्रमुख ने सैन्य अफसरों से सोशल डिस्टेंसिंग के मानकों का पालन करने को कहा था। 23 मार्च को सेना प्रमुख ने सैन्य अफसरों की उपस्थिति कम करने को कहा था। सेना ने अपनी कैंटीन और स्टोर भी बंद कर दिए हैं।

वायुसेना में कल्याणकारी योजनाओं के फंड रुके

भारतीय वायुसेना के एक बड़े अफसर के अनुसार वायुसेना ने अपने अफसरों से कहा है कि कोविड–19 के चलते हुए लॉकडाउन के कारण उनके अफसरों व उन पर आश्रित उनके परिजनों के लिए कल्याणकारी योजनाओं के फंड को जारी नहीं किया जा सका है। इसलिए उनसे अपील की गई है कि संकट की इस घड़ी में वह धैर्य बनाए रखें। इस परेशानी का कारण स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि दिल्ली और एनसीआर में भी लॉकडाउन है। इसीलिए विभिन्न राज्यों के बीच कोई गतिविधि नहीं हो पा रही है। यहां तक कि वायुसेना के मुख्यालय के कार्यालय से इंडियन एयरफोर्स सेंट्रल वेलफेयर फंड समेत कई संगठनों के लिए धन जारी नहीं हो सका है। वहां स्टाफ भी बेहद कम है। इसीलिए लोन,ग्रांट, स्कालरशिप और क्लेम आदि का भुगतान नहीं हो पा रहा है। जैसे ही लॉकडाउन हटेगा, वैसे ही यह सारे फंड वरीयता के आधार पर जारी कर दिए जाएंगे।

कोरोना से जंग

बंगाल में भाजपा सांसद देंगे एक–एक करोड़ तो वामपंथी विधायक 10–10 लाख, बिहार के सांसद, विधायकों और मंत्रियों ने मदद को आगे बढ़ाए हाथ

सांसदों और विधायकों ने भी खोला खजाना

जेएनएन, नई दिल्ली

कोरोना वायरस से लड़ने को सांसदों और विधायकों ने अपने खजाने खोल दिए हैं। कोई सांसद निधि से मदद कर रहा है तो कुछ व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार भी सहायता कर रहे हैं। बंगाल में वामपंथी विधायकों कोरोना के इलाज के लिए जिला अस्पतालों को 10-10 लाख रुपये अनुदान देंगे। राज्य के भाजपा सांसदों ने राज्य के अस्पतालों को 50 लाख से एक करोड़ रुपये तक देने की बात कही है। इन सभी को कोरोना के उपचार के लिए एक करोड़ रुपये देने का निर्देश दिया गया है। हालांकि, भाजपा के अधिकांश सांसदों ने 50 लाख का दान दिया है। सुरिंदर सिंह अहलूवालिया ने 1.60 करोड़ दिए हैं। हुगली के सांसद लॉकेट चट्टोपाध्याय ने सांसद निधि से एक करोड़ रुपये दिए हैं। बांकुड़ा के सांसद सुभाष सरकार ने एक करोड़ दिए हैं। बंगाल के खेल व युवा राज्यमंत्री और पूर्व क्रिकेटर लक्ष्मी रतन शुक्ला ने अपनी 3 माह की सेलरी मुख्यमंत्री राहत कोष में देने की घोषणा की है। मध्य प्रदेश में छतरपुर के कांग्रेस विधायक आलोक चतुर्वेदी ने अपनी ओर से पांच लाख रुपए की राशि का चेक जिला प्रशासन को सौंप दिया है। अन्य जनप्रतिनिधियों ने भी मदद की घोषणा की है।

बिहार में मुख्यमंत्री राहत कोष में जमा होने लगे पैसे : बिहार के उपमुख्यमंत्री सुशील मोदी ने स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय के साथ ऑडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए भाजपा विधायकों एवं विधान पार्षदों से बात करने के बाद सूचना दी कि कोरोना से उत्पन्न चुनौतियों से मुकाबले के लिए भाजपा के सभी विधायक एवं विधान पार्षद एक-एक महीने के वेतन मुख्यमंत्री राहत कोष में देंगे। इसके अलावा जो मंत्री हैं, वे एक-एक लाख रुपये अतिरिक्त देंगे। केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय ने सांसद निधि से सवा करोड़ रुपये दिए हैं। कला-संस्कृति मंत्री प्रमोद कुमार ने भी विधायक निधि से 25 लाख रुपये दिए हैं। जमुई के सांसद व लोजपा प्रमुख चिराग पासवान और हाजीपुर सांसद पशुपति कुमार पारस ने एक-एक करोड़ की राशि दी है। केंद्रीय मंत्री रामविलास पासवान एवं भाजपा सांसद रामकृपाल यादव ने एक दिन पहले ही अपनी निधि से एक करोड़ रुपये देने की घोषणा कर दी है। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने 50 लाख रुपये, सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री राधामोहन सिंह ने 50 लाख, पिपरा के भाजपा विधायक श्यामबाबू प्रसाद यादव ने 20 लाख की राशि दी है। बुधवार को राजद नेता राबड़ी देवी ने भी अपने एक माह का वेतन देने की घोषणा की है। पटना के महावीर मंदिर ट्रस्ट ने सीएम राहत कोष में एक करोड़ रुपये जमा करवाए हैं।

हिमाचल के सांसदों ने भी कोरोना वायरस से निपटने के लिए सवा दो करोड़ रुपये (2.27 करोड़) देने की घोषणा की है। सांसद निधि से जारी होने वाली इस राशि से चारों लोकसभा क्षेत्रों में उपकरण, मास्क, सैनिटाइजर इत्यादि खरीदे जाएंगे। सांसद अनुराग ठाकुर ने 51 लाख, रामस्वरूप शर्मा ने 50 लाख, सुरेश कश्यप ने 60 लाख और किशन कपूर ने 66 लाख रुपये के अपने-अपने जिला उपायुक्तों को पत्र भेज दिए हैं।

कानपुर और प्रयागराज में केंद्रीय विद्यालय के निर्माण के लिए मिली भूमि

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कानपुर और प्रयागराज में केंद्रीय विद्यालय के भवन निर्माण के निर्माण के लिए अब रक्षा मंत्रालय भूमि देगा। केंद्रीय कैबिनेट ने बुधवार को इसकी मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही रक्षा मंत्रालय अब यह भूमि केंद्रीय विद्यालय सगंठन को हस्तांतरित कर सकेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में बुधवार को हुई कैबिनेट की बैठक में उत्तर प्रदेश के इन दोनों ही प्रमुख शहरों में केंद्रीय विद्यालय के निर्माण के लिए रक्षा मंत्रालय की भूमि उपलब्ध कराने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई। इसके तहत कानपुर में केंद्रीय विद्यालय के निर्माण के लिए रक्षा मंत्रालय जहां पांच एकड़ भूमि देगा, वहीं प्रयागराज के ओल्ड कैंप स्थित केंद्रीय विद्यालय के निर्माण के लिए वह आठ एकड़ भूमि देगा। दोनों ही केंद्रीय विद्यालयों के भवन के लिए केंद्रीय विद्यालय संगठन को लंबे समय से भूमि की तलाश थी।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

कोरोना संक्रमितों का आंकड़ा 600 के पार, एक दिन में दो की गई जान

बढ़ता संकट ▸ तमिलनाडु व मप्र में एक–एक व्यक्ति ने तोड़ा दम, मृतकों की संख्या 11 हुई, एक दिन में महाराष्ट्र में 15 और कर्नाटक में 10 समेत 76 से ज्यादा केस सामने आए

नई दिल्ली, एजेंसियां : देश में कोरोना वायरस के संक्रमण के चलते बुधवार को और दो लोगों की जान चली गई। मध्य प्रदेश में महिला और तमिलनाडु में पुरुष ने दम तोड़ दिया है। दोनों ही राज्यों में इस खतरनाक वायरस से ये पहली मौतें हैं। 76 से ज्यादा नए मामलों के साथ संक्रमितों का आंकड़ा भी 600 को पार कर गया है। सबसे ज्यादा महाराष्ट्र में 15 और केरल में नौ नए केस सामने आए हैं।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और राज्यों के स्वास्थ्य विभागों के मुताबिक देश में कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की संख्या 632 हो गई है, जबकि मरने वालों आंकड़ा 11 पर पहुंच गया है। तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री सी. विजयभास्कर ने बुधवार को मदुरै में कहा कि कोरोना वायरस पॉजिटिव 54 साल के एक व्यक्ति की मौत हो गई है। मृतक व्यक्ति शुगर, हाइपरटेंशन और फेफड़े की बीमारी से ग्रस्त था। वहीं, मध्य प्रदेश के इंदौर में 65 साल की एक महिला ने दम तोड़ दिया है। महिला उज्जैन की रहने वाली थी। कर्नाटक में 75 साल की एक संदिग्ध संक्रमित महिला की मौत हो गई है। महिला की प्रारंभिक जांच रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी, लेकिन कोरोना की पुष्टि के लिए दूसरी रिपोर्ट का इंतजार है। वह हाल ही में मक्का से लौटी थी। स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक कुल संक्रमितों में 43 विदेशी, जान गंवाने वाले 11 व्यक्ति और उपचार के बाद स्वस्थ हो चुके 43 लोग भी शामिल हैं। महाराष्ट्र में बुधवार को 15 नए संक्रमित मामले सामने आए और इनकी संख्या बढ़कर 122 हो गई है। मुंबई में सात, सांगली के इस्लामपुर में पांच और कल्याण-डोंबिवली, नवी मुंबई और पनवेल में एक-एक केस सामने आया। नवी मुंबई में संक्रमित मिला व्यक्ति फिलीपींस के नागरिक के संपर्क में आया था, जिसकी हाल ही में मौत हो गई थी। हालांकि, वह संक्रमण से मुक्त हो चुका था। केरल में नौ नए संक्रमित मामले दर्ज किए गए हैं। राज्य में इनकी संख्या 112 हो गई है। मुख्यमंत्री पी. विजयन ने समीक्षा बैठक के बाद बताया कि नए केस में पलक्कड़ में दो, एर्नाकुलम में तीन, पतनमतिट्टा में दो और इडुक्की और कोझीकोड़ जिले में एक-एक मामला शामिल है। कर्नाटक में 10 नए संक्रमित केस सामने आए हैं और इनकी संख्या बढ़कर 51 हो गई है। तेलंगाना में तीन नए केस मिले हैं और संक्रमितों की संख्या 39 हो गई है। तमिलनाडु में पांच नए केस मिले हैं, जिनमें इंडोनेशिया के चार नागरिक शामिल हैं। राज्य में संक्रमितों की संख्या 23 हो गई है। आंध्र प्रदेश में दो नए मामलों के साथ संक्रमितों की संख्या 10 हो गई है। जबकि, उत्तर प्रदेश में दो नए मामले सामने आए हैं और संक्रमितों का आंकड़ा 39 पर पहुंच गया है। गुजरात में भी चार लोगों को संक्रमित पाया गया है और यह संख्या 39 हो गई है। नए केस में एक व्यक्ति विदेश गया था। राज्य में एक करोड़ से ज्यादा लोगों पर नजर रखी जा रही है।

जम्मू-कश्मीर के बांदीपुरा में चार नए पॉजिटिव केस पाए गए हैं और इनकी संख्या 11 हो गई है। मध्य प्रदेश में छह नए मामले मिले हैं और संक्रमित 15 हो गए हैं। दो दिन के बाद दिल्ली में पांच नए केस सामने आए हैं और पीड़ितों का आंकड़ा 35 हो गया है। पंजाब में भी दो केस पाए गए हैं और संख्या 31 पर पहुंच गई है। बिहार में दो नए केस के साथ संक्रमितों की संख्या चार हो गई है। उत्तराखंड में एक और केस के साथ संख्या पांच पर पहुंच गई है। राजस्थान में छह नए माले में मिले हैं और संक्रमितों की संख्या 38 हो गई है। हरियाणा में एक नया मामला मिला है और आंकड़ा 18 पर पहुंच गया है। पूर्वोत्तर के राज्य मणिपुर के बाद मिजोरम की राजधानी आइजोल में भी एक पॉजिटिव मामला मिला है। यहां नीदरलैंड से लौटे 50 साल के व्यक्ति को संक्रमित पाया गया है। वह दोहा, दिल्ली और गुवाहाटी होते हुए यहां 16 मार्च को पहुंचा था।

रोजाना 12,000 जांच करने के लिए तैयार : केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय में संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने कहा है कि सरकार ने रोजाना 12,000 कोरोना वायरस से संबंधित सैंपल की जांच की तैयारी कर ली है। 118 सरकारी लैब में जांच शुरू हो गई है। अन्य 29 लैब को भी जांच करने की अनुमति दे दी गई है।

ऐसे कैसे हारेगा कोरोना : कोरोना वायरस का प्रसार रोकने के लिए राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन लागू किया गया है, लेकिन घरेलू सामान खरीदने के लिए स्टोर्स पर भारी भीड़ देखी जा रही है। कुछ स्थानों पर लोगों ने सोशल डिस्टेंसिंग की अपील को धता बता दिया है। यह नजारा मुंबई के शांताक्रूज स्थित रिलायंस स्मार्ट स्टोर का है। एएनआइ

कोरोना का प्रसार

महाराष्ट्र	122 (तीन विदेशी)
केरल	112 (सात विदेशी)
कर्नाटक	51
उत्तर प्रदेश	39 (तीन विदेशी)
तेलंगाना	39 (11 विदेशी)
गुजरात	39
राजस्थान	38 (दो विदेशी)
दिल्ली	35 (एक विदेशी)
पंजाब	31
हरियाणा	18
तमिलनाडु	23
मध्य प्रदेश	15
लद्दाख	13 (दो ठीक हुए)
जम्मू-कश्मीर	11
बंगाल	9
आंध्र प्रदेश	10
चंडीगढ़	7
उत्तराखंड	5
बिहार	4
हिमाचल प्रदेश	3
ओडिशा	2
पुडुचेरी	1
छत्तीसगढ़	3
मणिपुर	1
मिजोरम	1

मप्र में पहली मौत, छह नए मामले आए सामने

जेएनएन, नई दिल्ली

मध्य प्रदेश के उज्जैन में कोरोना से संक्रमित एक महिला की मौत हो गई। राज्य में कोरोना संक्रमण से यह पहली मौत है। अतिरिक्त बुधवार को पांच नए मामले सामने आने के बाद संक्रमितों की संख्या 15 हो गई है। बिहार में भी दो संक्रमित सामने आए। राज्य में अब तक छह संक्रमित मिले हैं। राजस्थान में छह नए मामले सामने आने के बाद यहां कोरोना संक्रमितों की संख्या 38 पहुंच गई है। दिल्ली में पांच नए मामले के बाद 35, पंजाब में दो नए मामले सामने आने के बाद कोरोना संक्रमितों की संख्या 31 हो गई है। उप्र में दो नए मामले सामने आने के बाद संक्रमितों की संख्या 39 हो गई है। दोनों मामले पीलीभीत और बागपत जिले में सामने आए हैं।

बिहार : बिहार में मुंगेर की एक महिला और उसके बच्चे कोरोना संक्रमित मिले हैं। पटना स्थित राजेंद्र मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस के निदेशक डॉ. पीके दास ने यह जानकारी दी। मुंगेर निवासी जिस युवक की कोरोना से एम्स पटना में रविवार को मौत हुई थी, महिला और बच्चा उसी के परिवार के हैं।

राज्य	नए मामले	अब तक
मप्र	06	15
दिल्ली	05	35
जम्मू-कश्मीर	04	11
पंजाब	02	31
हरियाणा	01	18
बिहार	02	06
उत्तराखंड	01	05
राजस्थान	06	38
उप्र	02	39
छत्तीसगढ़	02	03

राज्य में अब तक छह लोगों में कोरोना की पुष्टि हो चुकी है।

राजस्थान : नए मामलों में भीलवाड़ा के चार, जोधपुर और झुंझुनू के एक-एक मामले शामिल हैं। भीलवाड़ा के चार नए पॉजिटिव केस में 2 अस्पताल के स्टाफ में से हैं। एक डॉक्टर के संपर्क में आने से संक्रमित हुआ है। जोधपुर में जो युवती संक्रमित मिली है, वह मुंबई से ट्रेन में जोधपुर पहुंची थी। उसके पास वाली सीट पर जोधपुर में दो दिन पूर्व पॉजिटिव पाए गए दंपती बैठे थे। उनके संपर्क में आने के कारण युवती को भी कोरोना हो गया। युवती को जोधपुर एम्स के आइसोलेशन वार्ड में रखा गया है। परिजनों को भी आइसोलेट कर उनके सैंपल लिए गए हैं।

उत्तराखंड : उत्तराखंड में बुधवार को कोरोना संक्रमण का एक और मामला सामने आया है। पौड़ी जिले के दुगड्डा विकासखंड निवासी युवक में इसकी पुष्टि हुई है। वह हाल ही में स्पेन से लौटा था। इसे मिलाकर उत्तराखंड में कोरोना पॉजीटिव की संख्या पांच हो गई है। हालांकि, इस बीच एक राहतभरी खबर यह है कि दून मेडिकल कॉलेज में भर्ती कोरोना संक्रमित प्रशिक्षु आइएफएस की ताजा रिपोर्ट निगेटिव आई है। जिस युवक में कोरोना वायरस के संक्रमण का पता चला है वह नौकरी की तलाश में स्पेन में गया था, लेकिन वहां कोरोना के बढ़ते खतरे को देखते भारत लौट गाया। युवक 14 मार्च को स्पेन से दिल्ली लौटा था। 15 और 16 मार्च को वह दिल्ली के एक होटल में रुका। युवक की ट्रैवल हिस्ट्री व प्रारंभिक लक्षण देखते हुए उसे तुरंत क्वारंटाइन कर दिया गया।

विदेश से लौटे 200 लोगों के नंबर बंद, कनिका के संपर्क में आए लोग भी लापता

जागरण संवाददाता, लखनऊ : उप्र में विदेश से लौटे लगभग दो सौ लोगों ने स्वास्थ्य विभाग की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। केंद्र सरकार से भेजी गई सूची में शामिल इनके मोबाइल नंबर आइएसडी मिले हैं। वर्तमान में ये नंबर बंद जा रहे हैं। इसी तरह कोरोना पाजिटिव पाई गईं बॉलीवुड गायिका कनिका कपूर के संपर्क में आए कई लोगों के नंबर नहीं मिल रहे हैं। लिहाजा, इनकी मॉनीटरिंग और स्क्रीनिंग नहीं हो पा रही है। अब इन्हें पुलिस तलाश रही है। वहीं संजय गांधी पीजीआइ, लखनऊ में भर्ती कनिका कपूर को अभी कोरोना वायरस से मुक्ति नहीं मिली है। उनकी तीसरी रिपोर्ट भी पॉजिटिव आई है। उनमें संक्रमण बना हुआ है। कोरोना के संक्रमण को नियंत्रित करने में प्रशासनिक अमला जुटा है। ऐसे में केंद्र सरकार द्वारा लखनऊ शहर में विदेश यात्रा से लौटे लोगों की सूची भेजी गई है। सीएमओ डॉ. नरेंद्र अग्रवाल के मुताबिक ऐसे करीब दो सौ लोग हैं, जिनसे संपर्क नहीं हो पा रहा है।सीएमओ डॉ. नरेंद्र अग्रवाल के मुताबिक सऊदी अरब और मुंबई से लौटे लोग गांवों में रह रहे हैं। ये होम क्वारंटाइन का पालन नहीं कर रहे हैं।

उप्र में पान मसाला बनाने–बेचने पर प्रतिबंध

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने की जंग के दौरान उप्र सरकार ने बुधवार को प्रदेश में पान मसाला बनाने, उसके वितरण व बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को इसे लेकर कड़े निर्देश दिए थे। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन ने इस बाबत आदेश जारी कर दिया है। आदेश का उल्लंघन दंडनीय अपराध है। किसी प्रतिष्ठान में इस आदेश का उल्लंघन पाए जाने पर तत्काल लाइसेंस निरस्त कर प्रतिष्ठान को बंद कराए जाने के साथ ही अन्य कठोर कार्रवाई की जाएगी। गौरतलब है कि प्रदेश में गुटखा निर्माण, वितरण व बिक्री एक अप्रैल 2013 से प्रतिबंधित है। अपर मुख्य सचिव गृह अवनीश कुमार अवस्थी ने मंगलवार को कहा था कि बाजारों, सड़कों, दफ्तरों व घरों तक में लोग कोनों-कोनों में पान-मसाला खाकर थूकते हैं। थूकने से गंदगी व संक्रमण फैलता है, जिसके चलते इसे प्रतिबंधित करने की कार्रवाई की जा रही है। थूकने से पैदा होने वाले रोग को लेकर अब गहन विचार की जरूरत है। केवल महामारी के समय ही नहीं, बल्कि सामान्य समय में भी जगह-जगह थूककर संक्रमण फैलाने की समस्या का स्थायी निदान तलाशना होगा। इसके दृष्टिगत ही प्रदेश में पान, पान-मसाला व गुटखा पर प्रतिबंध लगाने की तैयारी है।

मेडिकल स्टाफ से जबरन मकान खाली कराया तो होगी जेल

जेएनएन, नई दिल्ली

▸ **वायरस पीड़ितों का इलाज करने वालों से बदसुलूकी पर होगी कार्रवाई**

कोरोना पीड़ितों का इलाज करने वाले डॉक्टरों, नर्सिंग स्टाफ और पैरामेडिकल स्टाफ के खिलाफ बदसुलूकी या जबरन किराए का मकान खाली करवाने वाले मकान मालिकों के खिलाफ राजस्थान, उत्तर प्रदेश और दिल्ली की सरकार कार्रवाई करेगी। मेडिकल स्टाफ से जबरन मकान खाली कराने वाले मकान मालिकों के खिलाफ राजस्थान एपिडेमिक डिजीज एक्ट 1957 के तहत कार्रवाई की जाएगी । राजस्थान के चिकित्सा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव रोहित कुमार सिंह ने आदेश जारी कर सभी जिला कलेक्टर, पुलिस आयुक्त, पुलिस अधीक्षक, नगर परिषद आयुक्त को कार्रवाई करने के लिए अधिकृत किया है। साथ में डॉक्टरों की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने के निर्देश दिए है। उल्लेखनीय है कि मंगलवार को जोधपुर में एक मामला सामने आया था, जिसमें मकान मालिक कोरोना पीड़ितों का इलाज करने वाली महिला डॉक्टर से जबरन मकान खाली करा रहा था। इसके विरोध में डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ ने विरोध प्रदर्शन भी किया था। डॉक्टरों का कहना है कि पीड़ितों का इलाज और देखभाल करने के कारण निजी मकान मालिक जबरदस्ती मकान से बेदखल कर रहे हैं और उन्हें हीन भावना से देखा जा रहा है । इसके बाद सरकार ने आदेश निकाल कर स्थिति को स्पष्ट कर दिया। उधर, दिल्ली के मुख्यमंत्री ने भी कार्रवाई करने के स्पष्ट निर्देश दिए हैं।

> पान, पान मसाला और तंबाकू के बढ़ते उपयोग और इसके स्वास्थ्य पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभाव चिंता का कारण बन गए हैं। गैर संचारी रोग (एनसीडी) जैसे कि इस्कीमिया, हृदय रोग, कैंसर, मधुमेह, पुरानी सांस की बीमारियां तंबाकू के सेवन के साथ जुड़ी हैं।
> –डॉ. प्रो. ज्ञान चंद, एसजीपीजीआइ, लखनऊ

उत्तराखंड में 1300 से अधिक विदेशी पर्यटक

राज्य ब्यूरो, देहरादून : उत्तराखंड में अभी तकरीबन 1300 से अधिक विदेशी पर्यटक ठहरे हुए हैं। इसके अलावा तीन हजार से अधिक भारतीय पर्यटक भी प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर रुके हुए हैं। पर्यटन विभाग इन सभी पर्यटकों की जिलावार सूची तैयार कर रहा है, ताकि विदेशी पर्यटकों की संबंधित दूतावासों को इनके संबंध में पूरी जानकारी दी जा सके। फिलहाल जो पर्यटक जहां हैं, उन्हें वहीं रुकने की सलाह दी गई है। प्रदेश में प्रतिवर्ष 1.20 लाख से अधिक विदेशी पर्यटक यहां के नैसर्गिक सौंदर्य के अलावा योग आदि का अनुभव करने के लिए आते हैं। देश भर में कोरोना वायरस के खौफ के बीच उत्तराखंड में आयोजित हुए योग महोत्सव में भी बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक उत्तराखंड पहुंचे थे। हालांकि 7 मार्च को योग महोत्सव समाप्त होने के बाद अधिकांश पर्यटक अपने देश और राज्यों को वापस लौट गए थे। अब कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए उत्तराखंड में विदेशी पर्यटकों के आने पर रोक लगा दी गई है। बावजूद इसके बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक अभी भी उत्तराखंड के विभिन्न जिलों में ठहरे हुए हैं।

सोशल डिस्टेंसिंग का सबक...

जम्मू में बुधवार को लॉकडाउन तोड़ने वालों को पुलिस ने सोशल डिस्टेंसिंग का सबक सिखाते हुए बिक्रम चौक पर अलग-अलग गोले में करीब आधे घंटे तक बैठाए रखा। पुलिस लॉकडाउन तोड़ने वालों के साथ सख्त रुख अपना रही है। जागरण

कम्युनिटी किचन जल्द जरूरतमंदों को देगा रोटी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

लॉकडाउन के दौरान लोगों के घरों तक राशन पहुंचाने के साथ ही उप्र सरकार उन श्रमिकों के लिए भी फिक्रमंद है, जिन्हें काम बंद होने के बाद दो-जून की रोटी नहीं मिल पा रही।

अपर मुख्य सचिव गृह अवनीश कुमार अवस्थी ने बताया कि कम्युनिटी किचन की व्यवस्था जल्द शुरू हो जाएगी। उन्होंने बताया कि विभिन्न होटल, फास्ट फूड मेकर्स, मिड-डे मील संस्थाओं, धर्मार्थ संस्थाओं, मठ, मंदिर, गुरुद्वारे व ऐसे अन्य स्थानों पर जहां भी बड़ी मात्रा में सुरक्षित फूड तैयार हो सकता है, वहां फूड पैकेट तैयार कर मजदूरों तक पहुंचाने की व्यवस्था की जाएगी। उन्होंने बताया कि सभी मंडलों में करीब 5,419 मोबाइल वैन, ई-रिक्शा, ट्रैक्टर या मोटर गाड़ियों से डोरस्टेप डिलीवरी की व्यवस्था शुरू कर दी गई है। अब तक ठेला, हाथगाड़ी, मैनुअल गाड़ियों में कुल 6,704 गाड़ियों को चिह्नित किया जा चुका है। अब तक 12,123 वाहनों की व्यवस्था कर ली गई है। उन्होंने कहा कि मुजफ्फरनगर और लखनऊ में दवा की दुकानों के बाहर चॉक से निशान बनाकर लोगों को निश्चित दूरी पर खड़ा कर दवाओं का वितरण किया जा रहा है। अपर मुख्य सचिव गृह ने कहा कि पूरे प्रदेश में लॉकडाउन का सख्ती से अनुपालन कराया जाएगा। अनावश्यक कोई भी व्यक्ति घर से बाहर न निकले।

10 हजार प्रधानों से ली गई बाहर से आने वालों की सूचनाएं: कोरोना वायरस के खतरे से निपटने के लिए बाहर से आए लोगों के बारे में सूचनाएं जुटाने के प्रयास और तेज कर दिए गए हैं। मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076 से 10 हजार प्रधानों को फोन किया गया है और दो हफ्तों में बाहर से आये लोगों की जानकारी ली गई। जो भी संदिग्ध व्यक्ति सामने आएंगे, उनकी चेकिंग और मॉनिटरिंग की जाएगी।

सीएम हेल्पलाइन पर भी करें शिकायत : अपर मुख्य सचिव गृह ने बताया कि कोई भी व्यक्ति अब मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076 पर भी स्वास्थ्य से जुड़ी शिकायत दर्ज करा सकता है। हर जिले में डिस्ट्रिक्ट कंट्रोल रूम भी बनाया जा रहा है।

पहल

अभिनेत्री ने प्रशंसकों के सवालों को वीडियो कांफ्रेंसिंग में उठाया, विशेषज्ञों ने वायरस को लेकर भ्रांतियों को दूर किया

डब्ल्यूएचओ के विशेषज्ञों से प्रियंका ने पूछे सवाल

एंटरटेनमेंट ब्यूरो, मुंबई

अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के महानिदेशक डॉ. टेड्रोस और विशेषज्ञ डॉ. मारिया वान केरखोव के साथ मंगलवार को लाइव वीडियो कांफ्रेंसिंग की। अभिनेत्री ने अपने प्रशंसकों की तरफ से पूछे गए सवालों को विशेषज्ञों के समक्ष रखा। विशेषज्ञों ने लोगों के सवालों का जवाब देने के साथ-साथ कोरोना वायरस से जुड़ी भ्रांतियों को भी दूर किया। उन्होंने इस लाइव सेशन का वीडियो इंस्टाग्राम पर भी साझा किया है। प्रियंका यूनिसेफ की गुडविल एंबेसडर भी हैं।

वीडियो कांफ्रेंसिंग में प्रियंका ने भारत में 21 दिनों के लॉकडाउन का जिक्र किया। डॉ. टेड्रोस ने इसे जरूरी कदम बताया। उन्होंने कहा कि सामाजिक और शारीरिक दूरी आवश्यक है। बात करते वक्त आपस में पर्याप्त दूरी बनाए रखें। वायरस की चपेट में आए मरीजों को आइसोलेशन में रखा जाए। जो लोग घर पर हैं, वे वहीं खुद को क्वारंटाइन करें। उन्होंने यह भी कहा कि चीन में मामले ज्यादा बढ़े, क्योंकि वहां लोगों ने एहतियात नहीं बरते।

डॉ. मारिया ने कहा कि लोग भले ही घरों में रहकर परेशान हो रहे हैं, लेकिन इसका नतीजा सकारात्मक होगा। इस वायरस को हराने में सभी को अहम किरदार निभाना है। इसलिए, सरकार के दिशा-निर्देशों का पालन करें। आपकी सरकार परिस्थितियों को आपसे बेहतर समझती है।

प्रियंका चोपड़ा फाइल

डायबिटीज, कार्डियोवैस्कूलर व कैंसर मरीज बरतें ज्यादा सावधानी

पहला सवाल निक ने पूछा। उन्होंने कहा कि मेरे जैसे डायबिटिक और प्रियंका की तरह अस्थमा पीड़ित को किस तरह की सावधानियां बरती चाहिए। डॉ. टेड्रोस ने कहा कि डायबिटीज, कार्डियोवैस्कूलर और कैंसर जैसी बीमारियों से पीड़ित लोगों में इसके खतरे ज्यादा हैं, लेकिन युवा और स्वस्थ लोग भी चपेट में आ सकते हैं। हर कोई खतरे में है। बस सावधानियां बरतें। डॉक्टरों ने यह भी बताया कि कोरोना वायरस हवा से नहीं फैलता।

कोरोना वायरस पर तापमान के प्रभाव को लेकर अध्ययन जारी

गर्मी में क्या वायरस का असर कम हो जाएगा? डॉक्टरों ने कहा कि इस पर शोध चल रहा है। अभी कुछ नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि यह बैक्टीरिया नहीं वायरस है। यह अलग–अलग तापमान पर फैल सकता है। अफ्रीका और सिंगापुर में हमने इसे गर्म मौसम में फैलते हुए देखा है। जो कोरोना से स्वस्थ हो चुका है क्या उसे दोबारा संक्रमण हो सकता है, इस पर उन्होंने कहा कि ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला है। हम दूसरे देशों से आंकड़े जुटा रहे हैं। डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक ने प्रियंका को वीडियो कांफ्रेंसिंग खत्म होने पर नमस्ते भी किया।

कितना जानलेवा है यह वायरस?

जेएनएन, नई दिल्ली

▸ **असल आंकड़ों के आधार पर 0.06 फीसद के करीब है मृतकों की संख्या**

▸ **भारत जैसी बड़ी आबादी के लिए मृतकों का यह आंकड़ा भी कम डरावना नहीं**

दुनियाभर में कोरोना वायरस के फैलते संक्रमण के बीच यह सवाल भी लगातार उठता रहा है कि यह वायरस कितना जानलेवा है। कई विशेषज्ञ मान रहे हैं कि कोरोना से मरने वालों की तादाद दो से चार फीसद तक है। देखने में यह प्रतिशत कम लगता है, लेकिन जिस तेजी से यह संक्रमण फैल रहा है, उसे देखते हुए यह आंकड़ा बहुत ज्यादा है। अगर इससे संक्रमित होने वालों की तादाद 10 करोड़ पर पहुंच जाए, तो यह दो से चार फीसद भी करीब 20 से 40 लाख बन जाता है।

हालांकि विशेषज्ञों का एक वर्ग ऐसा भी है, जो कोरोना से होने वाली मौत के प्रतिशत को सही नहीं मानता है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस प्रतिशत की गणना का तरीका सही नहीं है। उनका मानना है कि केवल वायरस के पॉजिटिव मरीजों की संख्या में से मृतकों की संख्या के आधार पर प्रतिशत की गणना सही तरीका नहीं है। असल में यह प्रतिशत सभी प्रभावित लोगों के आधार पर निकाला जाना चाहिए। इस हिसाब से मौत का यह आंकड़ा 0.06 फीसद बनता है। हालांकि सच यह है कि भारत जैसी विशाल जनसंख्या वाले देश में 0.06 फीसद के आंकड़े को भी बहुत कम नहीं कहा जा सकता है।

जानकारों का कहना है कि आमतौर पर जितने लोग संक्रमितों के संपर्क में आते हैं, उनमें से सबकी जांच पॉजिटिव नहीं आती है। इसी तरह से बहुत से लोग ऐसे भी हैं, जिनकी जांच नहीं हो पाती है। जाहिर है कि कोरोना से प्रभावित होने वालों की संख्या अनुमान से कहीं ज्यादा है। इन सभी को जोड़कर देखा जाए तो मृतकों की तादाद तुलनात्मक रूप से काफी कम रहती है।

(स्रोत : वाल स्ट्रीट जर्नल)

लोगों की मदद के लिए तैयार रहें स्वयंसेवक : डॉ. मोहन भागवत

संजय कुमार, रांची

- संघ प्रमुख ने कहा, सामूहिक जिम्मेदारी से फिर जीतेगा समाज
- कोरोना को परास्त करने के लिए देशभर में चल रहे हैं प्रयास

नागपुर से स्वयंसेवकों को संदेश देते सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत। सौजन्य : आरएसएस प्रचार विभाग

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने स्वयंसेवकों से आह्वान किया है कि कोरोना वायरस जैसी महामारी को परास्त करने में पूरा देश लगा है। ऐसे में हमें भी अपने सामाजिक दायित्व का ठीक से निर्वहन करना है। जहां जरूरत पड़े प्रशासन के सहयोग से लोगों की मदद के लिए तैयार रहना है। सामूहिक जिम्मेदारी से यह समाज फिर विजयी होगा। वह बुधवार को वर्ष प्रतिपदा के अवसर पर नागपुर से स्वयंसेवकों को 'ऑनलाइन' संदेश दे रहे थे।

डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि स्वयंसेवकों की ओर से प्रशासन एवं समाज के सहयोग से देश में जहां जरूरत पड़ रही है, राहत कार्य चलाए जा रहे हैं। इस संबंध में सरकार्यवाह भय्याजी जोशी का संदेश भी आया था। इसका फैलाव बढ़ता जा रहा है। इसलिए हो सकता है कि अब सारे देश में हमें कुछ करना पड़े। इसलिए अब जहां जैसी आवश्यकता है, वहां अपनी तरफ से सारे अनुशासनों का पालन करते हुए समाज के सहयोग से इस आपदा को परास्त करें।

उन्होंने कहा कि मौजूदा संकट को देखते हुए कभी-कभी ऐसा लगता है कि मिलना-जुलना नहीं होगा तो काम कैसे होगा? अपना काम व्यक्तित्व निर्माण के साथ-साथ समाज में संस्कारों का वातावरण बनाने का है। ऐसे में हम इस आपदा की घड़ी में सहयोग के लिए आगे आकर समाज में संस्कार निर्माण का काम कर सकते हैं।

जितना अनुशासन, उतना प्रभावी होगा : संघ प्रमुख ने कहा कि कोरोना वायरस जैसी विभीषिका से निपटने में समाज सरकार के निर्देशों का अनुशासन पूर्वक जितना पालन करेगा, उतना लाभदायक होगा। यह अनुशासन है घर से बाहर नहीं निकलना व एक दूसरे के संसर्ग (सोशल डिस्टेंसिंग) में नहीं आना। इसका अनुपालन करके ही हम इस महामारी रूपी युद्ध से जीत सकते हैं। इस अनुशासन का पालन स्वयंसेवक जितना करेंगे उतना ही समाज में दूसरे लोगों पर भी उसका प्रभाव पड़ेगा। कहा, संघ संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का नववर्ष के दिन ही जन्म हुआ था। उन्होंने जिस तरह संकल्प लेकर कार्य किया, उसी तरह हम अपना कर्तव्य निभाते हुए इस विषाणु के खिलाफ जारी युद्ध में विजय प्राप्त कर एक मिसाल पेश कर सकते हैं।

घर के अंदर ही करें प्रार्थना : संघ प्रमुख ने कहा कि संवत्सर 2077 का आरंभ ही ऐसे समय में हो रहा है, जब सारा विश्व एक संकट से जूझ रहा है। पूरे देश में लॉकडाउन के कारण सभी शाखाएं बंद हैं। पहले भी ऐसा हुआ है, जब दो-दो वर्ष तक अपनी शाखाएं बंद रहीं, लेकिन कार्य चलता रहा। इस बार परिस्थिति दूसरी है। घर से बाहर नहीं निकलना है, लेकिन शाखा लगा सकते हैं। इसलिए इस असाधारण परिस्थिति में इस बार नई शैली को अपनाकर अपने घर के अंदर या अपने बिल्डिंग में बहुत छोटे समूहों में, केवल 5-7 लोगों के साथ, घर के सदस्यों के साथ प्रार्थना कर सकते हैं।

बेंगलुरु में संघ ने मजदूरों में बांटे खाने के पैकेट

बेंगलुरु, प्रेट्र : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने बेंगलुरु शहर में काम करने वाले दिहाड़ी मजदूरों को खाने के पैकेट बांटने शुरू कर दिए हैं। 21 दिनों का लॉकडाउन लागू होने के बाद से इन दिहाड़ी मजदूरों को भोजन की कमी न हो, इसीलिए संघ ने यह व्यवस्था की है। संघ के स्वयंसेवकों ने बेंगुलुरु की झुग्गियों में जरूरतमंदों को खाने के पैकेट पहुंचाए हैं। इन पैकेटों में पांच किलो चावल, एक किलो अरहर की दाल, आधा किलो तेल, 500 ग्राम नमक और एक किलो आलू और प्याज दिया जा रहा है।

...आखिर क्यों हाई रिस्क पर है भारत?

कोरोना का संक्रमण रोकने के लिए दुनिया के देश कितने गंभीर हैं और किस तरह के कदम उठा रहे हैं, इसका पता इस बात से चलता है कि देशों ने संक्रमण के शुरुआती 100 मामले आने के बाद कितनी तेजी से कदम उठाया। इस समझने के लिए कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या को दो हिस्सों में बांट लें। पहला चरण पहला पॉजीटिव केस से 100वें मरीज तक और दूसरा 100वें मरीज से हर नए पॉजीटिव केस। इसे आधार बनाकर अगर आंकड़ों का अध्ययन करें तो स्थिति स्पष्ट हो जाती है कि किसने इस वायरस के संक्रमण को रोकने में ज्यादा सफलता हासिल की है। इससे ठीक उलट भारत समेत दो दर्जन ऐसे देश हैं जहां 100वां केस आने के बाद रोजाना संक्रमण दर में बढ़ोतरी दर्ज की गई है। संक्रमण का यही बढ़ता ग्राफ भारत को हाई रिस्क जोन में खड़ा करता है।

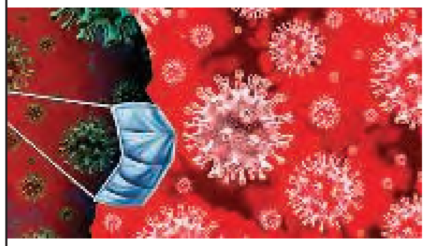

जापान, कोरिया ने कर दिखाया, अब चुनौती हमारी है

उदाहरण के तौर पर अगर जापान को लें तो पहले से 100 मरीज तक यहां हर रोज संक्रमण की दर 13 फीसद रही जबकि 100वें मरीज के बाद रोजाना की संक्रमण दर घटकर 8.1 रह गई। कुछ इसी राह पर दक्षिण कोरिया और सिंगापुर भी चले। लेकिन भारत समेत 23 ऐसे देश हैं जहां तस्वीर बिल्कुल उलट दिखी। यहां 100वां पॉजीटिव केस आने के बाद संक्रमण की औसत रोजाना दर 10.8 से बढ़कर 11.8 फीसद हो गई। अमेरिका में तो यह दर दोगुनी, थाईलैंड में तीन गुनी हो गई। बढ़ते संक्रमण की दर ही 130 करोड़ की आबादी वाले अपने देश के लिए चिंता का सबब बनी हुई है। यही वजह है कि सरकार ने देशभर में लॉकडाउन कर सामाजिक दूरी बनाने की घोषणा की है ताकि सामाजिक दूरी बढ़ाई जाए और कोरोना का संक्रमण रोका जाए। पिछले तीन दिन से जनता कर्फ्यू और लॉकडाउन का सकारात्मक असर दिखा भी है, लेकिन सुधार की अभी और बहुत गुंजाइश है। आइसीएमआर का दावा है कि अगर सामाजिक दूरी के नियमों को देशवासी मानें तो संक्रमण की दर आधी से भी कम कर दी जाएगी।

भारत समेत पांच देश जहां बड़ी तेजी से फैला कोरोना

देश	पहला केस	100वां केस	केस प्रतिदिन		प्रतिदिन की बढ़ोतरी का औसत प्रतिशत		बढ़े/घटे*
			1-100	100-अब तक	1-100	100-अब तक	
संक्रमण की दर जहां काफी तेज रही							
थाईलैंड	13 जनवरी	16 मार्च	2	87	7.8	30.1	22.3
अमेरिका	21 जनवरी	3 मार्च	2	1756	11.7	33.9	22.2
स्पेन	1 फरवरी	3 मार्च	4	1649	16.5	32.8	16.3
फ्रांस	25 जनवरी	1 मार्च	3	734	10.2	26.0	15.8
जर्मनी	28 जनवरी	1 मार्च	3	1187	15.3	28.2	12.9
भारत	30 जनवरी	17 मार्च	3	50	10.8	22.6	11.8
संक्रमण की दर जहां थोड़ी तेज रही							
बेल्जियम	4 फरवरी	7 मार्च	3	227	15.8	24.7	8.9
फिलीपींस	30 जनवरी	15 मार्च	2	44	11.0	1.5	8.5
ब्राजील	26 फरवरी	15 मार्च	7	187	30.5	38.3	7.8
इटली	31 जनवरी	24 फरवरी	5	2107	17.1	24.4	7.3
इजरायल	22 फरवरी	14 मार्च	5	125	25.4	30.1	4.7
संक्रमण की दर जहां थोड़ी कम रही							
चीन	31 दिसंबर	19 जनवरी	10	1270	11.6	9.7	-1.9
सिंगापुर	24 जनवरी	1 मार्च	3	16	10.0	7.0	-3
द. कोरिया	20 जनवरी	21 फरवरी	5	284	17.1	14.0	-3.1
जापान	15 जनवरी	22 फरवरी	3	33	13.0	8.1	-4.7
इंडोनेशिया	3 मार्च	16 मार्च	8	66	33.7	25.7	-8.1
संक्रमण की दर जहां ज्यादा कम रही							
चेक गणराज्य	2 मार्च	13 मार्च	10	105	39.4	25.9	-13.5
आयरलैंड	1 मार्च	15 मार्च	9	997	41.5	27.6	-13.9
डेनमार्क	27 फरवरी	10 मार्च	9	112	48.3	22.4	-25.8
बहरीन	24 फरवरी	10 मार्च	7	18	36.7	9.1	-27.6
पेरू	7 मार्च	18 मार्च	11	49	54.2	25.4	-28.8
100वें केस के बाद जहां संक्रमण की दर सबसे कम रही							
स्विट्जरलैंड	26 फरवरी	7 मार्च	21	502	70.6	25.8	-44.8
नार्वे	27 फरवरी	7 मार्च	12	144	6.1	21.1	-48.0
तुर्की	12 मार्च	19 मार्च	27	261	111.8	59.5	-52.3
नीदरलैंड	28 फरवरी	7 मार्च	16	256	83.4	24.4	-59.0
ईरान	20 फरवरी	27 फरवरी	20	916	83.3	22.7	-60.6

*बढ़े/घटे शुरुआत 100 केस तक और उसके बाद (प्रतिशत में)

21 मार्च के बाद विदेश से आए 64 हजार लोगों पर खास नजर

निगरानी ▶ ये लोग बाहर आए तो बढ़ेगा कम्युनिटी ट्रांसमिशन का खतरा

क्वारंटाइन के उल्लंघन पर दी गई सख्त कार्रवाई की चेतावनी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना के खिलाफ छिड़ी जंग में सरकार ने 21 मार्च के बाद विदेश से आए सभी 64 हजार लोगों को फिलहाल क्वारंटाइन में ही रहने के निर्देश दिए हैं। साथ ही कहा है कि वह ऐसे लोगों पर निगाह भी रख रही है। यदि कोई इन निर्देशों का उल्लंघन करता है तो उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई भी की जाएगी। दरअसल ये लोग बाहर आए तो कम्युनिटी ट्रांसमिशन का खतरा बढ़ जाएगा और फिर स्थिति विकराल हो सकती है। माना जा रहा है कि इसी कारण 21 दिनों के लॉकडाउन की भी घोषणा की गई है।

केंद्रीय स्वास्थ्य और गृह मंत्रालय के अधिकारियों ने बुधवार को मीडिया से चर्चा में यह जानकारी दी है। स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने बताया कि अब तक के अध्ययन में यह साफ हो गया है कि विदेश से आए लोगों से ही कोरोना के संक्रमण फैलने का सबसे ज्यादा खतरा है। इसलिए सरकार उन्हें लेकर पूरी तरह से सतर्क है। देशभर में ऐसे लोगों की पहचान कर ली गई है। उन्होंने बताया कि उनकी नजर में वे लोग भी हैं जो एयरपोर्ट से किसी तरीके से बच निकले हैं। ऐसे लोगों को किसी से संपर्क नहीं करने और घरों में ही रहने के लिए कहा गया है। इसके साथ ही उन्होंने कोरोना से निपटने के लिए की गई तैयारियों की जानकारी भी दी। उन्होंने बताया कि मौजूदा समय में देश के 118 सरकारी लैब के पास हर दिन 12 हजार से ज्यादा लोगों की जांच की क्षमता है जो बढ़ाई जा सकती है। इसके साथ ही 29 ऐसी निजी लैब को भी आइसीएमआर की तय गाइडलाइन के तहत जांच की अनुमति दी गई है जिनके देशभर में 16 हजार से ज्यादा कलेक्शन सेंटर हैं।

स्वास्थ्य मंत्रालय ने मलेरिया में इस्तेमाल होने वाली हाइड्रो-क्लोरोक्वीन दवा के खुद ही इस्तेमाल करने से बचने की सलाह दी है। उन्होंने साफ किया कि यह सिर्फ संक्रमित लोगों के उपचार या स्वास्थ्य सेवाओं में लगे लोगों को ही देने की सलाह दी गई है। इसके लिए डॉक्टर से सलाह भी लेनी होगी।

प्रशिक्षु आइएफएस के श्वसन तंत्र तक नहीं पहुंचा वायरस

जागरण संवाददाता, देहरादून

उत्तराखंड के पहले कोरोना पॉजिटिव मरीज, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी के प्रशिक्षु आइएफएस की हालत में तेजी से सुधार हुआ है। तकरीबन आठ दिनों के इलाज के बाद अब उनकी स्थिति सामान्य है। उनकी हालिया रिपोर्ट निगेटिव आई है। हालांकि अभी 14 दिन तक उन्हें चिकित्सकों की निगरानी में अस्पताल में ही आइसोलेशन वार्ड में रखा जाएगा। दून मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आशुतोष सयाना का कहना है कि मरीज की इम्युनिटी (प्रतिरोधक क्षमता) का भी इसमें बड़ा रोल है। उन्होंने कहा कि मरीज में वायरस का ज्यादा लोड नहीं था। लेकिन यदि मरीज कोई बुजुर्ग होता या उसमें पहले से कोई दूसरी बीमारी होती तो संक्रमण का स्तर अधिक हो सकता था।

स्वास्थ्य महानिदेशक डॉ. अमिता उप्रेती ने बताया कि इलाज के बाद मरीज का सैम्पल जांच के लिए हल्द्वानी लैब भेजा गया था। जिसकी रिपोर्ट निगेटिव आई है। यह राहत की बात है। पर अभी एक बार पुनः सैंपल की जांच होने के बाद ही वह कोरोना मुक्त कहा जाएगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, पॉजिटिव केस में कम से कम दो बार पुनः जांच पर रिपोर्ट निगेटिव आने पर ही व्यक्ति को स्वस्थ कहा जाता है। तभी उसे अस्पताल से छुट्टी दी जा सकती है। बहरहाल, प्रशिक्षु आइएफएस का उपचार करने वाली डॉक्टरों की टीम हालिया रिपोर्ट से उत्साहित है। राज्य में कोरोना का यह पहला मामला था। अस्पताल में कोरोना के नोडल अधिकारी डॉ. अनुराग अग्रवाल ने बताया कि मरीज को एंटी मलेरियल ड्रग क्लोरोक्वीनीन की डोज दी गई। इसके अलावा अन्य दवाएं लक्षणों के आधार पर तय की गईं।

'घर में ही करें मां की पूजा, यही है सबसे बड़ा प्रसाद'

जागरण संवाददाता, ऊना

- चिंतपूर्णी शक्तिपीठ के पुजारी ने कहा, विश्व कल्याण के लिए करें प्रार्थना

रवींद्र कालिया। जागरण

हिमाचल के ऊना जिले में स्थित चिंतपूर्णी शक्तिपीठ 51 शक्तिपीठों में से एक है। यहां नवरात्र पर देश भर से श्रद्धालु पहुंचते हैं। लेकिन इस बार कोरोना के बचाव के लिए पीठ के पुजारी रविंद्र कालिया ने अपील की है कि चैत्र नवरात्र के दौरान सभी श्रद्धालु घर में ही बैठकर ही मां चिंतपूर्णी की अराधना करें। नवरात्र में घर पर रहना ही मां का सबसे बड़ा प्रसाद होगा, जिससे सभी की जान बच सकती है।

कहा कि मां चिंतपूर्णी चिंताओं का हरण करने वाली हैं। कालिया ने बताया कि विश्व की सुख-शांति के लिए पुजारी वर्ग भी मंदिर के कपाट बंद होने के बाद भी दुर्गा स्तुति का पाठ कर रहा है। श्रद्धालु भी मां का ध्यान कर विश्व कल्याण के लिए प्रार्थना करें। मां की कृपा से सब कुछ जल्द ठीक हो जाएगा और कोरोना वायरस खत्म होने के बाद मां खुद उन्हें अपने पास बुला लेंगी।

पुजारी रवींद्र कालिया ने अपील की कि आपदा की इस घड़ी में कोई भी श्रद्धालु घरों से बाहर न निकलें और घर के मंदिर में भी मां चिंतपूर्णी का पूजा-पाठ करें। बताया कि मंदिर प्रशासन ने इंटरनेट के माध्यम से मां चिंतपूर्णी की पावन पिंडी के लाइव दर्शन की व्यवस्था की है। श्रद्धालु घर बैठे ही मां के मंदिर का सीधा प्रसारण देख सकते हैं।

देशभर में सुरक्षा बलों के अस्पतालों में भी आइसोलेशन बेड की व्यवस्था

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना संकट से लड़ाई में सरकार के साथ सुरक्षा बल भी प्राण-प्रण से जुट गए हैं। सरकार ने कोविड-19 से संक्रमित मरीजों के इलाज और आइसोलेशन के लिए देश भर में मौजूद सुरक्षा बलों के 32 अस्पतालों को अपने अधिकार में ले लिया है। इन अस्पतालों में कुल 1900 बेड हैं। इसके अलावा, सेना के हथियार और उपकरण बनाने के लिए जिम्मेदार आर्डिनेंस फैक्ट्री बोर्ड (ओएफबी) ने भी कोरोना वायरस से मुकाबले के लिए 550 से अधिक लोगों के लिए आइसोलेशन बेड की व्यवस्था की है।

केंद्रीय गृह मंत्रालय की बैठक सीमा प्रबंधन के सचिव की अध्यक्षता में बुधवार को हुई। इस उच्चस्तरीय बैठक में आपात स्थिति को देखते हुए केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) के समग्र अस्पतालों को कोविड-19 से मुकाबले में इस्तेमाल करने का फैसला लिया गया है। इन 32 अस्पतालों के 1900 बिस्तर आइसोलेशन वार्ड और कोरोना के पॉजिटिव मरीजों के इलाज के लिए इस्तेमाल होंगे। सरकार ने मौजूदा खतरे से निपटने के लिए हरसंभव तैयारी की है। इसी के चलते सीआरपीएफ, बीएसएफ, आइटीबीपी और सशस्त्र सीमा बल के अस्पतालों का कोरोना वायरस से निपटने के लिए उपयोग होगा। यह 32 अस्पताल ग्रेटर नोएडा, हैदराबाद, गुवाहाटी, जम्मू, टेकनपुर (ग्वालियर), दीमापुर, इम्फाल, नागपुर, सिल्चर, भोपाल, अवदि, जोधपुर, कोलकाता, पुणे, बेंगलुरु और अन्य स्थानों में हैं।

विशेषज्ञ चिकित्सकों व उपकरणों की कमी : एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इन आदेश जारी किया गया है कि इन अस्पतालों में स्किल्ड मैनपावर, विशेष उपकरणों की भारी कमी है। लिहाजा, इन स्थानों में विशेषज्ञ चिकित्सक, चिकित्सा उपकरण जैसे वेंटिलेटर और बचाव के उपकरण भेजने के आदेश जारी किए गए हैं। यह आदेश भी दिया गया है कि यहां पर कोरोना के मरीज बढ़ने पर पहले से भर्ती मरीजों और सुरक्षा बलों के परिजनों को अन्य अस्पतालों में शिफ्ट किया जाए। केंद्र सरकार इस महीने की शुरुआत में ही सीएपीएफ ने 5400 लोगों के लिए क्वारंटाइन सुविधाएं बढ़ाई गई हैं।

कानपुर समेत कई शहरों की आयुध फैक्ट्रियों में हैं बेड : केंद्रीय रक्षा मंत्रालय के जारी बयान के अनुसार आर्डिनेंस फैक्ट्री बोर्ड (ओएफबी) की ओर से जबलपुर की वाहन फैक्ट्री में 40 बेड का इंतजाम किया गया है। इशापुर के मेटल एंड स्टील फैक्ट्री में 30 बेड, कोसीपुर की गन एंड शेल फैक्ट्री में 30, खड़की की एम्युनिशन फैक्ट्री और कानपुर की आर्डिनेंस फैक्ट्री में भी 30-30 बेड हैं। खमरिया स्थित आर्डिनेंस फैक्ट्री और अंबाझरी की आर्डिनेंस फैक्ट्री में भी 30-30 बेड हैं। 25 बेड अंबरनाथ की आर्डिनेंस फैक्ट्री में, अवदी और मेदक में 20-20 बेड हैं। ओएफबी ने अलग से 285 बेड की व्यवस्था आइसोलेशन वार्ड के लिए की है।

मरीजों के लिए इंतजाम

- ऐसे 32 अस्पतालों में इलाज और आइसोलेशन वार्ड के लिए 1900 बिस्तर
- यह 32 अस्पताल ग्रेटर नोएडा, जम्मू, टेकनपुर, भोपाल, जोधपुर आदि स्थानों में

राजस्थान में नहीं रुकेगी पढ़ाई, ऑनलाइन उपलब्ध रहेंगे लेक्चर

राज्य ब्यूरो, जयपुर

राजस्थान में कॉलेज छात्रों की पढ़ाई लॉकडाउन के दौरान भी जारी रहेगी। कॉलेज शिक्षकों से कहा गया है कि वे घर पर लेक्चर, नोट्स और ई-कंटेंट तैयार करें। इसे यू-ट्यूब और सोशल मीडिया के जरिये छात्रों को उपलब्ध कराया जाएगा। गौरतलब है कि राजस्थान में कॉलेज शिक्षा विभाग लंबे समय से एक यू ट्यूब चैनल चलाता है, जिस पर करीब ढाई सौ घंटे का कंटेंट उपलब्ध है। इसमें सभी विषयों की सामग्री है।

इसके अलावा हर सरकारी कॉलेज में छात्रों के मोबाइल नंबर भी कॉलेज के पास हैं। ऐसे में उन तक मोबाइल पर ही सोशल मीडिया के अन्य माध्यमों से भी यह सामग्री पहुंचाई जाएगी। विभाग के आयुक्त प्रदीप कुमार बोरड का कहना है कि लॉकडाउन के कारण कॉलेज भले ही बंद हैं, लेकिन शिक्षकों को अपना अकादमिक कार्य जारी रखना है, ताकि छात्रों की पढ़ाई का नुकसान न हो।

कोटा में खाली कराया 'शाहीन बाग'

राजस्थान के कोटा में एनआरसी और सीएए के खिलाफ चल रहा धरना मंगलवार रात पुलिस ने खत्म करा दिया। सामान जब्त कर वहां लगा टेंट उखाड़ दिया। कोटा शहर में बीते ढाई महीने से यह धरना चल रहा था। जिला प्रशासन ने कई बार प्रदर्शनकारियों महिलाओं और पुरुषों से कोरोना वायरस का खतरा बताते हुए धरना समाप्त करने की अपील करते हुए समझाइश की थी, लेकिन यह धरना खत्म नहीं हो रहा था। मंगलवार देर रात पुलिस ने इन प्रदर्शनकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए उन्हें धरनास्थल से हटा दिया।

उद्धव ठाकरे की लोगों से अपील, घर में रहकर अपने 'होम मिनिस्टर' की सुनें

राज्य ब्यूरो, मुंबई

उद्धव ठाकरे। फाइल

प्रधानमंत्री द्वारा 21 दिन के राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन की घोषणा के बाद महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने माहौल को थोड़ा हल्का बनाते हुए राज्य के लोगों को घर में रहते हुए अपने 'होम मिनिस्टर' (पत्नी) की बात सुनने की सलाह दी है। मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि राज्य में आवश्यक वस्तुओं का पर्याप्त भंडार है।

मुख्यमंत्री ठाकरे बुधवार दोपहर महाराष्ट्र के प्रमुख पर्व गुडी पड़वा की शुभकामना देने के बहाने राज्य के लोगों को फेसबुक लाइव के जरिये संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, 'मैं कोई गंभीर घोषणा करने के लिए नहीं आया हूं। सिर्फ गुडी पड़वा की शुभकामनाएं देने आया हूं और यह कहना चाहता हूं कि यदि आप घर से बाहर निकलेंगे, तो कोरोना नामक शत्रु आपके घर में आ जाएगा। इसलिए आप अपने घर पर ही रहें। जैसे मैं घर में रहकर मिसेज मुख्यमंत्री की सुन रहा हूं, वैसे ही आप अपने घर में रहकर होम मिनिस्टर की सुनिए।' उद्धव ने कहा कि हर साल हम लोग गुडी पड़वा बड़े धूमधाम से मनाते हैं। पूरा महाराष्ट्र भगवा ध्वज से पट जाता है। हम इस बार भी यह पर्व मनाएंगे लेकिन कोरोना नाम के संकट पर विजय पाने के बाद। इस अवसर पर उद्धव ने लोगों को आश्वस्त किया कि राज्य में किसी वस्तु की कमी नहीं होने दी जाएगी। आवश्यक वस्तुओं की दुकानें बंद नहीं होंगी। दूध, दवा, फल, सब्जी इत्यादि की दुकानें खुली रहेंगी। वहां कोई भी बिना भीड़भाड़ किए अपनी जरूरत की वस्तुएं खरीद सकता है।

उद्धव ने एक बार फिर उद्योग जगत से आह्वान किया कि वह अपने दैनिक कर्मचारियों के वेतन में कोई कटौती न करें। अपने कारखाने बंद न करें। मानवधर्म का पालन करें। उद्धव ने एक अस्पताल तैयार करने की घोषणा करने वाले रिलायंस समूह सहित ऐसे लोगों की तारीफ की, जो इस संकट के समय में समाज की मदद में आगे आ रहे हैं।

छग में फंसे हैं 112 मजदूर, राज्य सरकारें लेने को तैयार नहीं

नईदुनिया, बिलासपुर

- बंगाल, ओडिशा, बिहार और मध्य प्रदेश के रहने वाले हैं, लॉकडाउन का हवाला देकर लेने से कर रही हैं इन्कार

एनाकुर्लम एक्सप्रेस से पहुंचे करीब 200 मजदूरों को छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की पहल पर मंगलवार को झारखंड भेज दिया गया था, मगर इसी ट्रेन से आए 112 मजदूर अब भी बिलासपुर में फंसे हुए हैं। लॉकडाउन के कारण बंगाल, ओडिशा, बिहार और मध्य प्रदेश की सरकारें अपने यहां के मजदूरों को लेने के लिए तैयार नहीं हैं, जबकि बिलासपुर में सभी की जांच हो चुकी है। अभी 72 मजदूरों को व्यापार विहार स्थित त्रिवेणी भवन और 40 को रेल सांस्कृतिक निकेतन भवन में ठहराया गया है। इनके खाने-पीने से लेकर तमाम व्यवस्थाएं नगर निगम व रेल प्रशासन कर रहा है।

सोमवार की देर रात मजदूर ट्रेन से बिलासपुर स्टेशन पहुंचे थे। इनमें से 139 झारखंड के थे। वहां के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने भूपेश बघेल से मजदूरों को भिजवाने की मांग की। इसके बाद मंगलवार को उन्हें दो बस से रवाना कर दिया गया। इनके साथ कुछ और मजदूर भी गए थे। बंगाल, ओडिशा, बिहार, मध्य प्रदेश के मजदूरों को भेजने के लिए प्रशासन तैयार है, लेकिन वहां की राज्य सरकारें तैयार नहीं हो रही हैं। इसकी वजह लॉकडाउन को बताया गया है।

> हमने मजदूरों को भेजने के लिए बस की व्यवस्था कर ली थी। संबंधित राज्य सरकारें लॉकडाउन की हवाला देकर अपने यहां के मजदूरों को लेने से मना कर रही हैं। इसलिए बिलासपुर में ही इन्हें ठहराया गया है।
> – देवेंद्र पटेल, एसडीएम, बिलासपुर।

हरियाणा में कैदियों की तीन माह तक की सजा होगी माफ

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़

कोरोना वायरस के खतरे से जेलें भी अछूती नहीं। जेलों में भीड़ कम करने के लिए सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद प्रदेश सरकार ने भी कैदियों की तीन माह तक सजा माफ करने की घोषणा की है। सात साल तक की सजा वाले कैदियों को आठ सप्ताह की पैरोल और बंदियों को 60 दिन की जमानत दी जाएगी।

हालांकि पॉक्सो एक्ट, दुष्कर्म, एसिड अटैक, धारा 379-बी, मादक पदार्थ के आरोपितों और विदेशी कैदियों को सजा में कोई छूट नहीं मिलेगी। हाई कोर्ट के जस्टिस राजीव शर्मा, जेल विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव विजय वर्धन और महानिदेशक कारागार के सेल्वराज के बीच वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये हुई बैठक में इस पर लंबी चर्चा हुई। हरियाणा के जेल मंत्री रणजीत सिंह चौटाला ने बताया कि जो कैदी पहले से ही पैरोल या फरलो पर हैं, उनकी चार सप्ताह की विशेष पैरोल बढ़ाई जाएगी।

जिन कैदियों ने एक पैरोल या एक फरलो शांतिपूर्ण व्यतीत करके समय पर जेल में वापसी की थी, उन्हें भी छह सप्ताह की विशेष पैरोल दी जाएगी। 65 वर्ष से अधिक उम्र के कैदी जो एक से अधिक केसों में संलिप्त नहीं हैं, उन्हें भी अच्छे आचरण के आधार पर छह सप्ताह की विशेष पैरोल दी जाएगी। ऐसे कैदी और हवालाती, जिनकी सजा सात वर्ष से अधिक नहीं है तथा कोई भी अन्य केस न्यायालय में लंबित नहीं है, उन्हें भी छह से आठ सप्ताह तक की विशेष पैरोल और जमानत का प्रावधान रखा गया है। जेल मंत्री रणजीत सिंह चौटाला ने कहा कि जिन कैदियों के पैरोल या फरलो के मामले पहले से ही जिलाधीश या मंडलाधीश के पास लंबित हैं, उनके केसों को भी छह दिन में निपटाया जाएगा। कैदियों को दो महीने तक महानिदेशक कारागार तथा एक महीने तक जेल अधीक्षक द्वारा विशेष माफी दी जाएगी।

डरे नहीं, लड़ें

कोरोना हो जाए तो क्या करें, क्या न करें

कोरोना वायरस के दुनिया भर में फैल जाने से दशहत का माहौल है। लेकिन अधिकांश मामलों में हल्के-फुल्के या सामान्य लक्षण होते हैं, जिनमें अस्पतालों में भर्ती होने की जरूरत नहीं होती है। ऐसी स्थिति में घबराने की नहीं, बल्कि संयम और समझदारी से काम लेने की जरूरत है। आइए, जानते हैं कि यदि कोरोना वायरस के संक्रमण की आशंका हो या टेस्ट पॉजिटिव आए तो क्या करें और क्या न करें:

संक्रमण का शक हो तो क्या करें

- यदि आप में फ्लू जैसे लक्षण हों तो बीमार मानकर एहतियात बरतें और अपने डॉक्टर से संपर्क करें।
- आप परामर्श के लिए इमरजेंसी रूम को भी फोन कर सकते हैं।
- अस्पतालों में कोरोना संक्रमित रोगियों की देखभाल की एक व्यवस्था है। स्टाफ तथा अन्य रोगियों को भी सुरक्षित रखना होता है। इसलिए पहले ही फोन करें।

इमरजेंसी रूम जाने से पहले ये जानें

- इमरजेंसी रूम रोगियों से भरा रहता है। डॉक्टर व्यस्त होते हैं। ऐसे में यह सुनिश्चित करें कि क्या वाकई आपको इसकी जरूरत है?
- इमरजेंसी रूम में जाने से खुद से सवाल करें कि सामान्य स्थिति में कफ या बुखार होने पर क्या आप इमरजेंसी में जाते? संभवत: इसका जवाब होगा- ना। क्योंकि कफ, बुखार, गले खराब होना और नाक बहने की स्थिति अतीत में शायद ही इमरजेंसी वाली रही हो।
- यदि ये लक्षण कोरोना वायरस के भी हों, तो भी अधिकांश मामले में यह इमरजेंसी का केस नहीं होता है। पहले अपने डॉक्टर को बुलाएं।

ज्यादा जोखिम वाले मरीजों की देखभाल

- ज्यादा जोखिम वाले रोगी लक्षण प्रकट होने के बाद अपने डॉक्टर से संपर्क करें।
- डॉक्टर आपकी हालत देख कर परामर्श देंगे कि कहां और कैसा इलाज चाहिए।
- ज्यादा जोखिम वाले रोगी वे होते हैं, जो अस्थमा या फेफड़े की बीमारी से पीड़ित हों या जिन्हें पहले निमोनिया हुआ हो। हृदय, किडनी, मधुमेह तथा कैंसर के रोगी भी इस श्रेणी में आते हैं।

क्या विशेष एहतियात बरतें

- रोगी अलग रूम में रहें। अन्य से संपर्क ना के बराबर रखें। पालतू जानवर के संपर्क में भी आने से बचें।
- संभव हो तो अलग बाथरूम का इस्तेमाल करें। यदि बाथरूम साझा हो तो रोगी के इस्तेमाल करने के बाद सैनिटाइज करें।
- रोगी को खाना दरवाजे पर ही रख कर दें।
- रोगी तथा देखभाल करने वाले लोग मास्क का इस्तेमाल करें।
- बीमार के साथ खाना, तौलिया या बिस्तर साझा न करें।
- घर में कॉमन जगह को खुला रखें तथा हवा आने की व्यवस्था करें। इसके लिए खिड़की खोल कर रखें या एयर-कंडीशनर का इस्तेमाल कर सकते हैं।

जब रोगी घर पर हो तो कैसे रखें सफाई

- यदि रोगी घर हो तो साफ-सफाई में रोगी से अनावश्यक संपर्क टालें।
- रोगी के बेडरूम या बाथरूम में टिशू पेपर, तौलिया तथा डिसइंफेक्टेंट उपलब्ध कराएं।
- यदि बाथरूम साझा करना मजबूरी हो तो रोगी को चाहिए कि इस्तेमाल करने के बाद हर बार जहां तक संभव हो, उसकी सफाई कर दे।

- रोगी के बाथरूम इस्तेमाल करने के बाद दूसरे सदस्य को चाहिए कि जहां तक संभव हो इंतजार करे और सफाई तथा विसंक्रमित करने के बाद ही इस्तेमाल करे।
- सफाई के बाद हमेशा ही हाथ अच्छी तरह से धोएं।
- यदि रोगी के साथ जगह साझा करना पड़े तो दूसरे सदस्य दस्ताना पहनें तथा डोरवेल, बिजली स्वीच, नल, टॉयलेट और रोगी द्वारा छूए जाने वाली चीजों को बार-बार विसंक्रमित करें।

घर पर आइसोलेशन कब खत्म करें

- डब्ल्यूएचओ की सलाह है कि लक्षण समाप्त होने के बाद रोगी को 14 दिन तक आइसोलेट रहना चाहिए।
- लेकिन सीडीसी की गाइडलाइन में कहा गया है कि कोरोना संक्रमण के पुष्ट या अपुष्ट मामलों में आइसोलेशन से बाहर निकलने में इन तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए
- बुखार कम करने वाली दवाई के बगैर ही कम से कम 72 घंटे तक बुखार न हो।

- अन्य लक्षण समाप्त हो जाएं (कफ और सांस लेने की तकलीफ में सुधार)।
- पहली बार लक्षण प्रकट होने के बाद कम से कम सात दिन बीत गए हों।

परिवार के अन्य सदस्यों को काम पर जाना चाहिए

नहीं, यदि परिवार में कोई व्यक्ति संक्रमित या संदिग्ध संक्रमित हो तो पूरे परिवार को 14 दिन के क्वारंटाइन में रहना चाहिए।

ये लक्षण हों तो इमरजेंसी इलाज कराएं

सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) के मुताबिक, यदि ये लक्षण हों तो इमरजेंसी इलाज कराएं:

- सांस लेने में तकलीफ।
- सीने में लगातार दर्द या भारीपन।
- भ्रम या जागने में असमर्थता।
- होंठ या चेहरा का नीला पड़ना।
- कोई ऐसे लक्षण, जो गंभीर और चिंताजनक मालूम पड़े।

लक्षण हो या टेस्ट पॉजिटिव आए तो घर पर कैसे रखें ख्याल

- यदि आप में कोरोना वायरस संक्रमण के सभी लक्षण हों और जांच नहीं कराई है तो भी संक्रमित मानकर एहतियात बरतें।
- सामान्य लक्षणों की स्थिति में फ्लू रोगियों जैसा देखभाल करें।
- तरल पदार्थ, सूप जैसी चीजों का सेवन करें।
- नियमित अंतराल पर तापमान देखें।
- यदि रोगी इतना कमजोर हो कि खा-पी नहीं सकता या बाथरूम नहीं जा सकता तो डॉक्टर को बुलाएं।

बीमार को ठीक होने में कितना समय लगेगा

कोरोना से पीड़ितों के ज्यादातर मामलों में देखा गया है कि अधिकांश सप्ताह बाद बेहतर महसूस करने लगते हैं।

(स्रोत: न्यूयार्क टाइम्स)

आपकी सतर्कता से रुक सकती है तीसरी स्टेज

सीख ▶ लॉकडाउन का पालन करने से बच सकती हैं हजारों लोगों की जिंदगी

कुमार संजय, लखनऊ

ये दो मामले देखिए। एक बताता है कि आप किस तरह से वायरस के संक्रमण में आकर भी अपने और अपनों को सुरक्षित रह सकते हैं, तो वहीं दूसरे से साफ पता चलता है कि आपकी लापरवाही से यह महामारी कितनी तेजी से फैल सकती है। महामारी का रूप ले चुकी इस बीमारी पर अंकुश लगाने के लिए सरकार ने लॉकडाउन कर दिया है। लोगों को घर में रहने के लिए कहा गया है। अब फैसला आपके हाथ में है। आप घर में रहेंगे और संक्रमण की सूरत में रचना की तरह समझदारी से काम लेंगे या फिर कनिका की तरह अपने साथ समाज को भी जोखिम में डालेंगे।

संजय गांधी पीजीआइ के शरीर प्रतिरक्षा वैज्ञानिक प्रो. विकास अग्रवाल के मुताबिक, कोरोना भारत में इस समय सेकंड स्टेज में है। कोरोना के फैलने के तीन चरण हैं। रचना की तरह यदि सबने प्रयास किया होता या करें तो हम वायरस के फैलाव को रोक सकते हैं। प्रो. अग्रवाल ने बताया कि तीसरे चरण में संक्रमित लोगों से समूहों में इंफेक्शन फैलता है। यह मुश्किल स्टेज होती है। इसमें वे लोग भी पॉजिटिव निकलने शुरू हो जाते हैं, जिनका विदेश से लौटे किसी व्यक्ति से दूर-दूर तक कोई लेना-देना नहीं होता। इस स्टेज में यह बीमारी पूरे समुदाय में फैलने लगती है। किसी को पता नहीं होता कि वायरस आया कहां से। बड़े इलाके में एक साथ बड़ी आबादी तेजी से संक्रमित हो जाती है। इसके बाद बीमारी महामारी बन जाती है।

जनमत मुद्दा

क्या अपने संयम, संकल्प और धैर्य के बूते कोरोना को हराने के लिए 21 दिन घरों में रहने की चुनौती आपको स्वीकार है?

mudda@jagran.com पर आप अपनी राय हमें भेज सकते हैं।

केस-1

रचना (काल्पनिक नाम) चीन गई थीं। वहां पर उन्हें कोरोना वायरस का इंफेक्शन हुआ। देश लौटीं, तब तक एकदम ठीक थीं। फिर भी उन्होंने खुद को सबसे अलग रखा। भीड़भाड़ से दूर रहीं। हफ्तेभर में उन्हें खांसी-बुखार शुरू हुआ। जांच में वह पॉजिटिव निकलीं। अस्पताल में क्वारंटाइन किया गया। दस दिन में ठीक होकर वह घर लौट आईं। बीमारी आगे नहीं बढ़ी।

केस-2

कनिका लंदन से लौटीं लेकिन, आते ही दोस्तों संग पार्टी करनी शुरू कर दी। इधर, कनिका बीमार हो गईं। जांच में वह कोरोना पॉजिटिव निकलीं। अब उन लोगों को ट्रैक करने की कोशिश की जा रही है, जो उनके संपर्क में आए थे लेकिन, सारे लोग ट्रैक नहीं किए जा सके। वे लोग देश के किस कोने में गए, कैसी भीड़ का हिस्सा बने, कितने लोगों से मिले, किसी को कुछ पता नहीं है।

ईरान से 277 भारतीय नागरिकों को लेकर दो विमान पहुंचे जोधपुर

संवाद सूत्र, जोधपुर : कोरोना के कारण विश्वभर में मचे हड़कंप के बीच बुधवार तड़के ईरान की राजधानी तेहरान से 277 भारतीय नागरिकों को लेकर दो विमान जोधपुर पहुंचे। इन यात्रियों की स्क्रीनिंग के बाद उन्हें आइटीबीपी कैंप भेजा गया। सभी यात्रियों को जोधपुर में ही सेना की देखरेख में रखा जाएगा। इनकी आरंभिक जांचों के बाद ही उन्हें अपने घरों की तरफ रवाना किया जाएगा।

कोरोना से प्रभावित सबसे अधिक देशों में से एक ईरान है। वहां भारत के 277 नागरिक फंस गए थे। हालांकि, ये सभी कोरोना निगेटिव बताए जा रहे हैं। फिर भी एहतियात के तौर पर इन्हें भारतीय सेना की तरफ से तैयार विशेष क्वारंटाइन सेंटर में रखा जाएगा। यह पहला मौका है, जब विदेश से लाए जाने वाले भारतीय नागरिकों को जोधपुर में रखा जा रहा है। जैसलमेर के वेलनेस सेंटर में पहले से ईरान से लाए गए 484 अन्य भारतीय नागरिकों को जैसलमेर में क्वारंटाइन कर रखा गया है।

सुबह 4.40 पर पहुंचा पहला विमान : बुधवार सुबह 4.40 बजे पहला विमान जोधपुर पहुंचा। इसके बाद एक अन्य विमान आया। इनसे भारत आए सभी 277 नागरिकों को 14 दिन तक क्वारंटाइन सेंटर में रखा जाएगा। इस दौरान सेना के प्रशिक्षित चिकित्सकों व नर्सिंग कर्मचारियों की टीम उनकी देखरेख करेगी।

..जिंदगी तो जिंदादिली का नाम है हुजूर

लॉकडाउन के दौरान हरियाणा के करनाल में पड़ोसी इस फुर्सत के वक्त में एक-दूसरे से खूब संवाद कर रहे हैं। कल तक जरा भी वक्त न निकालने वाले लोग एक-दूसरे की भरपूर मदद भी कर रहे हैं। जागरण

पवन शर्मा, करनाल

लॉकडाउन मैजिक

भाई, कैसे हैं भाटिया साहब? यह लॉकडाउन क्या हुआ, आपने तो हमसे दूरियां ही बढ़ा लीं। छतों का ही तो फासला है, बातें करने तो कभी-कभार आ जाया करिए। कोरोना के डर से दूर-दूर क्यों बैठे हैं? अरे, जिंदगी तो जिंदादिली का नाम है हूजूर, मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं ?

करनाल में कई परिवार इन दिनों एक-दूसरे के बेहद करीब आ गए हैं। कल तक इन्हीं पड़ोसियों में न के बराबर संवाद होता था, लेकिन कोरोना वायरस की दहशत के बीच हर कोई अपने करीब उम्मीद के रंग घोले रखना चाहता है। सेक्टर-13 एक्सटेंशन के शर्मा परिवार और भाटिया परिवार को ही लीजिए। दोनों पड़ोसी हैं। 65 वर्षीय इंद्रजीत शर्मा सिंचाई विभाग से रिटायर्ड हैं। दो दिन से घर में कैद रहकर परेशान हो गए तो सोचा कि क्यों न पड़ोसियों से ही बतिया लें। लिहाजा, शर्मा जी और उनकी पत्नी कांता शर्मा छत पर आए और बाहर झांका तो पड़ोसी 74 वर्षीय प्रेम प्रकाश भाटिया अपने बेटे नरेंद्र भाटिया और पुत्रवधू पूनम संग बॉलकनी में खड़े मिले। एक-दूसरे पर नजर पड़ी और संवाद शुरू हो गया तो जल्द ही सभी पड़ोसियों में गुफ्तगू होने लगी। कोई गिला-शिकवा नहीं, बस एक-दूसरे संग हल्की-फुल्की चर्चा और हास-परिहास में कोरोना को लेकर कायम तनाव कैसे चुटकियों में काफूर हो गया, कुछ पता ही नहीं चला।

पड़ोसियों में अब एक-दूसरे के लिए बैर नहीं, चिंता का भाव है। कोई बहू पड़ोसी अंकल जी के लिए सुबह के नाश्ते में पोहा बनवाकर भिजवा रही है तो किसी ने पड़ोस के बच्चों के लिए स्पेशल स्नैक्श पार्टी अरेंज की है। लूडो, ताश, वीडियो गेम्स में बच्चे संग-संग भरपूर वक्त गुजार रहे हैं। किसी के घर दवा की किल्लत है तो पड़ोसी फर्स्ट एड किट लेकर हाजिर हैं। कोई गैस सिलेंडर खत्म होने से परेशान हुआ तो पड़ोसी ने चुटकियों में अरेंज कर दिया। रोजमर्रा की वस्तुएं साझा की जा रही हैं। नवरात्र में मंदिर नहीं जा सके तो पड़ोसियों ने ही साथ दिया और सभी ने मिलकर पूजा-अर्चना की।

यह सन्नाटा अच्छा है...

कोरोना वायरस का प्रसार रोकने के लिए राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के पहले दिन दिल्ली में नियमों का पालन करते हुए लोग घरों में ही रहे। बहुत आवश्यक होने पर ही बाहर निकले। यह नजारा अक्षरधाम मंदिर के पास एनएच-24 का है। प्रेट्र

सेफ्टी मास्क और एप के नाम पर हो सकता है साइबर हमला

राजीव कुमार, नई दिल्ली

▶ **आइटी मंत्रालय की चेतावनी, हैकर्स कर रहे हैं कोविड-19 और कोरोना के नाम का इस्तेमाल**

अगर आपको इन दिनों किसी एप को इंस्टॉल करने पर कोरोना सेफ्टी मास्क देने की पेशकश की जा रही हो तो सावधान रहिएगा। यह काम हैकर्स कर रहे हैं जो इस एप की मदद से आपका डाटा उड़ाने के साथ आपके बैंक खाते को भी साफ कर सकते हैं। यह चेतावनी सूचना प्रौद्योगिकी (आइटी) मंत्रालय की इंडियन कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पांस टीम (आइसीईआरटी) की तरफ से दी गई है।

आइसीईआरटी का कहना है कि जब पूरी दुनिया कोरोना वायरस से लड़ रही है तो साइबर अपराधी लोगों को कोरोना या कोविड-19 के नाम पर डराकर उन्हें नुकसान पहुंचा रहे हैं। हैकर्स इन दिनों कई मॉलवेयर या वायरस का इस्तेमाल कर रहे हैं। इनमें कोविडलॉक, क्रिमसन रैट, लोकिबॉट, ट्रिकबॉट, इमोटेट, ट्रिकीमाउस, एजेंट टेस्ला और विसियस पंडा जैसे वायरस शामिल हैं।

आइसीईआरटी की चेतावनी में कहा गया है कि साइबर अपराधी की तरफ से भेजे गए कोरोना वायरस ट्रैकर एप को डाउनलोड करने पर यह आपके एंड्रायड फोन और कैमरे में अपनी पहुंच बना लेता है। कोरोना मास्क सेफ्टी लेने के लिए एप डाउनलोड करने पर ट्रोजन नामक वायरस को आपके फोन में छोड़ दिया जाता है और फिर साइबर अपराधी अपने हिसाब से आपके फोन से डाटा लेने में कामयाब हो सकता है। हैकर्स अपने वायरस के प्रमोशन के लिए इन दिनों कोविड-19 को डिस्काउंट कोड के रूप में भी इस्तेमाल कर रहे हैं। आइसीईआरटी ने बताया है कि साइबर अपराधी कोविड-19 के नाम पर साइबर अपराध करने के लिए भरोसेमंद संगठन या कंपनी के नाम का इस्तेमाल कर रहे हैं ताकि उनके नाम पर किसी पेशकश को जारी कर आपको जाल में फंसा सके।

आइसीईआरटी ने इस प्रकार के साइबर अपराध से बचने के लिए सबसे पहले फिशिंग मेल, थर्ड पार्टी एप या प्रोग्राम से दूर रहने की सलाह दी है। कोरोना से जुड़े कई कैंपेन के मेल आपको भेजे जा सकते हैं जो आपको क्लिक करने पर मजबूर कर सकता है, लेकिन उनसे बचकर रहना है।

विशेषज्ञों की राय, अखबार से नहीं फैलता कोरोना

जेएनएन, नई दिल्ली

अखबार सुरक्षित है

▶ **अफवाह है अखबारों से संक्रमण के खतरे की आशंका**

▶ **संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से फैलता है वायरस**

अखबार पढ़ने से कोरोना के संक्रमण की आशंकाओं के बीच विशेषज्ञों ने एक बार फिर स्पष्ट किया है कि ऐसा नहीं होता। भारत की बड़ी हेल्थ रिसर्च इकाइयों के वैज्ञानिकों का कहना है कि हाथों में अखबार पकड़ना पूरी तरह सुरक्षित है। अब तक अखबार या ऐसे किसी कागज से कोरोना के प्रसार का कोई प्रमाण नहीं मिला है।

पिछले दिनों वाट्सएप और सोशल मीडिया पर कुछ इस तरह के मैसेज वायरल होने लगे, जिनमें अखबारों से संक्रमण फैलने की आशंका जताई गई थी। इन संदेशों के कारण आमजन में इस तरह की चिंता घर करने लगी थी। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने इन चिंताओं को सिरे से खारिज कर दिया है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आइसीएमआर) की चीफ एपिडेमियोलॉजिस्ट निवेदिता गुप्ता के मुताबिक, कोविड-19 सांसों से जुड़ा संक्रमण है और अखबार या किसी पैकेज के जरिये इसकी चपेट में आने का कोई खतरा नहीं है। नेशनल सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल के डायरेक्टर सुजीत सिंह भी इससे इत्तेफाक रखते हैं। उनका कहना है कि सेंटर इस तरह की अफवाहों को दूर करने के लिए हेल्पलाइन भी चला रहा है। वायरोलॉजिस्ट को अब तक ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला है कि यह वायरस कागज पर रह सकता है। ऐसे कई सवाल रोजाना सेंटर पर लोग पूछ रहे हैं और उनका संदेह दूर भी किया जा रहा है। मशहूर हार्ट सर्जन देवी शेट्टी ने भी ऐसी अफवाहों से बचने की सलाह दी है।

विशेषज्ञों का कहना है कि कोविड-19 एक व्यक्ति से दूसरे में फैलता है। अब तक ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला है कि यह हवा में ठहर सकता है। इसलिए किसी सतह से इसके फैसले का भी कोई खतरा नहीं है। डब्ल्यूएचओ साउथ ईस्ट एशिया की रीजनल डायरेक्टर डॉ. पूनम खेत्रपाल सिंह का कहना है कि अब तक जितने प्रमाण मिले हैं, उनमें ऐसा नहीं पाया गया है कि यह वायरस हवा से फैल सकता है। यह संक्रमित व्यक्ति के छींक के संपर्क में आने या उसके बहुत निकट होने से फैलता है। इसी कारण से डब्ल्यूएचओ हाथों को साफ रखने और दूरी बनाकर रहने को कह रहा है। एम्स के डायरेक्टर डॉ. रणदीप गुलेरिया का कहना है कि एक से दूसरी जगह जाने वाले किसी पैकेज से संक्रमण की आशंका बहुत कम है। यह वायरस स्टील या अन्य किसी धातु के मुकाबले कागज या कार्डबोर्ड पर बहुत कम समय तक रह पाता है। ऐसे में अखबारों से संक्रमण फैलने की कोई आशंका नहीं है। यूएस सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रीवेंशन ने भी अखबारों से संक्रमण फैलने की बातों को अफवाह बताया है।

शिवराज ने कहा, अखबार पूरी तरह सुरक्षित है

राज्य ब्यूरो, भोपाल : 'अखबार से कोरोना वायरस नहीं फैलता। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने भी कहा है कि अखबार से कोरोना वायरस नहीं फैलता। अखबार पढ़ना पूरी तरह सुरक्षित है। अखबार से ही हमें सूचनाएं मिलती हैं और अखबार हमारी भावनाओं के प्रकटीकरण का भी माध्यम है। आप निश्चिंत होकर अखबार पढ़ सकते हैं।' ये बातें मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने दैनिक जागरण के सहयोगी प्रकाशन 'नईदुनिया' से एक खास बातचीत में कहीं। उन्होंने यह भी कहा कि चिकित्सकों द्वारा भी यह बताया गया है कि अखबार से किसी तरह के वायरस फैलने का खतरा नहीं है। इसलिए, ऐसी कोई अफवाह समाज में न फैलाई जाए। केंद्र सरकार भी समय-समय पर इसके लिए निर्देश जारी कर रही है।

अब चौक के बजाय वाट्सएप ग्रुप के जरिये पी रहे चाय

ऐसे बिताया दिन

हरियाणा के गृह एवं स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज ने बदली दिनचर्या, सुबह छह बजे से फीडबैक लेना शुरू करते, वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये लेते हैं बैठकें, पुलिस और स्वास्थ्य अधिकारी रहते हैं संपर्क में, रात को खाते हैं थोड़ा सा खाना

अनुराग अग्रवाल, चंडीगढ़

हरियाणा के गृह और स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज कोरोना के विरुद्ध लड़ी जा रही जंग में पूरी मजबूती के साथ खड़े हैं। वह अब चौक पर साथियों के साथ के बजाय वाट्सएप ग्रुप पर चाय पीते हैं। उन्होंने अंबाला छावनी स्थित अपने निवास को ही वार रूम बना लिया है। सुबह छह बजे से मीटिंग करने और फीडबैक लेने का दौर शुरू करते हैं, जो रात करीब 11 बजे तक चलता रहता है। वह सभी बैठकें वाट्सएप ग्रुप और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये करते हैं। तमाम पुलिस एवं प्रशासनिक और स्वास्थ्य अधिकारी सीधे संपर्क में रहते हैं। विज की मुख्यमंत्री मनोहर लाल से भी नियमित बातचीत हो रही है।

मौजूदा हालात को देखते हुए विज ने अपनी दिनचर्या में मामूली बदलाव किया है। वह कई सालों से अंबाला छावनी के सदर बाजार चौक पर अपने खास मित्रों के साथ बैठकर सुबह की चाय पीते हैं और सभी अखबार पढ़ते हैं। यहां किसी फरियादी की फरियाद नहीं सुनी जाती। इसके लिए उन्होंने अपने घर पर सुबह दस बजे का समय निर्धारित कर रखा है, जो आजकल बंद है। कोरोना वायरस के प्रकोप के कारण अब विज सदर बाजार चौक पर अपनी मित्र मंडली के साथ चाय पीने नहीं जा रहे हैं, लेकिन चाय पीते जरूर हैं। इसके लिए उन्होंने वाट्सएप ग्रुप का सहारा लिया है। विज ने अपनी उस तमाम मित्र मंडली का एक वाट्सएप ग्रुप बना लिया, जो सुबह के समय चाय पर इकट्ठा होती थी, जो हर तरह के राजनीतिक-सामाजिक हालात पर मशविरा करती थी। अब ग्रुप के सभी सदस्य अपने-अपने घर में चाय तैयार करते हैं। सभी की चाय का समय औसतन आठ बजे है। जब घर में सबकी चाय तैयार हो जाती है तो वाट्सएप ग्रुप पर सूचना दे दी जाती है और फिर शुरू होता है चैटिंग के साथ चाय की चुस्कियों का दौर।

वाट्सएप जरिये केवल एक ही चाय पी जा रही है। हालांकि, कभी कभी दो भी हो जाती है। विज बिना चीनी की चाय पीते हैं। उनके हाल ही में आंख और नाक के दो माइनर ऑपरेशन हुए हैं। इसके बावजूद उनकी मुस्तैदी देखने लायक है। मीठे और तली भुनी चीजों से उन्हें परहेज है। अपने स्वास्थ्य का खास ख्याल रखने वाले विज की कोई विशेष डाइट नहीं है, लेकिन उन्हें भीगे हुए चने ज्यादा पसंद हैं। दोपहर को वह खाना नहीं खाते। बहुत मजबूरी हो तो थोड़ा बहुत सब्जी या सलाद ले लेते हैं और रात के समय मामूली आहार लेते हैं। स्वामी रामदेव के प्रशंसक अनिल विज हर समय गृह सचिव, डीजीपी और सभी जिलों के आइजी, पुलिस कमिश्नर तथा एसपी के संपर्क में रहते हैं।

अंबाला छावनी स्थित अपने निवास पर दैनिक जागरण पढ़ते हरियाणा के गृह एवं स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज। जागरण

घर से ही सरकारी फाइलें निपटा रहे

विज ने घर पर ही दफ्तर भी बना लिया है। वह अपने महकमों से जुड़ी सारी फाइलें नियमित रूप से अपने घर मंगवा रहे हैं और उनका निस्तारण कर रहे हैं। अभी कोई फाइल ऐसी पेंडिंग नहीं है, जो जरूरी है। शहरी निकाय विभाग के अधिकारियों को सफाई के विशेष निर्देश दिए गए हैं। वीडियो कांफ्रेंसिंग का पूरा सिस्टम विज के घर पर सेट कर दिया गया है। उनसे आम आदमी भी सीधे जुड़ा हुआ है।

जिंदगी का दायरा बढ़ा रहे ये छोटे-छोटे गोल घेरे

ऐसी ही सतर्कता की जरूरत है... ▸ दुकानों पर एक-एक मीटर की पंक्तिबद्ध दूरी बना दवा और जरूरत का सामान खरीद रहे लोग

जागरण विशेष

दुकानों के काउंटर के सामने नियत दूरी पर बनाए जा रहे कतारबद्ध गोल घेरे

मनीष मिश्र, प्रयागराज

आशीष केसरवानी। जागरण

बुधवार को ली गई यह तस्वीर, प्रयागराज, उप्र के कटरा बाजार इलाके की है। यहां मेडिकल स्टोर संचालक ने दवा लेने वालों की लाइन बनाने के लिए एक-एक मीटर की दूरी पर गोल घेरे बना दिए हैं, तो दवा लेने वाले भी उसी अनुरूप खड़े होकर नजीर पेश कर रहे हैं। कोरोना वायरस को परास्त करना है तो यह सावधानी बहुत जरूरी है।

कटरा बाजार स्थित आस्था मेडिकल स्टोर पर सुबह से ही लोगों का आना शुरू हो गया था। लोग जरूरत भर की दवाएं खरीदने निकले थे। दुकान संचालक लोगों से हाथ जोड़कर अनुरोध करते हैं कि दवा खरीदनी है तो कृपया लाइन से बने गोल घेरों पर खड़े हो जाएं। फिर क्या, यह सुनकर दवा खरीदने के लिए आए लोग थैंक्यू बोलते हुए कतारबद्ध घेरों पर खड़े हो जाते हैं, जो एक-एक मीटर की दूरी पर चूने से बनाए गए हैं। कोराना को भगाने के लिए मेडिकल स्टोर संचालक की यह पहल और गोल घेरे में खड़े लोगों को देखने से साफ है कि जागरूकता और सतर्कता के चलते सभी कोरोना को भगाने के लिए कमर कस

यह तस्वीर प्रयागराज के कटरा बाजार की है। यहां मेडिकल स्टोर संचालक ने दवा लेने वालों की लाइन बनाने के लिए एक-एक मीटर की दूरी पर गोल घेरा बना दिया है। दवा लेने वाले भी उसी अनुरूप खड़े होकर नजीर पेश कर रहे हैं। मुकेश कनौजिया

चुके चले हैं। अस्पतालों में भी इस दूरी का पालन किया जा रहा है। मेडिकल स्टोर की बात करें तो आमतौर पर यहां कतार नहीं लगती है। हर किसी को दवा लेने की जल्दी होती है, इसलिए मेडिकल स्टोरों के काउंटर पर धक्का-मुक्की भी होती है। लेकिन जो तस्वीरें सामने आ रही हैं, वह देश के लोगों के जज्बे और जागरूकता को दर्शाने के लिए काफी हैं। जब से कोरोना वायरस का प्रकोप शुरू हुआ है तब से सिर्फ सरकार ही नहीं विशेषज्ञ भी एक दूसरे से कम से एक मीटर की दूरी बनाकर रहने की सलाह दे रहे हैं।

कटरा के रहने वाले आशीष केसरवानी, जो इस मेडिकल स्टोर के संचालक हैं, बताते हैं कि उन्होंने सरकार की सलाह को मानते हुए यह उपाय किया है। आशीष ने मेडिकल स्टोर के सामने जमीन पर एक-एक मीटर की दूरी पर चूने से गोल घेरे बना दिए हैं। मेडिकल स्टोर पर जो लोग दवा लेने आ रहे हैं, उनसे यही बता रहे हैं कि कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए एक मीटर की दूरी में रहना जरूरी है। प्रकोप से लड़ने के लिए हमें एकजुट होना होगा। इसलिए एक-दूसरे से दूरी बनाकर रहें और गोले में खड़े हो जाएं...। लोग भी इस सलाह की अनदेखी नहीं कर रहे हैं। जागरूक लोग बिना कुछ बल्कि धन्यवाद की मुद्रा में गोल घेरे में खड़े हो जाते हैं और दवाएं लेकर घरों को लौट जाते हैं। लोग घरों में दुबक गए हैं। इमरजेंसी में या दवा और खाद्य सामग्री खरीदने को जो लोग घरों से निकल रहे हैं, वे भी हर तरह की सावधानी बरत रहे हैं। मास्क लगाकर और दूरी बनाकर चलते हैं।आशीष ने अपने मेडिकल स्टोर पर सैनिटाइजर रखा हुआ है। लोगों को दवा देने और रुपये लेने के बाद हाथों को सैनिटाइज करते हैं। उन्होंने बताया, कोरोना वायरस से बचाव के लिए हमने यह प्रयास किया है। सभी दुकानदारों को भी इस तरह का प्रयास करना चाहिए। हमारे स्टोर पर जो लोग आ रहे हैं दवा देने के बाद हम उन्हें सीधे घर जाने की सलाह देते हैं, ताकि वह भी सुरक्षित रहें, उनके स्वजन भी और देश भी।

हर कोई नजर आ रहा सतर्क

कोरोना को लेकर अब हर कोई सतर्क नजर आ रहा है। जरूरत पर लोग बाहर निकल भी रहे हैं तो पूरी सतर्कता के साथ। देश के विभिन्न हिस्सों में इसकी गवाही देती तस्वीरें बुधवार को सामने आईं। लॉकडाउन के दौरान जरूरी सेवाएं जारी हैं। जो लोग अस्पताल, दवाओं और खाद्य सामग्री की दुकानों पर पहुंच भी रहे हैं, वे बेहद सावधान हैं। एक मीटर का दायरा रख रहे हैं। दुकानदारों ने भी इसका इंतजाम किया है।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/jagran-special

कोरोना वॉरियर्स को जीवन बीमा के साथ अन्य सुविधाएं

राज्य ब्यूरो, देहरादून

▸ **उत्तराखंड के सीएम त्रिवेंद्र सिंह रावत ने विधानसभा में किया एलान**

कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के मद्देनजर उत्तराखंड में जुटे सरकारी-गैर सरकारी क्षेत्र के लोगों का सरकार जीवन बीमा कराएगी। इसके साथ ही इन कोरोना वॉरियर्स को अन्य सुविधाएं देने पर विचार किया जा रहा है। मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने बुधवार को विधानसभा में बजट सत्र के दौरान यह एलान किया। उन्होंने कोरोना वायरस की गंभीरता और इससे निपटने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों की जानकारी भी सदन को दी। कहा कि कोरोना के खिलाफ लड़ाई को हर हाल में जीतना है, ये सरकार की प्रतिबद्धता है।

ये हैं कोरोना वॉरियर्स : मुख्यमंत्री ने कहा कि कोरोना वायरस से निपटने के लिए स्वास्थ्य विभाग के चिकित्सक व अन्य कार्मिक, स्थानीय निकायों के पर्यावरण मित्र, वाहनों के चालक, पुलिसकर्मी, मीडियाकर्मी समेत सरकारी-गैर सरकारी क्षेत्र के लोग पूरी संजीदगी से जुटे हैं। इन सभी को कोरोना वॉरियर्स नाम देते हुए सबका जीवन बीमा होगा। ये चाहे सरकारी कर्मचारी हों, संविदाकर्मी हों या आउटसोर्स अथवा अन्य, सभी इससे आच्छादित होंगे। कोरोना वॉरियर्स को अधिकतम सुविधाएं देने की भी सरकार कोशिश करेगी।

टास्क फोर्स का किया गया है गठन : मुख्यमंत्री रावत ने कहा कि कोरोना वायरस को परास्त करने के मद्देनजर प्रभावी कदम उठाए हैं। मुख्य सचिव की अध्यक्षता में टास्क फोर्स का गठन किया गया है। मंत्रिमंडल की दो आपात बैठकें, इसी चुनौती से निबटने को हो चुकी हैं। संक्रमण की संभावना के मद्देनजर भारत-नेपाल सीमा की समस्त चौकियों से गुजरने वाले प्रत्येक व्यक्ति की स्क्रीनिंग की जा चुकी है। अंतरराष्ट्रीय सीमा को सील है। वर्तमान में घरेलू उड़ाने भी पूर्णतः बंद हैं।

31 दिसंबर 2019 के बाद चीन समेत अन्य प्रभावित देशों से आए 2082 लोगों की सूची प्राप्त हुई। इनमें से 628 लोग 28 दिन की निगरानी अवधि पूरी कर चुके हैं। 131 लोग राज्य से बाहर जा चुके हैं। 1323 लोग निगरानी अवधि (1244 घर में और 79 अस्पताल में) पर हैं। पर्यटकों का राज्य में अग्रिम आदेशों तक प्रवेश वर्जित किया गया है। सोशल डिस्टेंसिंग के मद्देनजर स्कूल-कॉलेज, सिनेमा हाल, मॉल आदि बंद किए जा चुके हैं।

अब दूसरों को भी मिलेंगे जेलों में बने मास्क

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : कोरोना को हराने के लिए जिस तरह देश एकजुट होकर खड़ा है, उसमें प्रदेश की जेलों में मास्क बनाने के लिए बंदियों की मेहनत दूसरों का उत्साह बढ़ाने वाली है। मथुरा जेल से 13 मार्च को मास्क बनाने का जो सिलसिला शुरू हुआ था, वह अब सूबे की 63 जेलों तक पहुंच चुका है। बंदियों ने 10 दिनों में एक लाख 24 हजार से अधिक मास्क बनाने में कामयाबी हासिल की है।

डीजी जेल आनंद कुमार ने बताया कि प्रदेश की 71 में से 63 जेलों में बंदी मास्क बना रहे हैं। बंदियों, जेल कर्मियों के अलावा कारागार में बने मास्क दूसरे विभागों को भी सप्लाई किए जा रहे हैं। इस सफलता में कई निजी संस्थाओं की भी भूमिका रही है। डीजी का कहना है कि अब जिन विभागों व संस्थाओं को मास्क की जरूरत होगी, कारागार प्रशासन उन्हें पर्याप्त संख्या में मास्क देने की स्थिति में आ गया है। कोरोना वायरस के संक्रमण की इस घड़ी में बंदियों की यह मेहनत बेहद सराहनीय है। जेलों में लगी सिलाई यूनिट लगातार मास्क बनाने में जुटी हैं। कई जेलों में अब सैनिटाइजर भी बनाए जा रहे हैं।

कारागारों में बन रहे डबल लेयर मास्क की औसत कीमत चार रुपये आ रही है। डीजी जेल का कहना है कि दूसरे विभागों व संस्थाओं को पांच रुपये प्रति मास्क की दर से सप्लाई किए जाने का निर्णय किया गया है। प्रति मास्क एक रुपये की जो बचत होगी, उसे मास्क बनाने वाले बंदियों को दिया जाएगा।

वायरस को परास्त करने में जुटे हैं हजारीबाग के डॉक्टर दंपती

विकास कुमार, हजारीबाग

जज्बा

▸ **मेडिकल कॉलेज में दिन-रात पीड़ितों की सेवा में लगे हैं, 12 से 14 घंटे की कर रहे हैं ड्यूटी**

▸ **एक की ड्यूटी खत्म होती है तो दूसरे की शुरू, घर में साथ रहकर भी नहीं हो पाती मुलाकात**

कोरोना के खिलाफ जंग में चिकित्सक और पारा मेडिकल स्टाफ के जज्बे को हर कोई सलाम कर रहा है। झारखंड में हजारीबाग मेडिकल कॉलेज के मरीज ऐसे ही चिकित्सकों की सेवा का लाभ लेकर कृतज्ञ हो रहे। यहां कई ऐसे चिकित्सक दंपती हैं, जो पीड़ितों के साथ खड़ा होकर कोरोना से सीधी लड़ाई लड़ रहे हैं। एक की ड्यूटी जब खत्म होती है तो दूसरा काम पर पहुंच जाता है। घर में रहकर भी इनकी आपस में मुलाकात नहीं हो पाती। कोई 12 घंटे की ड्यूटी कर रहा है तो कोई 14 घंटे की।

इनमें एक दंपती हैं मेडिकल कॉलेज के वरीय अधिकारी और उनकी पत्नी। महिला चिकित्सक मेडिकल कॉलेज के आरटी सेंटर में पदस्थापित हैं। यहां ये एचआइवी पीड़ित मरीजों के इलाज की जिम्मेदारी संभाल रही हैं। बताती हैं कि ऐसे मरीजों की रोग प्रतिरोधक क्षमता पहले कम होती है। ऐसे में कोरोना से ग्रसित होने की आशंका यहां और ज्यादा हो जाती है। लेकिन, अपनी जिम्मेदारी का अहसास है। सुबह 9 बजे से इनकी ड्यूटी शुरू हो जाती है। लेकिन इनके छूटने का समय निर्धारित नहीं है।

चिकित्सक पति भी कोरोना के खतरे से पूरी तरह वाकिफ हैं। कोरोना से बढ़ते संक्रमण के बाद यहां हर दिन 100 से अधिक मरीज जांच कराने पहुंच रहे हैं। इनकी पूरी जिम्मेवारी यही निभा रहे हैं। जरूरत पड़ने पर स्वयं भी मरीजों को देख रहे हैं तो पूरी टीम को प्रेरित कर रहे हैं।

बताते हैं कि पिछले कई दिनों से मुश्किल से पत्नी से बात हो पाती है। 14 से 16 घंटे की ड्यूटी हो गई है। व्यस्तता इतनी बढ़ गई है फोन तक नहीं उठा पाता। लेकिन सेवा धर्म सबसे पहले है और हम दोनों इसे निभा रहे हैं। इस दंपती की तरह ही एक सर्जन और उनकी पत्नी स्त्री रोग विशेषज्ञ भी हजारीबाग मेडिकल कॉलेज में सेवा दे रहे हैं। जनता कर्फ्यू के दिन जब शहर में पूरी तरह सन्नाटा था, महिला चिकित्सक की ड्यूटी महिला वार्ड में थी। इस दिन इन्होंने छह ऑपरेशन किए, जिसमें सभी बच्चे स्वस्थ्य थे। इनके चिकित्सक पति की ड्यूटी भी इमरजेंसी में लगी है। इस वजह से उनकी मौजूदगी हमेशा ही अस्पताल में बनी रहती है। इनका मिलना भी बहुत कम हो पाता है।

प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने से ही हारेगा कोराना वायरस

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

कोरोना को हराने के लिए जरूरी है कि हम अपना इम्यून सिस्टम (प्रतिरोधक क्षमता) मजबूत कर लें। व्रत का एक उद्देश्य अपने इम्यून सिस्टम को भी मजबूत करना होता है। एक तरफ लोगों को कोरोना से लड़ना और इससे बचना है। नवरात्र के व्रत भी शुरू हो गए हैं। ऐसे में सबसे जरूरी है कि व्रत रखने के साथ अपने इम्यून सिस्टम को और मजबूत बनाने के लिए बेहतर खान-पान रखें। दिल्ली के मशहूर बीएलके अस्पताल की डॉ. मेघा जैना बताती हैं कि भोजन में किसी भी एक खाद्य पदार्थ की मात्रा को अचानक से बढ़ाकर या उसे कम करने से कोई लाभ नहीं होगा। भोजन में सभी प्रकार की चीजों को शामिल किया जाना चाहिए। जिससे स्वस्थ रहने के साथ इम्यून सिस्टम को बेहतर रखा जा सके। सबसे जरूरी है कि जंक फूड का पूरी तरह से परहेज करें। लोग घरों में रहने के दौरान चिप्स, बिस्कुट के साथ भारी मात्रा में जंक फूड का प्रयोग कर रहे हैं, जो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बुरी तरह प्रभावित करता है।

डॉ. मेघा जैना की फाइल फोटो।

व्रत के दौरान का डाइट प्लान

सुबह-सुबह : 5 बादाम, 1 अखरोट, 5 किशमिश (रात के भीगे हुए) के साथ 1 कप चाय या कॉफी।

नाश्ता : 1 कप दूध के साथ बिना नमक का रोस्टेड मखाना। केले या सेब के साथ 1 कप ठंडा दूध या फिर एक ककड़ी या मुट्ठी भर भुनी हुई मूंगफली या नारियल पानी।

दोपहर का भोजन : उबले हुए आलू चाट या व्रत में खाए जाने वाले चावल को पुदीने के साथ या 1 कटोरी मिक्स फल 2 चम्मच दही में मिलाएं।

शाम : भुने मखाने के साथ 1 कप चाय या कॉफी।

रात का खाना : आलू की सब्जी के साथ दो कुट्टू का चीला या साबूदाना खिचड़ी।

न्यूट्रीशियन की सलाह

इनका करें सेवन

- दूध, दही और छाछ
- सभी प्रकार की सब्जियां
- रसीले फल, ड्राई फ्रूट

इनसे करें परहेज

- कटे हुए फल
- फ्रिज में रखे हुए फल
- काफी देर रखा हुआ सलाद

जम्मू-कश्मीर में उपभोक्ताओं को अब घर पर मिलेगा राशन

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

▸ **प्रशासन ने लॉकडाउन को देखते हुए उठाया बड़ा कदम**

▸ **झुग्गियों में और दिहाड़ीदारों को नि:शुल्क राशन के पैकेट बांटे गए**

कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में लॉकडाउन के दौरान आम लोगों की दिक्कतों को न्यूनतम बनाने के लिए राज्य प्रशासन ने बुधवार को बड़ा फैसला किया। अब लोगों के घरों पर ही राशन पहुंचाया जाएगा। सभी जिला उपायुक्तों को 30 मार्च से पहले इसे शुरू करने को कहा गया है। कश्मीर में 28 मार्च से लोगों के घरों में राशन की आपूर्ति शुरू हो जाएगी। गरीबों, बुजुर्गों, बेसहारा, दिव्यांगों में राशन और दवाओं को निःशुल्क उपलब्ध कराने के लिए सामाजिक संरक्षण कार्यक्रम भी चलाया गया है। कई जगहों पर झुग्गियों में रहने वालों और दिहाड़ीदारों को राशन के पैकेट भी निशुल्क बांटे गए।

प्रदेश में 28,33086 राशन कार्ड धारक परिवार और 1,23,59864 उपभोक्ता हैं। उपराज्यपाल जीसी मुर्मू की अध्यक्षता में मंगलवार शाम हुई प्रशासनिक परिषद की बैठक में राशनकार्ड धारकों को दो माह का राशन अग्रिम तौर पर प्रदान करने और झुग्गियों व बेसहारा लोगों में राशन के पैकेट बांटने का फैसला लिया गया था। अधिकारियों ने बताया कि लॉकडाउन के दौरान कई जगह दुकानों पर भीड़ लग रही है। इससे सोशल डिस्टेंसिंग और लॉकडाउन का मकसद कमजोर पड़ता है। श्रीनगर के उपायुक्त शाहिद इकबाल ने कहा कि श्रीनगर में 1.6 लाख राशनकार्ड उपभोक्ता हैं। हमने कई दस्ते तैयार किए हैं। 28 मार्च से सभी राशनकार्ड धारकों को उनके कोटे के मुताबिक अप्रैल व मई माह का राशन देंगे। यह राशन उन्हें उनके घर में पहुंचाया जाएगा। झुग्गियों में रहने वालों और दिहाड़ीदारों को भी राशन के पैकेट निःशुल्क वितरित किए जा रहे हैं।

प्रशासन ने प्रदेश में सभी पेंशन धारकों के लिए एक माह की पेंशन को तत्काल प्रभाव से जारी करने का फैसला किया है।

जुगाड़ से बने ऑटोमैटिक नल से कीजिए खुद को सैनिटाइज

जागरण संवाददाता, जमशेदपुर

कोरोना वायरस को लेकर सैनिटाइजर की मारामारी के बीच झारखंड में पूर्वी सिंहभूम जिले के युवक आयुष अग्रवाल ने जुगाड़ तंत्र से एक उपकरण बना डाला है। इसे उन्होंने अपनी दुकान में लगा दिया है। यह उपकरण लोगों को सैनिटाइज करने का काम कर रहा है। यह वेस्ट मैटेरियल से बनाया गया है। सेंसर के सहारे यह उपकरण काम करता है। इस उपकरण में डेटॉल मिश्रित पानी डाला गया है तथा नल के सामने हाथ रखते ही थोड़ा-सा पानी निकल आता है। जिससे लोग हाथ धो लेते हैं। दुकान में हाथ धोने के बाद ही ग्राहकों को सामग्री की आपूर्ति की जा रही है। आयुष के इस आइडिया की सराहना दुकान पर आने वाले ग्राहक करने लगे हैं। वर्तमान में सैनिटाइजर नहीं मिल पा रहा है। ऐसे में यह उपकरण ग्राहकों के लिए रामबाण साबित हो रहा है। आयुष ने इस उपकरण का नाम रखा है- ऑटोमेटिक नल। नल के नीचे हाथ ले जाते ही पानी चालू हो जाता है। इस उपकरण को बनाने में करीब 700 रुपये खर्च हुए है। यह खर्च सेंसर व बैटरी की खरीद पर हुई है। वर्तमान में आयुष टाटा स्टील की सहयोगी संस्था जुस्को के बिजनेस एक्सीलेंस चीफ मैनेजर गौरव आनंद के अधीन काम कर रहे हैं। आयुष ने बताया कि इस उपकरण को बनाने में सोनपापड़ी के खाली डब्बे, पुराने टूटे हुए नल और चॉकलेट के डिब्बे का इस्तेमाल किया गया है। कोरोना वायरस संक्रमण के बाद बाजार में सैनिटाइजर की कमी व कालाबाजारी को देखते हुए यह उपकरण बनाने का ख्याल आया।

दुकान पर रखे आयुष के बनाए नल से हाथ धोता एक ग्राहक। जागरण

वायरस से जंग...

राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के बीच श्रमिक मास्क बनाकर कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में अहम योगदान दे रहे हैं। झारखंड की राजधानी रांची की इस तस्वीर में श्रमिक मास्क को धूप में सुखा रही है। प्रेट्र

हमारे योद्धा...

कतरन के जरिये सांसों की सरगम सहेजने के प्रयास

दो सिलाई कारीगरों ने पेश की मानवता की मिसाल, बचे-खुचे कपड़ों से मास्क बनाकर बांट रहे नि:शुल्क, बनाने से वितरण तक रखते हैं स्वच्छता का पूरा ध्यान

अमित यादव, इटावा

स्वस्थ समाज

इंसानियत क्या होती है, सिलाई कारीगर मोहम्मद इदरीश और यूसुफ से सीखिए। कोरोना वायरस के कहर से जूझते लोगों की जिंदगी की हिफाजत के लिए मास्क बनाने और निःशुल्क बांटने की पहल इन्होंने अपने स्तर पर की है।

दुकान में बचे कपड़ों से मास्क तैयार करते हैं और फिर सैनिटाइज करने के बाद जरूरतमंदों को देते हैं। इसके जरिए वह मास्क की किल्लत से जूझ रहे लोगों की मदद में जुटे हैं। अब तक वह 380 मास्क लोगों को मुहैया करा चुके हैं और लोग उन्हें दुआएं देते नहीं थक रहे हैं।

उनका कहना है कि इसके जरिए वह सिर्फ आमजन की मदद ही नहीं कर रहे बल्कि अपनी भी हिफाजत कर रहे हैं। इदरीश और यूसुफ बताते हैं कि कपड़े तैयार करने के बाद थोड़ी बहुत कतरन बच जाती है। इसी कपड़े से मास्क तैयार कर लोगों को बांट रहे हैं। हां, मास्क बनाने के लिए इलास्टिक, धागा और सैनिटाइजर का खर्चा खुद उठा रहे हैं।

मास्क बनाते मोहम्मद यूसुफ। जागरण

मोहम्मद इदरीश। जागरण

गौर करने वाली बात यह है कि नगर में बहुत सी संस्थाएं हैं, लेकिन कुछ को छोड़कर किसी ने भी जनता की मदद के लिए हाथ नहीं बढ़ाए। दोनों सिलाई कारीगर बताते हैं कि लोग परेशान थे तो हमने उनकी मदद के लिए हाथ बढ़ाए। क्योंकि हम मास्क तैयार कर सकते थे सो करने लग गए। काम करने से पहले अपने हाथों को सैनिटाइज करते हैं। इसके बाद मास्क तैयार करने के बाद उन्हें भी सैनिटाइज करते हैं। बाजार बंद होने से पहले तक करीब 380 मास्क बांट दिए थे। अब घर से काम कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि दिन भर अपना काम करते हैं। इस बीच जब भी समय मिलता है तो मास्क बनाने में जुट जाते हैं। सैकड़ाभर मास्क इकट्ठा होने पर वितरण में लग जाते हैं। इस दौरान लोगों को दूर-दूर ही रखते हैं ताकि कोई भी संक्रमण की चपेट में न आए।

बाजार में मास्क की कमी होने पर जिला जेल में महिला बंदियों से मास्क तैयार कराए जा रहे हैं। इन्हें सस्ते दाम पर बाजार में उपलब्ध कराया जाएगा। बहरहाल, जेल प्रशासन मास्क बनाने में लगने वाले साजोसामान का प्रबंध कर रहा है। इधर, इदरीश और यूसुफ खुद इसका इंतजाम कर रहे हैं, जो बड़ी बात है।

फिर सामने आई मास्क की जरूरत... : बता दें कि मास्क को लेकर शुरू में कुछ उलझन थी, जो अब साफ हो गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन सहित अन्य मेडिकल रिसर्च संस्थाओं ने स्पष्ट किया है कि मास्क का इस्तेमाल बचाव में दो तरीके से कारगर हो सकता है। पहला, संक्रमित या संदिग्ध व्यक्ति, या वह जिसे फिलहाल पता नहीं है कि वह संक्रमित है, मास्क लगाए रखे तो औरों को संक्रमित होने से बचा सकता है। दूसरा, सामान्य व्यक्ति भी मास्क लगाए हुए हो तो श्वसन के जरिए पहुंचने वाले संक्रमण से बचने की संभावना बढ़ जाती है। तीन परतों वाला मास्क उपयोगी बताया जा रहा है। दिनभर के इस्तेमाल के बाद इसका सुरक्षित निस्तारण करना आवश्यक है।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/positive-news

छत्तीसगढ़ में भिखारियों व निराश्रितों को नि :शुल्क भोजन

नईदुनिया, रायपुर : लॉकडाउन के दौरान छत्तीसगढ़ सरकार भिखारियों और निराश्रितों को भोजन देगी। समाज कल्याण विभाग के सचिव आर प्रसन्ना ने मंगलवार को इस संबंध में आदेश जारी किया है। आदेश में सभी संभागायुक्तों, कलेक्टरों, पुलिस अधीक्षकों व समाज कल्याण विभाग के संयुक्त और उप संचालकों को भिखारियों और निराश्रित व्यक्तियों को भोजन उपलब्ध कराने को कहा गया है। इसके लिए विभिन्न सामाजिक व स्वयंसेवी संगठनों की मदद से उन्हें तैयार भोजन दिया जाएगा। डोर-टू-डोर जाकर भोजन उपलब्ध कराया जाए। इस दौरान एक ही स्थान पर पांच लोग एकत्र न हों, इसका भी ध्यान रखने के निर्देश दिए गए हैं।

दैनिक जागरण

संयम के साथ किसी भी आपदा का सामना किया जा सकता है

21 दिन की लड़ाई

प्रधानमंत्री ने अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी और साथ ही पूरे देश की जनता को संबोधित करते हुए यह उम्मीद जताई कि जिस तरह महाभारत का युद्ध 18 दिन में जीत लिया गया था उसी तरह कोरोना के खिलाफ लड़ी जा रही लड़ाई भी 21 दिन में जीत ली जाएगी। उनका यह वक्तव्य आशंकाओं से घिरे देश को संबल देने वाला है, लेकिन देशवासी एक क्षण के लिए भी इसकी अनदेखी नहीं कर सकते कि यह वह कठिन लड़ाई है जिसमें हर किसी को अपनी-अपनी तरह से योगदान देना है। सबसे बड़ा योगदान यही होगा कि लोग सामाजिक रूप से अलग-थलग रहें, सेहत-सफाई को लेकर सजगता बरतें और उन सब निर्देशों को पालन करें जो विभिन्न सरकारी एजेंसियों की ओर से दिए जा रहे हैं। ऐसा करते हुए केवल संयम और अनुशासन का ही परिचय नहीं देना होगा, बल्कि उन सबकी चिंता भी करनी होगी जो निर्धन और असहाय हैं। शासन-प्रशासन के साथ समाज के सक्षम वर्ग को लॉकडाउन के इन कठिन दिनों में सोशल डिस्टेंसिंग यानी सामाजिक अलगाव का सख्ती से पालन करते हुए वह सब कुछ करने के लिए तत्पर रहना चाहिए जिससे निर्धन तबके की मदद हो सके। ऐसा करके ही हम कोरोना वायरस के खिलाफ छेड़ी गई लड़ाई को आसानी से लड़ और जीत सकेंगे।

संकट के समय हम सब कुछ शासन-प्रशासन पर नहीं छोड़ सकते। आखिर दिन-रात एक किए हुए शासन-प्रशासन के लोग भी हम जैसे ही हैं। उन्हें जन-जन के सहयोग की जरूरत तो है, लेकिन उसी रूप में जैसा वांछित है। चूंकि लॉकडाउन का मतलब कर्फ्यू जैसे हालात का सामना करना है इसलिए यह चुनौती बढ़ गई है कि शहरों से लेकर गांवों तक आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति कैसे की जाए? इसकी जो भी रूपरेखा बनी है उस पर सही से अमल पर तत्परता दिखाई जानी चाहिए। न तो जरूरी वस्तुओं की आपूर्ति थमे और न ही उनके दाम बेलगाम होने पाएं। शासन-प्रशासन और साथ ही जरूरी वस्तुओं की आपूर्ति करने वालों में किसी तरह के भ्रम की गुंजाइश नहीं रहनी चाहिए। जहां भी कुछ कमजोरी या खामी दिखे उसे तत्काल दूर करने की व्यवस्था भी बननी चाहिए। निःसंदेह कुछ समस्याएं आएंगी ही, लेकिन उनका सामना और समाधान धैर्य के साथ करने का संकल्प कमजोर नहीं पड़ने देना चाहिए। कठिन लड़ाई संयम और साहस से ही जीती जाती है। इस लड़ाई का एक और मोर्चा कोरोना वायरस के मरीजों का उपचार करना और साथ ही संदिग्ध मरीजों का पता लगाकर उनका परीक्षण करना है। कोरोना वायरस के संदिग्ध मरीजों की जांच का सिलसिला और तेज किया जाना चाहिए, क्योंकि यही वह दूसरा उपाय है जिससे हालात काबू में किए जा सकते हैं।

सराहनीय कदम

21 दिनों के लिए पूरे देश समेत जम्मू-कश्मीर में लॉकडाउन की घोषणा के बाद उप राज्यपाल प्रशासन द्वारा सरकारी विभागों में कार्यरत दैनिक वेतनभोगियों को एक माह का वेतन जारी करने का फैसला सराहनीय है। राज्य के विभिन्न विभागों में काम करने वाले 1,05,000 दैनिक वेतनभोगियों के लिए यह वेतन राहत भरा होगा। विडंबना यह है कि पेयजल, बिजली और सिंचाई विभाग में अपनी सेवाएं दे रहे कर्मचारियों को नियमित वेतन भी नहीं मिल पा रहा है। इन विभागों में दिहाड़ी लगाकर अपना और अपने परिवार का जीवनयापन कर रहे दिहाड़ीदारों को पिछले 55 महीनों से वेतन नहीं मिला है। दैनिक वेतनभोगी का वेतन मात्र 46,00 रुपये है। लॉकडाउन की अवधि 21 दिनों की है, यह राशि ऊंट के मुंह में जीरे के समान है। यह अवधि बढ़ भी सकती है। जिसे देखते हुए दैनिक वेतनभोगियों का वर्षों से रुका वेतन शीघ्र दिए जाने की जरूरत है। पेयजल, बिजली विभागों में यह दैनिक वेतनभोगी आवश्यक सेवाओं से जुड़े हुए हैं। इनका काम घरों में पेयजल और बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित करना है। बेहतर होगा कि कर्मचारियों को एसआरओ 520 के तहत लाभ दिए जाए, जिसमें दैनिक वेतनभोगियों का वेतन बढ़ाए जाने पर पूर्ववर्ती सरकार ने दो साल पहले अपनी सहमति दी है। यह अच्छी बात है कि स्टेट डिजास्टर रेस्पांड फोर्स ने निजी श्रमिकों, जो विभिन्न कार्यों में लगे हुए हैं, को मुफ्त राशन बांटा। कोरोना वायरस को लेकर प्रशासन केंद्र के निर्देशों पर सभी कदम उठा रहा है। जम्मू नगर निगम ने भी लोगों से अपील की है कि ढाबों और होटलों के बंद होने से आवारा कुत्तों के भूखे मरने की नौबत आ सकती है। जिससे एक और महामारी से जूझना पड़ सकता। लोगों को चाहिए कि वे आवारा कुत्तों के लिए भोजन का इंतजाम करें। स्वयंसेवी और पशुपक्षी प्रेमियों को भी आगे आने की जरूरत है। शहर के बावे वाली माता मंदिर में भी सैकड़ों की तादाद में बंदरों का जमावड़ा रहता है, जो वहां आने वाले श्रद्धालुओं द्वारा दिए गए खाने की वस्तुओं पर निर्भर हैं।

कुछ वर्गों को राहत देकर प्रशासन ने एक अच्छी पहल की है। इसका दायरा बढ़ाया जाना चाहिए ताकि 21 दिनों के लॉकडाउन में कोई दिक्कत न आए

पहली जरूरत है जिंदगी बचाना

प्रो. निरंजन कुमार

निःसंदेह लॉकडाउन की आर्थिक कीमत देश को चुकानी पड़ेगी, लेकिन फिलहाल हर भारतीय की जान बचाना सबसे जरूरी है

कोरोना वायरस संकट को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21 दिनों के लिए पूरे देश के लॉकडाउन का फैसला किया है। यह न केवल भारत, बल्कि दुनिया के इतिहास में 130 करोड़ जितनी बड़ी आबादी को एक साथ लॉकडाउन किए जाने की अभूतपूर्व घटना है। यह समझना जरूरी है कि मोदी के संबोधन के मायने क्या हैं? क्या हैं इस संकट के संदेश, सवाल और चुनौतियां और क्या हैं एक जिम्मेदार नागरिक के तौर पर हमारे कर्तव्य? मोदी के संबोधन में सबसे खास बात थी कोरोना को रोकने के लिए बार-बार सोशल डिस्टेंसिंग पर जोर देना। यह इसलिए जरूरी है, क्योंकि फिलहाल कोरोना का कोई इलाज नहीं है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि इन 21 दिनों के दौरान हम इस महामारी को रोकने में सफल नहीं हुए तो यह भारत में कितना विकराल रूप ले लेगी, इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल होगा। पीएम की इस बात में किसी को संदेह नहीं होना चाहिए। भारत जैसे सघन आबादी वाले देश में जहां स्वास्थ्य संसाधनों की एक सीमा है, वहां इससे न केवल लाखों की जान को खतरा है, बल्कि आर्थिक रूप से भी देश बहुत पीछे चला जाएगा। इसे पीएम ने भी यह कहकर स्पष्ट किया कि इस लॉकडाउन की आर्थिक कीमत देश को चुकानी पड़ेगी, लेकिन फिलहाल हर भारतीय की जान बचाना सबसे जरूरी है।

अफसोस है कि सोशल मीडिया पर कुछ लोगों द्वारा उनके इस कदम की खिल्ली उड़ाई जा रही है। मजहब और अस्मितावादी राजनीति करने वाले लोग और तथाकथित बुद्धिजीवी भी इसमें शामिल हैं। एक अंग्रेजी दैनिक ने तो सोशल डिस्टेंसिंग पर इतना ज्यादा जोर देने को गैरजरूरी बताया, जबकि डब्ल्यूएचओ के साथ-साथ देश के प्रमुख स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च यानी आइसीएमआर ने लॉकडाउन और उसके माध्यम से सोशल डिस्टेंसिंग को कोरोना को रोकने का सबसे बड़ा उपाय बताया।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार कोरोना के संक्रमण चक्र को तोड़ने के लिए कम से कम 21 दिन का समय बहुत जरूरी है। आइसीएमआर ने एक गणितीय मॉडल के आधार पर बताया है कि अगर सोशल डिस्टेंसिंग और लॉकडाउन का पालन किया गया तो इससे संभावित मामलों की संख्या 60 से 89 फीसद तक कम हो जाएगी, लेकिन मोदी-विरोध में कुछ लोग सरकार के सही कदमों को भी मानने के लिए तैयार नहीं। संभवतः इसी के मद्देनजर पीएम ने देशवासियों को इस दौरान फैलने वाली अफवाहों को नजरअंदाज करने और दूसरों को जागरूक करने का आह्वान किया। पीएम मोदी की घोषणाओं के प्रति नकारात्मक लोगों की धारणा की एक मिसाल देखिए। 22 मार्च को पांच बजे ताली-थाली बजाने का पीएम ने जो आह्वान किया था उसकी कुछ प्रोफेसरों ने सोशल मीडिया पर खूब खिल्ली उड़ाई। ऐसा व्यवहार कोरोना के खिलाफ देशव्यापी जंग को कमजोर करने वाला है, क्योंकि ताली-थाली बजाने के पीछे की मंशा को पीएम मोदी ने अपने संबोधन में साफ-साफ बता दिया था। यह डॉक्टर, नर्स, सफाईकर्मी, दवा-राशन दुकानदारों, बैंककर्मियों, पुलिस-प्रशासन और मीडिया की हौसला अफजाई और आभार व्यक्त करने के लिए तो था ही, साथ ही देश की संकल्प शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए भी था। इसका एक अन्य उद्देश्य देश में एकजुटता का भाव जगाना था। संकट की इस घड़ी में एकजुटता जरूरी है।

यह सुखद रहा कि नकारात्मक लोगों को धता बताते हुए लगभग पूरे देश ने मोदी के सुर में सुर मिलते हुए कोरोना-वॉरियर्स का अभिनंदन किया। इस संकट के समय देश का एकजुट हो जाना एवं एकभाव में लयबद्ध हो जाना सकारात्मक संदेश है। यही संदेश लॉकडाउन के दौरान भी देना होगा।

अवधेश राजपूत

22 मार्च के घटनाक्रम ने फिर से साबित किया कि मोदी पर देश की जनता का अटूट विश्वास है। जहां देश को भरोसा है कि कोरोना संकट से उबारने में मोदी सक्षम नेतृत्व देंगे वहीं वैश्विक जगत भी मोदी में विश्वास जता रहा है। डब्ल्यूएचओ ने लॉकडाउन का स्वागत किया है। कुछ और देश भी इसकी जरूरत जता रहे हैं।

मोदी ने पांच दिन के अंदर अपने दूसरे संबोधन में उन लोगों को भी जवाब दिया जो उन पर सत्ता के केंद्रीकरण और दूसरों को श्रेय न देने का आरोप लगाते हैं। उन्होने स्पष्ट कहा कि कोरोना से एक-एक भारतीय के जीवन को बचाने की दिशा में भारत सरकार के साथ-साथ सभी राज्य सरकारें और स्थानीय निकाय काम कर रहे हैं। हालांकि एक बिंदु पर पीएम मोदी से थोड़ी अधिक उम्मीद थी। कोरोना का सर्वाधिक असर गरीब और रोज कमाने-खाने वालों की रोजी-रोटी पर पड़ेगा। मोदी ने यह तो कहा कि प्रत्येक नागरिक ऐसे लोगों की यथासंभव मदद करे और राज्य सरकारें भी ऐसे लोगों को निःशुल्क खाना मुहैया करवाएं, लेकिन केंद्र सरकार को भी इस दिशा में आगे आना चाहिए। उसे इसकी भी चिंता करनी होगी कि आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति में कोई बाधा न आने पाए। इस आपूर्ति को लेकर जो अंदेशा पैदा हो गया है उसे दूर किया जाना चाहिए।

केंद्र सरकार कोरोना से जुड़ी सुविधाओं-उपकरणों पर 15000 करोड़ खर्च करेगी, जबकि वह पहले से ही कई आर्थिक दबावों में घिरी है। अच्छा हो कि सभी सरकारी अधिकारी-कर्मचारी कम से कम एक दिन का वेतन प्रधानमंत्री राहत कोष में दान करें। यही अपेक्षा निजी क्षेत्र के मध्यम और उच्च वेतन भोगियों से है। इसके अतिरिक्त अन्य 'आउट ऑफ बॉक्स' उपायों पर भी विचार किया जाना चाहिए। मिसाल के तौर पर यह हम सब जानते हैं कि भारत में कोरोना संकट लाने-फैलाने के जिम्मेदार विदेशी पर्यटकों के अतिरिक्त वे भारतीय भी हैं जिनका विदेश आना-जाना होता है। इनमें से अधिकांश अत्यंत संपन्न हैं। ऐसे संपन्न कोरोना मरीजों से उनकी एक माह की आय सरकारी कोष में जमा कराई जाए। जिन्होंने अपना मर्ज छिपाया उनसे कम से कम तीन महीने की आय वसूली जाए। इस तरह से प्राप्त धन को 'जन-धन खातों' के माध्यम से गरीब दिहाड़ी मजदूरों तक पहुंचाया जा सकता है। फिक्की जैसे उद्योग-संगठन ने भी जन-धन खातों का उपयोग कर एक बारगी भुगतान का सुझाव दिया है।

बेशक कोरोना आपदा एक विकराल चुनौती है, लेकिन जैसा कि डब्ल्यूएचओ ने कहा कि भारत के पास इससे निपटने की क्षमता है। मोदी के शब्दों में जरूरत बस धैर्य, संयम और उदारता की है।

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं)

response@jagran.com

वीआइपी संस्कृति पर भी प्रहार की दरकार

ए. सूर्यप्रकाश

उन पर भी सख्ती करनी होगी जो वीआइपी रवैये के चलते भारतीयों की जिंदगी को खतरे में डाल रहे हैं

संकट के इस गहन समय विभिन्न पेशों से जुड़े लोग कोरोना वायरस के खिलाफ मुहिम छेड़ने के मामले में नए मानदंड स्थापित कर रहे हैं। अगर हमने जरा भी ढिलाई की तो यह वायरस भीषण कहर बरपा सकता है। इन लोगों और इनसे जुड़े संस्थानों पर प्रत्येक भारतीय को गर्व होना चाहिए जो मुश्किल वक्त में भी अपनी सेवाओं से मिसाल बने हुए हैं। इनमें डॉक्टर, नर्स और पैरामेडिकल स्टाफ, पुलिस और सेना, एयरपोर्ट पर तैनात अमले से लेकर केंद्र और कई संजीदा राज्य सरकारों के अलावा आइसीएमआर जैसे तमाम संस्थान और उनमें कार्यरत लोग शामिल हैं। उनमें एक नई ऊर्जा, प्रतिबद्धता, अनुशासन और आत्मविश्वास दिख रहा है। इसके पीछे बहुत हद तक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा है जो अग्रिम मोर्चे से अगुआई में लगे हैं।

इन सबके बीच बॉलीवुड गायिका कनिका कपूर जैसे प्रकरण यही दर्शाते हैं कि जहां विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय पेशेवर प्रधानमंत्री की बात को गांठ बांधकर कार्यरत हैं, वहीं राजनीतिक बिरादरी उनके संदेश को समझने में पीछे रह गई। कनिका का मामला उम्दा मिसाल है कि वीआइपी संस्कृति कैसे हमारे देश का बेड़ा गर्क कर सकती है। जब यह बात सामने आई कि बीते दिनों लखनऊ और कानपुर में कई सार्वजनिक कार्यक्रमों में शिरकत करने वाली कनिका कोरोना संक्रमित हैं तो पूरे देश में सनसनी फैल गई। ऐसा इसलिए, क्योंकि इन कार्यक्रमों में देश के कई जाने-माने लोग भी शामिल हुए थे। जब यह मामला सामने आया तो यूपी पुलिस ने उनके खिलाफ लापरवाही बरतने और दूसरों की जान जोखिम में डालने के आरोप में मामला दर्ज किया। उनका सार्वजनिक कार्यक्रमों में जाने का कृत्य अक्षम्य है। जो नेता उनकी पार्टियों में शामिल हुए, उनकी भी जवाबदेही बनती है। जब प्रधानमंत्री, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद और अन्य जानी-मानी शख्सियत एवं संस्थानों द्वारा लोगों को जलसों से दूर एवं एकांत में रहने की सलाह दी जा रही थी तब आखिर राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे और उनके सांसद बेटे दुष्यंत सिंह और उप्र के स्वास्थ्य मंत्री सहित कई अन्य मंत्रियों ने उस पार्टी में क्यों शिरकत की जिसके मेहमानों की सूची में कनिका भी रहीं जो हाल में ही लंदन से लौटी थीं? दुष्यंत सिंह ने

संसद की कार्यवाही में भी भाग लिया और वह अन्य सांसदों के अलावा राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद से भी मिले। असल में ऐसा व्यवहार उस मुगालते से आता है जो ये नेता अमूमन पाले रखते हैं।

कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाए तो भारत में अधिकांश नेता खुद को कानून से ऊपर समझते हैं। चूंकि तमाम तरह के सुरक्षा बल उनकी सलामती के लिए तैनात रहते हैं तो उन्हें यही लगता है कि वे उन्हें वायरस जैसे खतरों से भी महफूज रखेंगे। जो लोग जनता की सेहत को खतरे में डालकर इन पार्टियों में गए उनसे कड़ाई से जवाब तलब करना चाहिए। केवल सेल्फ-क्वारंटाइन ही पर्याप्त नहीं होगा। लापरवाही दिखाने वाले नेतागण अकेले नहीं हैं। इस जमात में वरिष्ठ नौकरशाह और अन्य सरकारी अधिकारी भी शामिल हैं। उनकी इन करतूतों से देश के विभिन्न हिस्सों में सार्वजनिक स्वास्थ्य के समक्ष एक नई चुनौती खड़ी हो गई है। जैसे बेंगलुरु में रेलवे की एक वरिष्ठ अधिकारी ने अपने बेटे के स्पेन से लौटने की जानकारी छिपाई। कोरोना संक्रमित बेटे के एकांतवास के लिए उन्होंने अपने रुतबे का इस्तेमाल करते रेलवे गेस्ट हाउस में व्यवस्था करा दी, लेकिन कोरोना संक्रमण की सूचना छिपाई। इससे उन्होंने तमाम अन्य लोगों की सेहत को खतरे में डाल दिया।

बंगाल की एक वरिष्ठ नौकरशाह का व्यवहार भी इतना ही शर्मनाक रहा। इंग्लैंड से लौटे उनके बेटे ने न केवल अस्पताल जाने और क्वारंटाइन संबंधी निर्देशों की अवहेलना की, बल्कि कई जगह आवाजाही की। जब उनके बेटे के कोरोना संक्रमित होने की खबर आई तो राज्य सचिवालय में अफरातफरी मच गई, क्योंकि वह गैर-जिम्मेदार अधिकारी लगातार दफ्तर आ रही थीं। इससे तमाम लोगों को वायरस की चपेट में आने की आशंका सताने लगी। लोगों की सेहत के लिए खतरा पैदा करने वाली एक अन्य महिला भी एक रेल अधिकारी के परिवार से जुड़ी निकली। कोरोना संक्रमित इस महिला ने बेंगलुरु से दिल्ली जाने के लिए फ्लाइट ली और दिल्ली से आगरा का सफर रेल के जरिये किया। इस अपराध में भागीदार उसके परिवार के प्रत्येक सदस्य के खिलाफ मामला दर्ज कर कानून के तहत कार्रवाई समय की मांग थी।

कानून व्यवस्था को बनाए रखना राज्य सरकारों का जिम्मा है। ऐसे में यह राज्यों पर है कि वह जनता को खतरे में डालने वाले ऐसे लोगों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता के अनुसार कार्रवाई करे। तमाम तरह की स्थितियों से निपटने के लिए हमारे पास कई विधायी प्रावधान हैं, लेकिन वे बमुश्किल लागू हो पाते हैं। इन्हें लागू करने में हिचका नहीं जाना चाहिए। भारतीय दंड संहिता की धारा 269 में प्रावधान है कि यदि कोई व्यक्ति गैरकानूनी या लापरवाही से कोई संक्रमण फैलाता है तो उसे छह महीने की जेल या जुर्माना या फिर दोनों लगाए जा सकते हैं। धारा 270 और कड़ाई का प्रावधान करती है जिसमें इसके लिए दो साल की कैद और जुर्माने या फिर दोनों सजा का प्रावधान है।

उत्तर प्रदेश पुलिस ने कनिका पर एफआइआर दर्ज की है। धारा 188 के तहत भी मामला दर्ज किया है जिसमें सरकारी आदेश की अवहेलना पर मानव जीवन, स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए खतरा पैदा होने पर कार्रवाई होती है। साफ है कि राज्य सरकारों को इस महामारी को रोकने के लिए उन लोगों पर भी सख्ती करनी होगी जो अपने वीआइपी रवैये के चलते लाखों भारतीयों की जिंदगी खतरे में डाल रहे हैं।

(लेखक लोकतांत्रिक विषयों के विशेषज्ञ हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

धैर्य की शक्ति

मनुष्य के तमाम गुणों में धैर्य बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। विशेषकर संकट के समय यह बहुत उपयोगी साबित होता है। जीवन में अक्सर अनपेक्षित दुश्वारियां आती हैं जिनसे मन विचलित होने लगता है। इसमें धैर्य ही एक ऐसा अस्त्र होता है जो उम्मीदों और संकल्पों को मन में दृढ़ता से संजोए रखता है। धैर्य धारण व्यक्ति में अपने लक्ष्य के प्रति संकल्प की भावना जीवित करता है जो सफलता के लिए अति आवश्यक होती हैं। संकल्पित व्यक्ति अपने लक्ष्य से कभी विचलित नही होता। वह विभिन्न दशाओं में भी अपनी मनोदशा को लक्ष्य की ओर केंद्रित किए रहता है। संकल्प का भाव व्यक्ति में आत्मविश्वास जगाए रखता है, परंतु इसका उद्गम स्त्रोत धैर्य ही माना जाता हैं। इस प्रकार धैर्य और संकल्प दोनों एक दूसरे के पूरक हैं जो मनुष्य के भीतर आत्मविश्वास जगाते हैं जिसके कारण व्यक्ति समर्पित भाव से अपनी समस्त ऊर्जा को लक्ष्य प्राप्ति की ओर लगाता है। धैर्य व्यक्ति में अति-महत्वाकांक्षा को भी कम करता है जिससे व्यक्ति पथभ्रष्ट होने से बचा रहता है।

धैर्य अंतरात्मा में विश्वास बनाए रखता है जो मन को साधने का काम करता है जिससे ध्यान केंद्रित करने में सहायता होती हैं। इसके द्वारा मन में उठती प्रबल इच्छाओं को संतुलित किया जा सकता हैं। महाज्ञानी चाणक्य ने भी कहा हैं कि 'धैर्य हो तो दरिद्रता भी शोभा देती हैं, धुले हुए हों तो फटे वस्त्र भी अच्छे लगते हैं, घटिया भोजन भी गर्म होने से स्वादिष्ट होता है और सुंदर स्वभाव के कारण कुरूपता भी शोभा देती है।' यह सर्वज्ञात है कि धैर्य धारण समाज में भी संतुलन और स्थायित्व भाव को पैदा करता है जिससे आपसी समन्वय और सहयोग में बढ़ोतरी होती है जो देश की एकता और एकरूपता में भी मददगार होती है। आज जब हमारे समक्ष कोरोना जैसी आपदा से निपटने की चुनौती है तो हम धैर्य धारण कर ही इस चुनौती से निपट सकते हैं।

शिवांशु राय

समझदारी से इस्तेमाल करें कागज

सुधीर कुमार

पेपरलेस होने से कागज पर निर्भरता खत्म होगी। पेड़ों का संरक्षण होगा और प्रदूषण में कमी आएगी

बीते दिनों ओडिशा सरकार ने आगामी वित्तीय वर्ष के लिए 'पेपरलेस बजट' पेश कर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक बड़ी नजीर पेश की। महत्वपूर्ण बात यह है कि 'पेपरलेस बजट' की इस अनोखी पहल से 57 लाख पन्ने छापने की जरूरत नहीं पड़ी। अगर बजट प्रपत्रों की छपाई हुई होती तो इतने कागज के लिए तकरीबन 700 पेड़ काटे जाते! पर्यावरण संरक्षण की इस कारगर तरकीब की देश भर में सराहना हो रही है और यह होनी भी चाहिए।

बीते कुछेक वर्षों में विभिन्न संस्थाओं और कार्यालयों में पेपरलेस होने का चलन बढ़ा है। डिजिटल क्रांति के इस युग में कागज पर निर्भरता घटाना कोई मुश्किल काम नहीं है। कागज उद्योग के पर्यावरणीय दुष्प्रभावों को देखते हुए पेपरलेस संस्कृति को आत्मसात करना पर्यावरण और समाज के लिए कई तरह से हितकारी हो सकता है। कागज उद्योगों के कच्चे माल के लिए एक तरफ जहां पेड़ों (जंगलों) की अंधाधुंध कटाई जारी है, वहीं ऐसे उद्योग हरित गृह प्रभाव और वैश्विक ऊष्मण के लिए भी बड़े पैमाने पर जिम्मेदार हैं। एक टन कागज बनाने में 24 परिपक्व पेड़ों की आवश्यकता होती है। ग्लोबल फॉरेस्ट रिसोर्स असेसमेंट के अनुसार कागज उद्योग के कच्चे माल के रूप में दुनियाभर में हर दिन 80 हजार से डेढ़ लाख पेड़ों की कटाई होती है। वहीं पेड़ों की कटाई से लेकर उसके कागज रूप में आने और फिर उसके परिवहन में ऊर्जा की बड़ी मात्रा खपत होती है।

कागज उद्योग ऊर्जा संसाधनों का पांचवां सबसे बड़ा उपभोक्ता है। एक टन कागज के उत्पादन में तकरीबन 253 गैलन पेट्रोल का उपयोग किया जाता है। इतना ही कागज का उत्पादन वायुमंडल में डेढ़ टन कार्बन डाईऑक्साइड भी छोड़ता है। कागज उद्योगों से क्लोरीन का बेतहाशा उत्सर्जन होता है, जो ओजोन परत के लिए काफी खतरनाक होता है। कागज उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थ भूमि, जलमार्गों तथा वायुमंडल को प्रदूषित करते हैं। एक टन कागज तैयार करने में 20 हजार गैलन पानी की आवश्यकता होती है। गिरते भूजल स्तर के दौर में इस पर भी विमर्श की दरकार है।

कागज हमारी जीवनशैली की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है, लेकिन इसकी प्राप्ति के लिए ऑक्सीजन के प्रमुख स्रोत को ही तबाह करना उचित नहीं है। कागज के इस्तेमाल के प्रति हमें संजीदगी दिखानी होगी। कागज के न्यून उपयोग के साथ-साथ इसके 'रियूज' और 'रिसाइक्लिंग' पर भी जोर देना होगा। मालूम हो कि एक कागज को औसतन 5 से 7 बार रिसाइकिल किया जा सकता है। एक टन पुनःचक्रित कागज 17 पेड़ों को कटने से बचा सकता है। पेपरलेस होने से कागज पर निर्भरता खत्म होगी। पेड़ों का संरक्षण होगा और प्रदूषण में कमी आएगी। सभी सरकारी व गैर-सरकारी दफ्तरों को धीरे-धीरे पेपरलेस बनाने की पहल करनी चाहिए।

(लेखक बीएचयू में अध्येता हैं)

सबक सीखने का सही वक्त

कोरोना कहर का सही सबक शीर्षक से लिखे अपने लेख में डॉ. भरत झुनझुनवाला ने कोरोना के कहर से प्रभावित भारतीय अर्थव्यवस्था को संभालने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए किए हैं। निःसंदेह इस समय संपूर्ण विश्व कोरोना के कहर से जूझ रहा है। स्वाभाविक है कि संबंधित देशों की अर्थव्यवस्था की हालत संतोषजनक नहीं है। भारत की अर्थव्यवस्था भी दिन पर दिन कमजोर होती जा रही है। तात्कालिक रूप से कुछ अपरिहार्य उपाय जरूर किए जाने चाहिए। बैंकिंग क्षेत्र में उपभोक्ताओं को हरसंभव सुविधा दी जानी चाहिए। उपभोक्ताओं के लोन आदि की ईएमआइ के लिए राहत प्रदान की जानी चाहिए जिससे उपभोक्ता बाजार में उक्त धनराशि खर्च करने के लिए प्रेरित होंगे। कोरोना वायरस से लड़ने में जिन संस्थानों ने अहम भूमिका का निर्वहन किया है, वे अधिकांश सरकारी हैं। निजी संस्थाओं ने कोई विशेष रुचि नहीं दिखायी है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भविष्य में सरकार को चाहिए कि वह सरकारी तंत्र को अत्यधिक मजबूत करे।

सर्वजीत आर्या, कन्नौज, उत्तर प्रदेश

समय से चेतना जरूरी

दुनिया के लिए खौफ का पर्याय बन चुके कोरोना वायरस की सबसे खतरनाक प्रवृत्ति है इसकी तेज चाल। आंकड़े बता रहे हैं कि कई देशों की सरकारों ने इसकी चाप को समय रहते नहीं सुना, इसमें अमेरिका, इटली से लेकर ईरान तक शामिल हैं। स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता को थोड़ी देर के लिए दरकिनार भी कर दें तो तकरीबन सभी देशों की सरकारों ने तब तक कोई सक्रियता नहीं दिखाई, जब तक इस बीमारी ने गंभीर रूप नहीं धारण कर लिया। कोरोना वायरस से जुड़े विभिन्न देशों के आंकड़े और मॉडल बता रहे हैं कि सरकार की ओर से जारी मरीजों की संख्या के मुकाबले यह बीमारी दस गुना पैठ बना चुकी होती है। अगर सरकारें समय रहते सजगता दिखातीं तो इसका फैलाव रोका जा सकता था। चीन का अनुभव बताता है कि कैसे सरकार शुरुआत में फेल हो गई, लेकिन बाद में शहरों के लॉकडाउन के जरिये इस बीमारी को नियंत्रित कर लिया। इटली, जर्मनी, ईरान और अमेरिका जैसे देशों ने आपाधापी में लॉकडाउन उस समय शुरू किया जब मामला काफी बिगड़ चुका था। अगर इटली जैसा देश इस महामारी की गंभीरता को पहले ही भांप लेता तो बीमारी इतना भयंकर रूप नहीं लेती। अब केंद्र और राज्य सरकारों को बेहतर तालमेल के साथ लॉकडाउन को देश में सख्ती से पालन कराना होगा। सरकार और देश के नागरिकों की सजगता से ही इस महामारी को रोका जा सकता है।

योगाचार्य रोहित कांबोज, दक्षिणी दिल्ली

मेलबाक्स

अपनी जिम्मेदारी को समझें

लॉकडाउन की डगर बहुत कठिन है, लेकिन इसको असंभव नहीं कहा जा सकता। फिलहाल जिस प्रकार से देश के ऊपर संकट है उस लिहाज से ये कुछ भी नहीं है। इस वायरस के फैलाव की रफ्तार को देखते हुए इतना तो सभी लोगों को करना ही पड़ेगा। जो भी इसे नहीं मानेगा वह स्वयं के साथ अपने परिवार की जान को खतरे में डालेगा। इतना ही नहीं, पूरा देश संकट में पड़ जाएगा, इसलिए अगर अपने को, अपने देश के सभी लोगों के प्राण बचाने हैं तो फिर बाहर निकलना भूलना ही पड़ेगा। यह असंभव भी नहीं है।

नीरज कुमार पाठक, नोएडा

हड़बड़ी न दिखाने में ही भलाई

प्रधानमंत्री के लॉकडाउन की घोषणा के बाद दुकानों पर लूट सी मच गई। लोगों को यह समझना चाहिए कि सरकार बार-बार सब्जी, दूध व राशन की सप्लाई के बारे में बोल रही है कि ऐसी दैनिक चीजों की सप्लाई में कोई रुकावट नहीं होगी। फिर सामानों की कमी का इतना भय क्यों? सवाल यह भी है कि यदि लोग घरों में राशन भर के रख लेंगे तो स्वतः ही सामानों के दाम में उछाल होगा और महंगाई की मार केवल उन्हें ही झेलनी पड़ेगी जिन्होंने सामान को इकट्ठा नहीं किया है। दूसरी तरफ गरीब वर्ग के लोगों के सामने बड़ी समस्या है। उनके आय के साधन ठप हैं। सरकार व समाज सेवियों को उनके खाने की व्यवस्था करनी चाहिए।

अमन माहेश्वरी, दिल्ली विवि

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

92 हजार आबादी पर एक सांसद को चुना जाता है ब्रिटेन में, लेकिन भारत में एक सांसद पर लगभग 15 लाख आबादी का भार है।

अभिषेक कुमार सिंह
संस्था एफआइएस ग्लोबल से संबद्ध

आजकल

कोरोना से कितनी बदल जाएगी दुनिया

महामारियों के इतिहास को देखने से पता चलता है कि जब कोई रोग दुनिया के बड़े फलक पर फैलता है तो वह न केवल लोगों के रहन-सहन को पूरी तरह बदल देता है, बल्कि व्यापार, राजनीति और अर्थव्यवस्थाओं के संचालन के तौर-तरीकों पर भी नाटकीय असर डालता है। कोविड-19 नामक बीमारी यानी कोरोना वायरस के संक्रमण से जो पहली चीज शर्तिया बदलने वाली है, वह सामान्य मानव व्यवहार और हमारी दिनचर्या होगी

कोरोना वायरस के प्रकोप से जूझ रही दुनिया के बारे में अगर इस वक्त कुछ अनिश्चय कायम हैं तो ऐसी कई नई संभावनाएं भी पैदा हो गई हैं, जिनसे विश्व में कई बदलावों की उम्मीद की जा रही है। अनिश्चय इसका है कि आखिर कैसे यह बीमारी काबू में आएगी और इसके कारण उलट-पुलट व्यवस्थाएं कितने दिनों तक इसी तरह अराजकता की शिकार रहेंगी। संभावनाओं की तरफ गौर करें तो प्रतीत होता है कि इस संक्रमण से संसार कई ऐसे सबक लेगा जो एक बेहतर दुनिया बनाने का भरोसा जगाएंगे और मानवता के वास्तविक प्रतिमान हमारे सामने रखेंगे।

मानव व्यवहार और दिनचर्या

महामारियों के इतिहास को देखने से पता चलता है कि जब कोई रोग दुनिया के बड़े फलक पर फैलता है तो वह न केवल लोगों के रहन-सहन को पूरी तरह बदल देता है, बल्कि व्यापार, राजनीति और अर्थव्यवस्थाओं के संचालन के तौर-तरीकों पर भी नाटकीय असर डालता है। कोविड-19 नामक बीमारी यानी कोरोना वायरस के संक्रमण से जो पहली चीज बदलने वाली है, वह सामान्य मानव व्यवहार और हमारी दिनचर्या है। आज यह एक सामान्य मानव व्यवहार है कि लोग अपने घर-परिवार, मित्रों, सहयोगियों और सहयात्रियों के साथ ऐसी दूरी न बरतें, जैसे वे दूसरे ग्रह से आए हों। यानी जरूरत पड़ने पर उनसे हाथ मिलाएं, कोई अवसर हो तो उनसे गले मिलें। सामूहिक आयोजनों में, जैसे जन्मदिवस या प्रमोशन की पार्टी, शादी-ब्याह और अन्य सार्वजनिक समारोहों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें। कोरोना के आक्रामक संक्रमण के मद्देनजर यह जरूरी हो गया है कि जहां तक संभव हो, कथित तौर पर इन सभी सामान्य दिनचर्याओं में तुरंत आवश्यक परिवर्तन लाया जाए। अब तो ऐसी सलाहें भी दी जा रही हैं कि यदि सार्वजनिक स्थानों पर आपका व्यवहार मित्रवत न होकर थोड़ा शत्रुतापूर्ण भी है तो इस संक्रमणकालीन दौर में उसे एक सामान्य व्यवहार माना जाए। यही नहीं, संक्रामक रोग से पीड़ित रोगी से दूरी बनाने के मामले में अब यदि कोई कटुतापूर्ण व्यवहार करता दिखे तो आश्चर्य नहीं होगा। कुछ घटनाओं के कारण अभी ही ऐसे हालात बन रहे हैं कि विदेश से लौटे अपने ही पड़ोसियों और विमान सेवाओं के संचालन में लगे कर्मचारियों आदि को लेकर ऐसा सख्त रुख लोग दर्शा रहे हैं, मानो उन्होंने ऐसा करके कोई गलती कर दी है। इसी तरह मुंह पर मास्क पहनने, समय-समय पर हाथ धोने की आम हिदायतें तो हालांकि पहले भी कई बार दी जा चुकी हैं, लेकिन कोरोना के बाद की दुनिया में इन सावधानियों पर लोग ज्यादा ध्यान दे सकते हैं। देखा गया है कि सामान्य खांसी-जुकाम की अनदेखी के कारण कई बार बीमारियां अराजक रूप ले लेती हैं और नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं। अब मुमकिन है कि इस मामले में कोई सुधार हो।

शहरीकरण भी निशाने पर

उद्योगीकरण के बाद की दुनिया का सबसे ज्यादा फोकस इस बात पर रहा है कि कैसे लोगों के रहन-सहन का स्तर बढ़ाया जाए और उन सुख-सुविधाओं का प्रबंध किया जाए जिनसे प्रकृति की मार से परेशान रहने वाला इंसान अपने घरों में सुविधाजनक ढंग से रह सके। इन ज्यादातर प्रबंधों ने मनुष्य को प्रकृति से दूर कर दिया। इसी से वह शहरीकरण उपजा जिसकी बदौलत आज दुनिया की आधी से ज्यादा जनसंख्या शहरों में आबाद हो गई। शहरों में निवास की अपनी शर्तें हैं। यहां रहने को जमीन की कमी होने लगी तो ऊंची इमारतों में फ्लैट संस्कृति पनप गई। इस महानगरीय संस्कृति को कोरोना के संक्रमण ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया है। देश-दुनिया से आए आंकड़ों से स्पष्ट है कि इस बीमारी के लगभग सभी मरीज शहरी हैं। वे विदेश यात्राएं करके अपने शहर लौटे थे, जिनसे दूसरे शहरियों को यह संक्रमण हो गया। लॉकडाउन करने की घोषणाओं पर अपने मूल स्थानों की ओर ट्रेनों से लौटने वालों में से ज्यादातर शहरों का कामगार तबका है जो जान बचाने के लिए गांव-देहात कूच करना चाहता है। अजीब विडंबना है कि जो शहर रोजगार, सुख-सुविधाओं और विकास का केंद्र माने जाते हैं, आज एक ही झटके में सबसे बड़ा खतरा बन गए हैं। सिर्फ चीन का वुहान शहर ही नहीं (जहां से कोरोना का संक्रमण फूटकर बाहर निकला है), बल्कि दुनिया का हर वह शहर आज समस्या की नींव बनता नजर आ रहा है कि जहां इस ग्लोबल होती दुनिया के दूसरे शहरों और देशों से लोगों का आना-जाना लगा रहता है। बहुत मुमकिन है कि विकास और ताकत के प्रतीक बन गए शहरीकरण की ऐसी दुर्गति देखकर योजनाकार भावी शहरों की कोई नई रूपरेखा प्रस्तुत करें, जिसमें सिर्फ सहूलियतों का प्रबंध नहीं किया जाएगा, बल्कि एक झटके में लोग संक्रामक बीमारियों की चपेट में न आ जाएं-इसकी व्यवस्था भी बनाई जाएगी।

बदलेगा विज्ञान के प्रति नजरिया

कोरोना की वैश्विक आपदा को लेकर एक नजरिया यह भी बना है कि चूंकि सरकारों से लेकर आम समाजों तक ने वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों की चेतावनियों पर ध्यान देना बंद कर दिया है, इसलिए प्रकृति अपने हिसाब से बदला ले रही है। यह कोई सामान्य आरोप नहीं है। बीते 50 वर्षों में ही सार्स, इबोला, स्वाइन फ्लू, बर्ड फ्लू, डेंगू, इंसेफेलाइटिस, एड्स आदि तमाम बीमारियों के प्रसार के अलावा ग्लोबल वॉर्मिंग जैसी समस्याओं ने इस धरती और इस पर बसे इंसान के जीवन की मुश्किलें बढ़ाई हैं। बाढ़, सूखे, भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति बढ़ी है और उनकी ताकत में भी इजाफा हुआ है। तापमान बढ़ने से ध्रुवों के अलावा ग्लेशियरों के पिघलने की प्रक्रिया तेज हुई है। पता चल रहा है कि कार्बन डाईऑक्साइड आदि ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में लगातार बढ़ोतरी के कारण जैसे-जैसे ग्लोबल वॉर्मिंग का असर बढ़ेगा, सूखे-बाढ़-तूफान की बारंबारता में तेजी आएगी, ग्लेशियर पिघलेंगे, समुद्र का जलस्तर उठेगा और ऊष्ण कटिबंधीय बीमारियों में इजाफा होगा। तापमान में यह उतार-चढ़ाव खेती पर भी असर डालेगा, जिससे दुनिया में 40 करोड़ लोग भुखमरी की चौखट पर पहुंच सकते हैं। विश्व बैंक के पूर्व मुख्य अर्थशास्त्री निकोलस स्टेर्न कहते हैं कि यदि ग्लोबल वॉर्मिंग से निपटने में और देरी की गई तो आगे चलकर हमें इस विलंब की 20 गुना ज्यादा कीमत देनी पड़ सकती है। बेकाबू होते हालात से साफ है कि प्रकृति के संकेतों को लेकर अब और ज्यादा हीलाहवाली नहीं की जा सकती। इस पूरे घटाटोप अंधकार में रोशनी की एक किरण इस रूप में बाकी है कि अब दुनिया के पास ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करने की टेक्नोलॉजी है, लेकिन इसके इस्तेमाल और उत्सर्जन में कटौती के समझौतों से बाहर रहने की जिद के चलते जीवन ही हर वक्त संकट में पड़ा रहता है। इन्हीं वजहों से कई बार छोटी सी बीमारी के महामारी में बदल जाने का खतरा बन जाता है। कोरोना प्रकरण से हो सकता है कि विज्ञान की इन चेतावनियों को अब अमेरिका समेत पूरा विश्व गंभीरता से ले और इन हालातों को बदलने के संकल्पों पर खरा उतरने की कोशिश करे।

स्वास्थ्य पर खर्च और तैयारियां

संक्रमण के रूप में नई आपदा से जूझ रही दुनिया का संकट इसलिए भी ज्यादा बढ़ा दिखाई देता है, क्योंकि भारत जैसे आबादीबहुल देशों में न तो पर्याप्त चिकित्सा सुविधाएं हैं और न ही सरकारें नागरिकों की सेहत पर ज्यादा खर्च करती हैं। कोरोना से पैदा मुश्किलें बढ़ीं तो पता चला कि देश के 1.3 अरब आबादी के बरक्स हमारे पास सिर्फ 40 हजार वेंटिलेटर हैं, जबकि तीन करोड़ की आबादी वाले महाशक्ति देश अमेरिका में वेंटिलेटर की संख्या एक लाख 70 हजार है। यह फर्क ही साफ करता है कि क्यों हमारे देश को 21 दिनों तक लॉकडाउन करने की जरूरत पड़ रही है। यदि लॉकडाउन का उपाय नहीं आजमाया गया और लोगों की सामान्य दिनचर्या जारी रही तो ऐसे में संक्रमित होने वाली भारी आबादी के इलाज की व्यवस्था हमारे पास नहीं है। इसके अलावा पिछले 10-12 वर्षों में इलाज की लागत 300 फीसद तक बढ़ गई है और ज्यादातर परिवार इलाज खर्च का 60 से 80 फीसद हिस्सा बीमा से बाहर अपनी आय से देते हैं और इसमें कई बार उनकी आर्थिक स्थिति बद से बदतर हो जाती है। अभी तक देश के हेल्थ सेक्टर में सरकारें कोई ज्यादा योगदान नहीं करती रही हैं। साथ ही देश के सरकारी स्वास्थ्य क्षेत्र में कम घपले नहीं हैं, यह बात एनआरएचएम जैसे घोटालों से साबित हो चुकी है। जरूरी दवाओं की कीमत पर समुचित नियंत्रण नहीं होने के कारण आम लोगों को अपनी सेहत की फिक्र करना भारी पड़ता जा रहा है। सरकारी अस्पतालों में भर्ती आम मरीजों को लिखी जाने वाली दवाओं के बारे में आंकड़ा यह है कि फिलहाल सिर्फ 9 फीसद दवाएं ही अस्पतालों से दी जाती हैं, बाकी सारी दवाएं उन्हें बाहर से मंगानी पड़ती हैं। ये सारे तथ्य और आंकड़े साबित कर रहे हैं कि अगर कोरोना मामले से हमारी सरकारों ने कोई ठोस सबक लिया और स्वास्थ्य क्षेत्र में पर्याप्त सुधार किए तो कोई संक्रमण बदहवासी का ऐसा आलम नहीं पैदा करेगा, जैसा कि आज है।

जांच की आधुनिक तकनीक

हाल के वर्षों में स्वाइन फ्लू और बर्ड फ्लू के प्रसार की खबरें आने पर हमारे ही देश में हवाई अड्डों पर यात्रियों में से संक्रमित मरीजों की पड़ताल कर उन्हें पृथक वार्ड (आइसोलेशन) में रखने की कुछेक घटनाएं सामने आ चुकी हैं, लेकिन पहली बार दुनिया ने देखा है कि थर्मल स्क्रीनिंग से शरीर का तापमान मापकर लगभग हर जगह मरीजों की पहचान की जा रही है। हालांकि यह व्यवस्था पुख्ता नहीं है, पर इससे यह उम्मीद जगी है कि आगे चलकर खासकर संक्रामक रोगों के वाहक मरीजों की जांच-पड़ताल का काम गंभीरता के साथ सभी देशों में नियमित रूटीन के तहत किया जाएगा। चीन ने इस मामले में एक उदाहरण सामने रखा है। भले ही कोरोना का वायरस इसी देश से पनपा, लेकिन चीन ने लोगों के स्मार्टफोन, चेहरों को पहचानने की आधुनिक तकनीक से लैस लाखों कैमरों, शरीर का तापमान दर्ज करने वाली मशीनों के बल पर मरीजों की त्वरित पहचान की और आज ऐसा माना जा रहा है कि वह इस बीमारी के प्रसार पर तकरीबन काबू पा लिया है। हालांकि यह काम अकेले मशीनों के बल नहीं हुआ, बल्कि इसमें वहां की जनता का सहयोग भी मिला।

चीन से आ रही खबरों के अनुसार वहां के लोगों ने लॉकडाउन के नियमों का सहजता से पालन किया और जो जांच-पड़ताल जरूरी थी, उसमें भरपूर सहयोग दिया। इसके उलट हमारे देश में अभी कई लोगों द्वारा लॉकडाउन को धता बताने की कोशिशें हो रही हैं, जिससे जनता में संक्रमण को हल्के में लेने की मानसिकता का पता चल रहा है। उम्मीद है कि इन सारे उपायों के बारे में जनता में भी जागरूकता आएगी और कोरोना जैसे खतरों से निपटने में सिस्टम का सहयोग कितना जरूरी है-यह समझ उसमें बनेगी।

खरी-खरी

कोरोना : एक लोकतांत्रिक वायरस

अतुल कनक

कोई कुछ भी कहे। कोरोना के डर से ही सही, तरक्की तो हमने की है। वरना बात-बात पर लाठियां बजाने के आदी लोग ताली या थाली बजाकर खुश नहीं हो लेते। हालत यह थी कि जिन्हें छाती पीटने की आदत हो चुकी, वे भी ताली बजाने के फायदे गिना रहे थे। कुछ लोगों को सात दशक के लोकतंत्र में नैतिकता जो बात नहीं सिखा सकी, वो कोरोना की सरसराहट ने सिखा दी।

अब खीझ मिटाने के लिए कोई थाली फोड़े या चमचा तोड़े, लेकिन कम से कम आपस में सिर फोड़ने की कोशिशों से तो हमारा ध्यान हट गया। वरना लोग तो इस बात पर भी आपस में एक-दूसरे को कूटने के लिए तैयार रहते थे कि देश में शांति क्यों नहीं है? सहिष्णुता स्थापित करने के लिए लोगों ने अपने मकानों में पत्थर और पेट्रोल बम रख रखे थे। कोरोना ने लोगों को बता दिया कि शंख फूंककर भी जीवन में उत्साह का संचार किया जा सकता है, बशर्ते फूंका जाने वाला शंख ढपोर शंख न हो। कोरोना ने जनता कर्फ्यू लगवाया तो हम अपने परिवारों के साथ बैठने को मजबूर हुए। वरना जबसे लोगों के हाथों में मोबाइल आया है, परिवारों के साथ बैठना भी मजबूरी प्रतीत होता है। आदमी परिवार के साथ है, लेकिन निपट अकेला। इस अकेलेपन को कोरोना ने नया शब्द दिया-क्वारंटाइन होना।

कई बार लोग बीमारी से उतना नहीं डरते, जितना बीमारी के साथ प्रचलन में आए शब्दों से डरते हैं। सरकार को चाहिए कि वो कुछ विशिष्ट विद्वानों को इस बात के लिए नियुक्त करे कि वो कोरोना संक्रमण से संबंधित कठिन-कठिन शब्दों को तलाशें और उन्हें प्रचारित करें। इससे लोगों के डरने की संभावना बढ़ जाएगी और वे घर में बैठ जाएंगे। आजादी के इतने वर्षों बाद भी हमारे देश का आम आदमी गरीबी, भुखमरी, बीमारी या बेराजगारी से उतना नहीं डरता, जितना अंग्रेजी और उसे बोलने वालों से डरता है।

हालांकि कोरोना संकट से लोगों को जीने की नई ऊर्जा भी मिल सकती है। बिन मांगे दफ्तर से छुट्टी, सैनिटाइजर और मास्क बेचकर पीढ़ियों के लिए धन जोड़ लेना, कवियों द्वारा कविता पे कविता लिख-लिखकर वाट्सएप पर ठेल देना आदि ऐसे सुख हैं, जो इन वर्गों को नई ऊर्जा दे रहे हैं।

ट्वीट-ट्वीट

राष्ट्र के नाम संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी एक सच्चे राष्ट्रीय नेता के रूप में बोले। गंभीर, शक्तिशाली, विनम्र और दृढ़ जिनकी बात भी लोगों को समझ आई। कम से कम पांच बार उन्होंने हाथ जोड़कर गुजारिश की। संकट के इस दौर में भारत को ऐसे ही संदेश की दरकार थी।
शेखर गुप्ता@ShekharGupta

अमेरिका इस समय अपनी अर्थव्यवस्था बचाने को तरजीह दे रहा है और भारत लोगों की जान बचाने को। भारत का रुख ज्यादा सही है, क्योंकि देर हो जाए उससे पहले कोरोना वायरस को फैलने से रोकना होगा। अर्थव्यवस्था की सेहत बाद में और बेहतर खुराक से सुधारी जा सकती है।
विक्रम चंद्रा@vikramchandra

प्रधानमंत्री मोदी जी को एक सलाह देना चाहूंगा कि लॉकडाउन लोगों को घरों पर रोककर केवल नौकरशाहों के सहारे नहीं सफल बनाया जा सकता। यह सही रणनीति नहीं होगी। इसमें स्वयंसेवकों, धार्मिक संस्थाओं, परोपकारी संगठनों और गैर-सरकारी संस्थाओं को भी मदद के लिए जोड़ा जाना चाहिए।
सुधींद्र कुलकर्णी@SudheenKulkarni

यह पहला वैदिक नव वर्ष है जो रामजन्मभूमि को वापस हासिल करने और कश्मीर के एकीकरण के बाद शुरू हुआ है। अन्य मुश्किलें समय के साथ कमजोर होती जाएंगी, लेकिन ये पड़ाव ऐतिहासिक रहे।
डॉ. डेविड फ्राउली@davidfrawleyved

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या कोरोना संकट के बाद वैश्वीकरण की प्रक्रिया कमजोर पड़ेगी?

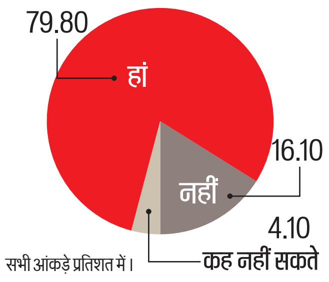

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या 21 दिनों तक पूरे देश को लॉकडाउन करने का सरकार का फैसला सही है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

फारुक अब्दुल्ला रहे घर में महिने सात,
तुम तो दिन इक्कीस हो कहां बड़ी है बात!
कहां बड़ी है बात कीजिए घर में पूजा,
सोएं चद्दर तान काम यदि ना हो दूजा।
'होम मिनिस्टर' सख्त न करिए हल्ला-गुल्ला,
जैसे हैं अब शांत मियां फारुक अब्दुल्ला!!
– ओमप्रकाश तिवारी

नवनीत शर्मा
राज्य संपादक, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश डायरी

जीत तब होती है जब ठान लिया जाता है

कांगड़ा जिले के धमेटा की महिला दर्जी हो या नूरपुर के राजू... मास्क बना रहे हैं इन दिनों। यह सुनिश्चित करने के लिए कि इस वातावरण में जब कोई प्राणवायु ले तो वह कुख्यात वायरस दूर रहे। वायरस, जिसने चीन, इटली और कई देशों के बाद अंततः भारत पर भी असर दिखाना शुरू किया है। आपातस्थिति से निपटने के लिए पूरे देश के साथ हिमाचल प्रदेश भी जूझ रहा है। पूरे देश में 21 दिन के लॉकडाउन की घोषणा से पूर्व ही हिमाचल बंद हो चुका था। इस वातावरण में बुधवार को प्रदेश के सभी सांसदों ने करीब सवा दो करोड़ रुपये कोरोना के साथ जूझने के लिए समर्पित किए। इससे पूर्व परिवहन विभाग के कर्मचारी हों या खंड विकास अधिकारी संघ हो...अन्य संस्थाएं अपना-अपना योगदान किसी न किसी रूप में दे रही हैं। दरअसल आपदाकाल में परखा जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण पक्ष होता है धीरज। धीरज के अभाव में ही अफवाहें अपना रास्ता बनाती हैं और अचानक सैनिटाइजर और मास्क जैसी वस्तुएं लुप्त होने लगती हैं। अगर कालाबाजारी करने वाले हाथ एक पक्ष का पता देते हैं तो इस सबसे निपटने के लिए उठे तमाम हाथ उस भारत की प्रकृति हैं जो आपदा में भी साहस बुन लेते हैं। नूरपुर के राजू जैसे लोग जब मास्क बना रहे थे तो जाहिर है वे उस दीये की तरह अपना कर्तव्य निभा रहे थे, जो सूरज का विकल्प नहीं होता मगर रोशनी उसका धर्म है। हिमाचल में कोरोना वायरस के तीन मामले आए हैं। अमेरिका से लौटे तिब्बती की मौत हो चुकी है, जबकि दो उपचाराधीन हैं।

हिमाचल के समाज की यह विसंगति बेहद अजीब है कि एक तरफ लोग मास्क सिल रहे हैं, पालमपुर स्थित हिमालयन जैव संपदा एवं प्रौद्योगिकी संस्थान सस्ता और गुणवत्ता वाला सैनिटाइजर बना रहे हैं, वहीं कुछ लोग जो 'पैनिक बाइंग' के शिकार हैं, यहां तक झूठ बालने में माहिर हैं कि उन्हें यात्रा वृतांत बताने में भी शर्म महसूस होती रही। कुछ लोगों ने स्वयं कहा कि वे विदेश से आए हैं, उनकी जांच की जाए। लेकिन कुछ लोग इतने अति आत्मविश्वासी निकले कि लोगों से शिकायतें मिलने पर प्रशासन को उन्हें उठाना पड़ा। एक सरकारी स्कूल की प्रधानाचार्य हैं जिन्हें यह उचित नहीं लगा कि वह जांच करवाएं। लोगों को सब पता था और जब शिकायत हुई तो आराम से समझाने पर भी वह नहीं मानीं और स्कूल जाती रहीं। अंततः प्रशासन ने जब सख्त रवैया अपनाया तो उन्हें समझ आया। सरकार जंजीर तोड़ना चाहती है, लेकिन यही लोग जंजीर को कड़ी दर कड़ी बांधना चाहते हैं। आम आदमी और खास आदमी में यही अंतर है। आम आदमी प्रधानमंत्री के कहने पर जनता कर्फ्यू का हिस्सा बनता है और शाम को थाली या घंटी भी बजाता है, वातावरण में सकारात्मकता भरता है। और खास आदमी ट्रैवल हिस्ट्री छिपाता है, सबको खतरे में डालता है, किसी के पास चाय पीता है, किसी से गले मिलता है।

इस बीच कई पक्षों से यह शिकायत आती रही है कि अस्पतालों में भी मास्क और सैनिटाइजर उपलब्ध नहीं हैं। हो तो यह भी सकता था कि जिस बजट को प्रदेश सरकार ने पारित किया, उसमें संशोधन करते हुए सभी क्षेत्रों का कुछ-कुछ बजट काटते हुए कोरोना के लिए रखा जाता। अब सांसदों और अन्य पक्षों की पहल से लड़ाई को आसान करने का प्रयास रहेगा, ऐसा दिख रहा है। हर अभूतपूर्व स्थिति अपने साथ चुनौती लाती है। वास्तव में उसी चुनौती में अवसर भी निहित होते हैं। 21 दिन घर बैठना जिन्हें मुश्किल लग रहा है, उन्हें यह अवश्य सोचना चाहिए कि जीवन से महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। ये दिन संभवतः आत्मसाक्षात्कार के दिन हैं, अपनों को और अपने आप को समझने के दिन हैं। यह जीवन के उन तमाम पक्षों को जानने-बूझने के दिन हैं जिन्हें अन्यथा जीवन की आपाधापी में छोड़ दिया जाता है।

यह समय एक-दूसरे के साथ न होकर भी एक-दूसरे के साथ होने का है। ये तीन सप्ताह अगर धैर्य के साथ सकारात्मकता का प्रचार-प्रसार करते हुए काट लिए जाएं तो यह स्वयं की ही मदद होगी। यह उन लोगों की मदद भी होगी, जो स्वयं को खतरे में डाल कर यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि बाकी लोग घरों में रह सकें। कर्फ्यू के कुछ कायदे होते हैं। और यह स्थिति स्वास्थ्य से जुड़ी है इसलिए आवश्यक है कि इसका पालन किया जाए। 18 घंटे में हिमाचल में 82 मामले उल्लंघन के आना ठीक बात नहीं है। खासतौर पर तब, जब आवश्यक वस्तुओं के लिए समय निर्धारित है। यह और बात है कि वहां भी लोगों को उचित दूरी में रहना चाहिए। आवश्यक सेवाओं से जुड़े लोगों की दिक्कतों का ध्यान रखना अधिकारियों का काम है। क्योंकि यह जंग नहीं है, अपितु

स्वास्थ्य आपातकाल है, इसलिए हिमाचल सरकार को खासतौर पर ध्यान देना होगा कि मास्क और सैनिटाइजर वही लोग बनाएं जो इसके लिए अधिकृत हैं। उन कड़ियों का पता भी लगाएं जो निर्माण की लागत 25 रुपये और बेचने की कीमत 160 या 200 रुपये बताती हैं।

यह समय हौसले का समय है। ठानने का समय है, क्योंकि हमें जीतना है। शकील आजमी ने यूं ही नहीं कहा : 'हार हो जाती है जब मान लिया जाता है, जीत तब होती है जब ठान लिया जाता है।।'

मंथन

रिजवान अंसारी
स्वतंत्र टिप्पणीकार

आबादी और प्रतिनिधित्व की लड़ाई

निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन का मकसद राज्यों को उचित प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिए प्रतिनिधियों की उचित संख्या को तय करना है, लेकिन विडंबना है कि संवैधानिक प्रावधान होने के बावजूद इस मामले में हम एक उचित मापदंड अभी तक तैयार नहीं कर सके हैं

वर्ष 2002 के परिसीमन के बाद केंद्र सरकार एक बार फिर कुछ राज्यों के परिसीमन की तैयारी में है। अभी पिछले दिनों ही कानून मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर और चार पूर्वोत्तर राज्यों के लिए परिसीमन आयोग के गठन की अधिसूचना जारी की। यह आयोग केंद्र शासित क्षेत्र जम्मू-कश्मीर और चार पूर्वोत्तर राज्यों-असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और नगालैंड के लोकसभा एवं विधानसभा क्षेत्रों के लिए परिसीमन रिपोर्ट तैयार करेगा। सुप्रीम कोर्ट की पूर्व न्यायाधीश रंजना प्रकाश देसाई को इस आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

गौरतलब है कि भारत का संविधान परिसीमन कानून बना कर क्षेत्रों की सीमा में परिवर्तन की बात करता है और इस परिवर्तन में भारत की जनसंख्या को आधार बनाया गया है। जनसंख्या का यह आधार कई वजहों से केंद्र में राज्यों के प्रतिनिधित्व को प्रभावित करता है। यही कारण है कि जनसंख्या नियंत्रण को लेकर दक्षिण और उत्तर भारत के राज्यों के बीच हमेशा ही रस्साकशी वाली स्थिति रहती है। दूसरी ओर, चुनावी क्षेत्रों के परिसीमन के पीछे सियासी वजहों को भी जानने की जरूरत है कि कैसे क्षेत्रों का परिसीमन चुनावी समीकरणों को बदल कर चुनावों की बाजी पलट देता है, लेकिन यहां पर सबसे ज्यादा उन वजहों को जानने की जरूरत है जिसके कारण लोकसभा में सीटों की संख्या जस की तस बनी हुई है।

दरअसल संविधान के अनुच्छेद-82 में लोकसभा और राज्य विधानसभाओं की सीटों के पुनः समायोजन की चर्चा है। हालांकि परिसीमन आयोग अनुच्छेद-81, 170, 330 और 332 के प्रावधानों के तहत भी सीटों का पुनः समायोजन करता है। न तो इस आयोग के आदेशों को किसी भी अदालत के समक्ष चुनौती नहीं दी जा सकती है और न ही इसकी रिपोर्ट में संसद और विधानमंडल कोई संशोधन कर सकते हैं। लिहाजा परिसीमन आयोग एक शक्तिशाली निकाय है।

परिसीमन कानून के मुताबिक हर जनगणना के बाद एक परिसीमन आयोग का गठन होना है। आजादी के बाद लगातार तीन बार ऐसा हुआ भी। पहला आयोग परिसीमन आयोग अधिनियम, 1952 के तहत 1952 में गठित हुआ। दूसरा परिसीमन आयोग अधिनियम, 1962 के तहत 1963 में और तीसरा परिसीमन अधिनियम, 1972 के तहत 1973 में गठित हुआ। इसके बाद आयोग के गठन पर रोक लग गई। लिहाजा सीटों की संख्या में कोई तब्दीली नहीं लाई जा सकी। इसके पीछे वजह यह है कि लोकसभा और विधानसभा में सीटों के निर्धारण में आबादी को आधार बनाया गया है। प्रावधान है कि किसी राज्य को आवंटित लोकसभा सीटों की संख्या इतनी हो कि इस संख्या और राज्य की जनसंख्या के बीच का अनुपात सभी राज्यों के लिए एकसमान हो, लेकिन 1970 के दशक में परिवार नियोजन में व्यापक विसंगतियां देखी गई थीं और परिवार नियोजन लागू कर प्रजनन दर को नीचे लाने के लिए उच्च प्रजनन दर वाले राज्यों को समय देने की योजना बनाई गई। इसी के मद्देनजर इंदिरा गांधी के कार्यकाल के दौरान 42वां संविधान (संशोधन) अधिनियम, 1976 के द्वारा परिसीमन को वर्ष 2001 तक के लिए स्थगित कर दिया गया। हालांकि सीटों की संख्या में परिवर्तन पर लगी रोक 2001 की जनगणना के बाद हट जानी चाहिए थी, लेकिन 2001 में 84वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा इसे फिर से वर्ष 2026 तक के लिए स्थगित कर दिया गया। तर्क था कि वर्ष 2026 तक पूरे देश में एकसमान जनसंख्या वृद्धि दर हासिल कर ली जाएगी। इस प्रकार अंतिम परिसीमन 2001 की जनगणना पर आधारित था और इसने केवल पहले से मौजूद लोकसभा और विधानसभा सीटों की सीमाओं को पुनः समायोजित किया तथा आरक्षित सीटों की संख्या को पुनः निर्धारित किया।

इस पूरी कवायद के पीछे जनसंख्या नियंत्रण में बहुत कम रुचि रखने वाले राज्यों को संसद में अवांछित रूप से ज्यादा सीटें हासिल करने से रोकना मकसद था, क्योंकि ऐसे में उन राज्यों में सीटों की संख्या को लेकर असुरक्षा की भावना आ सकती थी जो परिवार नियोजन को बढ़ावा दे रहे हैं। यही कारण है कि जनसंख्या के आधार पर सीटों के आवंटन से भारत के दक्षिणी राज्यों को आपत्ति है। मान लेते हैं कि 2031 की जनगणना के बाद भी अगर सीटों का आवंटन किया जाता है तब बड़ा सवाल यही रहेगा कि बंटवारे का आधार क्या होगा। देखा जाए तो 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 121 करोड़ है जिसमें 91 करोड़ पंजीकृत मतदाता हैं और इसे प्रदर्शित करने के लिए वर्ष 1971 की जनसंख्या को आधार माना गया है जो कि दुरुस्त नहीं है।

ऐसे में वे राज्य जो जनसंख्या नियंत्रण में सहयोग कर रहे हैं, उन्हें राजनीतिक रूप से नुकसान उठाना पड़े तो यह उचित नहीं होगा। जाहिर है ऐसे उपाय खोजने की जरूरत है जिनसे जनसंख्या नियंत्रण पर मुखर रहने वाले राज्यों को कोई नुकसान न उठाना पड़े। नीति-नियंताओं को इस संदर्भ में संजीदगी से विचार करने की जरूरत है और अगर ऐसा नहीं हुआ तो वर्ष 2001 की तरह ही 2026 में भी 1971 को आधार वर्ष मानने वाली सीमा का विस्तार करना होगा और यह किसी भी तरह समस्या का समाधान नहीं है।

समीर अग्रवाल वालमार्ट के नए सीईओ

नई दिल्ली, (जाब्यू) : वालमार्ट इंडिया ने समीर अग्रवाल को अपना नया सीईओ बनाने का एलान किया है। वह कृष अय्यर की जगह लेंगे जो पूर्णकालिक प्रबंधन से सेवानिवृत्त हो रहे हैं लेकिन आगे बेस्ट प्राइस, वालमार्ट इंडिया के सलाहकार के तौर पर काम करेंगे। अग्रवाल पहली अप्रैल से अपना कार्यभार संभालेंगे और सीधे एशिया संचालन के प्रमुख व ग्लोबल सोर्स के रीजनल हेड को रिपोर्ट करेंगे। अग्रवाल को जनवरी, 2020 में डिप्टी सीईओ बनाया गया था।

माइक्रोसॉफ्ट वित्तीय तौर पर मजबूत कंपनी है। हम कोरोना संकट से निखरकर निकलेंगे। असल सवाल यह है कि यूरोप और अन्य प्रभावित देशों से मांग का क्या हाल रहता है।

— सत्य नडेला, सीईओ, माइक्रोसॉफ्ट

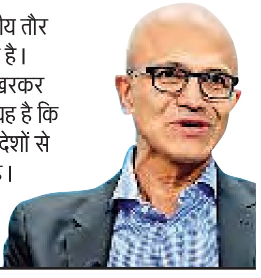

खरीफ की खेती से छंटे संकट के बादल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना वायरस के कहर और लॉकडाउन के बाद खरीफ सीजन की खेती पर संकट के जो बादल मंडरा रहे थे, वे अब छंटते दिख रहे हैं। देशव्यापी लॉकडाउन की वजह से खरीफ सीजन के बीजों की आवाजाही पर लगी रोक अब हट जाएगी। खेतों में तैयार बीजों के प्रोसेसिंग सेंटर तक आने की मुश्किल, प्लांट का संचालन और फिर खुदरा दुकानों तक पहुंचाने के कठिन काम को गृह मंत्रालय ने आसान कर दिया है। मंत्रालय ने बीज उद्योग की वह मांग मान ली है, जिसके तहत सरकार से इसे उच्च प्राथमिकता देते हुए आवश्यक वस्तुओं की श्रेणी में शामिल करने का आग्रह किया गया था।

देश के उद्योग संगठनों की ओर से बीज उद्योग की चिंताओं से सरकार को अवगत कराते हुए राहत की गुहार लगाई गई थी। उद्योग जगत का कहना था कि अगर समय रहते लॉकडाउन के नियमों में ढील नहीं दी गई तो आगामी खरीफ सीजन वाली फसलों की हालत खराब होनी तय है। हालांकि केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को कई तरह के राहत पैकेज की घोषणा की थी, लेकिन देश के बीज उद्योग की गंभीर मुश्किलों पर कुछ नहीं कहा था।

दरअसल, खरीफ सीजन में धान, दलहन और तिलहन जैसी प्रमुख फसलों की खेती होती है। इसके लिए अप्रैल के पहले सप्ताह से विभिन्न राज्यों में प्रसंस्कृत बीजों की सप्लाई शुरू कर दी जाती है। लेकिन इसके पहले बीजों को प्रोसेसिंग के लिए प्लांट में लाना पड़ता है। बीज उद्योग से जुड़े राकेश बताते हैं कि लॉकडाउन की वजह से फिलहाल यह सब ठप हो गया था। इसके चलते न प्रोसेसिंग प्लांट चल पा रहे थे और न ही बीजों की ढुलाई हो रही थी, क्योंकि राज्यों की सीमाएं सील कर दी गई हैं। नेशनल सीड इंडस्ट्री एसोसिएशन ऑफ इंडिया के कार्यकारी निदेशक आरके त्रिवेदी ने बताया कि केंद्र सरकार से सीड इंडस्ट्री और सीड प्रोसेसिंग इकाइयों को आवश्यक सेवाओं में शुमार करने लेने का फैसला कृषि क्षेत्र में नई जान फूंकने वाला है।

शेयर बाजारों के लिए 10 वर्षों का सबसे अच्छा दिन

राहत ▶ सेंसेक्स में 1862, निफ्टी में 517 अंकों की बढ़त

वैश्विक बाजारों में तेजी और आर्थिक राहत पैकेज की उम्मीद ने बढ़ाया भरोसा

मुंबई, प्रेट्र : दुनियाभर में कोरोना के कहर के चलते बड़ी गिरावटों का सामना करने वाले घरेलू शेयर बाजारों में रौनक लौटती दिख रही है। बुधवार को सेंसेक्स और निफ्टी ने 10 साल का सबसे बड़ा उछाल दर्ज किया। मंगलवार को भी घरेलू शेयर बाजार बढ़त में रहे थे। इस तेजी में जहां वैश्विक बाजारों में बढ़त की भूमिका रही, वहीं सरकार की ओर से आर्थिक पैकेज की उम्मीद ने भी निवेशकों का भरोसा बढ़ाया।

बुधवार को बीएसई का सेंसेक्स 1,861.75 अंक बढ़कर 28,535.78 अंक पर बंद हुआ। मंगलवार को सेंसेक्स में 692.79 अंकों की बढ़त दर्ज की गई थी। वहीं एनएसई का निफ्टी 516.80 अंक उछलकर 8,317.85 पर बंद हुआ। विशेषज्ञों का कहना है कि सरकार की ओर से 21 दिन के लॉकडाउन के एलान से निवेशकों का भरोसा मजबूत हुआ है। कोरोना की महामारी से लड़ने की दिशा में सरकार की दृढ़ता ने हालात जल्द सामान्य हो जाने की उम्मीद बढ़ाई है। 15 फीसद की तेजी के साथ रिलायंस इंडस्ट्रीज सेंसेक्स की टॉप गेनर रही। कोटक बैंक, मारुति, एचडीएफसी, टाइटन, एलएंडटी और एक्सिस बैंक के शेयर बढ़त में रहे। दूसरी ओर, इंडसइंड बैंक, ओएनजीसी, आइटीसी और बजाज ऑटो के शेयरों में गिरावट रही। सेक्टर के हिसाब से बीएसई में सभी सेक्टर बढ़त में रहे। मिडकैप और स्मालकैप में भी तेजी दर्ज की गई। अमेरिका में दो लाख करोड़ डॉलर के राहत पैकेज पर सहमति से वैश्विक बाजारों में तेजी आई। चीन, हांगकांग, जापान और दक्षिण कोरिया के बाजारों में आठ फीसद तक की बढ़त दर्ज की गई। अमेरिका और यूरोपीय बाजारों ने भी शुरुआती कारोबार में तेजी दर्ज की।

निवेशकों ने कमाए 6.63 लाख करोड़ : लगातार दो दिन की तेजी से निवेशकों ने 6,63,240.78 लाख करोड़ रुपये कमाए हैं। सबसे ज्यादा फायदे में रिलायंस इंडस्ट्रीज रही। कंपनी का बाजार पूंजीकरण 87,576.98 करोड़ रुपये बढ़कर 6,85,433.30 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। इस बढ़त के साथ रिलायंस एक बार फिर सबसे ज्यादा बाजार पूंजीकरण वाली कंपनी बन गई है।

सेबी ने कहा, बाजार से जुड़े लोगों को पहुंचने दें ऑफिस : बाजार नियामक सेबी ने सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से कहा है कि स्टॉक ब्रोकरों और बाजार की अन्य गतिविधियों से संबंधित लोगों को ऑफिस तक पहुंचने की अनुमति दी जाए। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने भी लॉकडाउन के अपने निर्देश में कैपिटल एवं डेट मार्केट को इससे छूट दी है। बावजूद इसके कई जगहों पर ऐसे कर्मचारियों को रास्ते में रोकने के मामले सामने आए हैं। सेबी ने राज्यों से सुनिश्चित करने को कहा है कि ऐसे सभी कर्मचारी अपने काम पर पहुंच सकें।

ई-कॉमर्स कंपनियों को सरकार देगी मदद

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना संकट की वजह से जारी लॉकडाउन के दौरान ई-कॉमर्स कंपनियों को माल की सप्लाई में होने वाली दिक्कतों को दूर करने में सरकार मदद देगी। फ्लिपकार्ट, अमेजन और ग्रोफर्स जैसी कंपनियों का कहना है कि लॉकडाउन के दौरान माल की सप्लाई में उनके डिलिवरी कर्मचारियों को प्रशासन की तरफ से रोका जा रहा है। फ्लिपकार्ट ने तो 25 मार्च से ग्रॉसरी से लेकर छोटे-बड़े सभी आइटम के आर्डर लेने से मना कर दिया है। वालमार्ट की तरफ से प्राप्त जानकारी के मुताबिक उनके पास किराना दुकानदारों को सप्लाई देने के लिए पर्याप्त सामान है, लेकिन लॉकडाउन की वजह से किराना दुकानदार उनके स्टोर में सामान लेने नहीं आ पा रहे हैं। किराना आइटम की सप्लाई देने वाली रिटेल चेन ग्रोफर्स भी फिलहाल ऑर्डर नहीं ले रही है।

इस प्रकार की शिकायतें मिलने पर बुधवार को केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने बताया कि आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई में होने वाली किसी भी प्रकार की दिक्कत को हर हाल में दूर किया जाएगा। बुधवार को ही दिल्ली पुलिस के साथ ई-कॉमर्स कंपनियों की बैठक हुई जिसमें उनके डिलिवरी ब्वॉयज के लिए पास वगैरह की व्यवस्था करने पर सहमति बनी है। अमेजन आवश्यक वस्तुओं को छोड़ सप्लाई नहीं दे रही है।

लॉकडाउन तक टोल-मुक्त हुए देशभर के नेशनल हाईवे

संजय सिंह, नई दिल्ली

- संपूर्ण लॉकडाउन से पहले ही टोल संग्रह घटकर रह गया था 25 फीसद
- चालू वित्त वर्ष के लिए 23 हजार करोड़ रुपये का है लक्ष्य

कोरोना लॉकडाउन के कारण राजमार्गों पर सीमित यातायात तथा टोलकर्मियों के लिए जोखिम को देखते हुए केंद्र सरकार ने बुधवार रात 12 बजे से राष्ट्रीय राजमार्गों (एनएच) पर टोल संग्रह बंद कर दिया है। इस संबंध में कभी भी घोषणा की जा सकती है। इसके तहत फास्टैग सिस्टम को भी इस अवधि के दौरान निष्क्रिय कर दिया जाएगा।

कोरोना लॉकडाउन के कारण पिछले तीन दिनों में राष्ट्रीय राजमार्गों पर यातायात लगभग ठप पड़ गया है और केवल जरूरी वस्तुओं की सप्लाई करने वाले ट्रक, अनिवार्य सेवाओं से संबंधित सरकारी वाहन तथा एंबुलेंस ही दिखे हैं। पुलिस इक्का-दुक्का प्राइवेट कारों को ही वाजिब कारण बताने पर हाईवे पर जाने की अनुमति दे रही है। ऐसे में ट्रैफिक बमुश्किल 20 फीसद ट्रैफिक रह गया है तथा दिन-ब-दिन और घट रहा है। चूंकि ज्यादातर कॉमर्शियल वाहन ही अब मूव कर रहे हैं, इसलिए एनएचएआइ के टोल संग्रह में 75 फीसद की गिरावट आई है। आने वाले दिनों में गिरावट बढ़ने की संभावना है।

सूत्रों के अनुसार 22 मार्च को लॉकडाउन से पहले एनएचएआइ के टोल प्लाजा पर रोजाना तकरीबन 85 करोड़ रुपये का टोल संग्रह होता था।वहीं, रविवार को केवल 33 करोड़ रुपये, सोमवार को 30 करोड़ तथा मंगलवार को देशव्यापी लॉकडाउन के पहले करीब 25 करोड़ का टोल एकत्र हुआ। अब संपूर्ण लॉकडाउन है। ऐसे में यह काफी नीचे जा सकता है। इन हालात में एनएचएआइ के 500 से ज्यादा टोल प्लाजा पर सन्नाटे जैसी स्थिति है। एनएचएआइ के एक अधिकारी के अनुसार ज्यादातर लेन बंद कर दी गई थीं और दोनो ओर एक या दो लेन से काम चलाया जा रहा था। ऐसे में टोल कर्मचारियों की जरूरत सीमित रह गई थी। जो कर्मी ड्यूटी कर रहे थे, उन्हें भी संक्रमण का खतरा था और उनके काम पर आने-जाने की दिक्कत भी थी। ऐसे में एनएचएआइ प्रशासन ने सरकार को सलाह दी कि टोल प्लाजा पर कमाई से ज्यादा खर्च की स्थिति आने से पहले ही टोल संग्रह स्थगित कर लिया जाना चाहिए। सरकार ने यह सलाह मान ली।

कोरोना में असरदार क्लोरोक्वीन के निर्यात पर प्रतिबंध

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- विदेश मंत्रालय की सिफारिश पर मिलेगी इजाजत, एडवांस पेमेंट ले चुके निर्यातक प्रतिबंध से बाहर

सरकार ने कोरोना से लड़ने में अब तक सबसे असरदार दिख रही दवा हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्वीन के निर्यात पर बुधवार को तत्काल प्रभाव से प्रतिबंध लगा दिया। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आइसीएमआर) ने कोरोना के उपचार में क्लोरोक्वीन के इस्तेमाल की इजाजत दी है। 150 से अधिक देशों में कोरोना के फैलने की वजह से इस दवा की इन दिनों काफी मांग है। देश में इस दवा की कमी की आशंका को देखते हुए बुधवार को विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) की तरफ से दवा और इसके फॉर्मुलेशन दोनों पर प्रतिबंध लगाने का निर्देश जारी किया गया।

सरकार ने यह भी कहा है कि अगर विदेश मंत्रालय किसी शिपमेंट की सिफारिश करे, तो निर्यात को इजाजत दी जाएगी। उन मामलों में भी निर्यात की छूट रहेगी, जिनमें विक्रेताओं ने शिपमेंट का भुगतान एडवांस में ले लिया है। पिछले दिनों अमेरिका में कोरोना से लड़ने में हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्वीन के इस्तेमाल की अनुशंसा की गई थी। दवा निर्माताओं के मुताबिक 20 दिन पहले तक हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्वीन के कच्चे माल की कीमत 6,000-7,000 रुपये प्रति किलोग्राम थी जो बढ़कर 18,000 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर पहुंच गई। कोरोना से लड़ने में इस्तेमाल होने वाले मास्क, सैनिटाइजर, वेंटिलेटर जैसे जरूरी सामान के निर्यात पर सरकार पहले ही प्रतिबंध लगा चुकी है।

ग्रामीण बैंकों के लिए 670 करोड़ का पैकेज

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को केंद्र सरकार की तरफ से 670 करोड़ रुपये देने का फैसला किया गया है। इस राशि से देश के तमाम क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) को पूंजी आधार बढ़ाने में मदद मिलेगी। बुधवार को कैबिनेट बैठक में यह फैसला किया गया है। यह राशि उन्हीं ग्रामीण बैंकों को मिलेगी जो खराब आर्थिक स्थिति की वजह से आरबीआइ की तरफ से तय नौ फीसद सीएआर की सीमा बरकरार नहीं रख पा रहे हैं। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को कुल 1,370 करोड़ रुपये की राशि दी जाएगी। इसमें से 50 फीसद राशि केंद्र सरकार देगी। शेष 35 फीसद इन बैंकों के प्रमोटर और 15 फीसद राशि राज्य सरकार देगी। आरआरबी के पूंजी आधार को मजबूत करने के लिए कुछ वर्ष पहले ही यह फॉर्मूला तय हुआ था कि केंद्र, प्रवर्तक बैंक व राज्यों की इक्विटी के आधार पर आरआरबी को पूंजी दी जाएगी।

लॉकडाउन में बिजली की किल्लत नहीं

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- कोयले का उत्पादन लॉकडाउन से नहीं होगा प्रभावित

कोरोना से लड़ाई के दौरान बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित रखने के लिए देशभर में लॉकडाउन के दौरान भी कोयले का उत्पादन जारी रहेगा। सभी कोयला उत्पादक राज्य की खदानों को कोयला सचिव की तरफ से निर्देश जारी किए गए हैं। यह नियम निजी कोयला खदानों पर भी लागू होगा। कोयला उत्पादन आवश्यक वस्तुओं की श्रेणी में आता है, जिसे देखते हुए यह निर्देश जारी किया गया है। कोरोना संकट की वजह से सरकार की तरफ से आगामी 14 अप्रैल तक लॉकडाउन कर दिया गया है और हालात काबू में नहीं आने पर आगे भी इस प्रकार की स्थिति की संभावना बन सकती है। ऐसे में, बिजली की कटौती से कोरोना के फैलने का डर पैदा हो सकता है और अस्पतालों में इलाज भी प्रभावित हो सकता है। गर्मी के बढ़ने के साथ ही बिजली की मांग बढ़ जाएगी और कोयले की कमी से बिजली उत्पादन में कमी आ सकती है, क्योंकि कोरोना के चलते फिलहाल कोयले का आयात अगले दो-तीन माह तक आसान नहीं दिख रहा है। वित्त वर्ष 2018-19 में बिजली उत्पादन के लिए भारत में 23.52 करोड़ टन कोयले का आयात किया गया जबकि वित्त वर्ष 2017-18 में यह आयात 20.87 करोड़ टन था। भारत ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया जैसे देशों से कोयले का आयात करता है।

कोयला मंत्रालय के मुताबिक लॉकडाउन में भी कोल इंडिया व अन्य खदान कोयले के उत्पादन में जी-जान से लगे हैं। कोल इंडिया ने 20 मार्च 31.7 लाख टन कोयले का रिकॉर्ड उत्पादन किया। मंत्रालय के मुताबिक अभी बिजली उत्पादक कंपनियों के पास औसतन 23 दिनों का कोयला स्टॉक है। चालू वित्त वर्ष में कोल इंडिया को 66 करोड़ टन कोयला उत्पादन का लक्ष्य दिया गया है। कोयले के कुल उत्पादन में कोल इंडिया की हिस्सेदारी 84 फीसद है। हालांकि विभिन्न राज्यों से मंत्रालय को यह शिकायत मिल रही है कि खदान में काम पर जाने वाले श्रमिकों को स्थानीय प्रशासन द्वारा रोका जा रहा है जिससे कोयले के उत्पादन पर असर पड़ सकता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि कोरोना से लड़ाई के दौरान आवश्यक मैन्यूफैक्चरिंग को छोड़ सभी प्रकार के उत्पादन कार्यों पर रोक लग गया है जिससे बिजली की मांग अगले महीने पिछले साल के अप्रैल के मुकाबले कम रह सकती है। केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण (सीईए) की रिपोर्ट के मुताबिक फरवरी माह में बिजली की व्यस्ततम घंटों में मांग 1,77,158 मेगावाट की थी।

उप्र के पीएफ घोटाले में सीबीआइ ने की प्रमुख आरोपितों से पूछताछ

नई दिल्ली, प्रेट्र : उत्तर प्रदेश के कर्मचारी भविष्य निधि (पीएफ) घोटाले से जुड़े मामले में सीबीआइ ने दो प्रमुख आरोपितों से पूछताछ की है। आरोप है कि इन दोनों अधिकारियों ने कर्मियों के भविष्य निधि का धन दीवान हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड (डीएचएफएल) में नियम विरुद्ध तरीके से लगाया, जो डूब गया। डीएचएफएल से जुड़ा यह घोटाला 30 हजार करोड़ रुपये का है जिसमें उप्र राज्य विद्युत निगम के कर्मचारियों की भविष्य निधि की 2,267 करोड़ रुपये की धनराशि शामिल है।

सीबीआइ ने उप्र विद्युत निगम लिमिटेड के निदेशक (वित्त) रहे सुधांशु द्विवेदी और राज्य पावर सेक्टर एम्प्लाईज ट्रस्ट के पूर्व सचिव प्रवीण कुमार गुप्ता से पूछताछ की है। इन दोनों को पुलिस ने नवंबर 2019 में गिरफ्तार किया था और तभी से वे लखनऊ की जेल में बंद हैं। बाद में मामला सीबीआइ के पास स्थानांतरित हो गया। सीबीआइ ने भी प्राथमिक जांच के आधार पर इन्हीं दोनों को प्रमुख आरोपित बनाया। अब विशेष अदालत से अनुमति लेकर एजेंसी ने दोनों से पूछताछ की जिसमें कई अहम जानकारियां सामने आई हैं। इस घोटाले में शामिल नौ अन्य आरोपितों से भी सीबीआइ पूछताछ कर चुकी है।

सुकमा में नक्सलियों के खिलाफ ऑपरेशन, जंगल में उतरे जवान

नईदुनिया, जगदलपुर

- मुठभेड़ में 17 जवानों के शहीद होने के बाद बदली रणनीति से संभाला मोर्चा
- बड़ी संख्या में नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना, ड्रोन से ली टोह

छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में पिछले शनिवार को जहां मुठभेड़ में 17 जवान शहीद हुए थे, उसके आसपास के इलाके में नक्सलियों की बड़ी संख्या में मौजूदगी के खुफिया इनपुट पर बुधवार सुबह से बड़ा ऑपरेशन शुरू किया गया है। हेलीकॉप्टर और ड्रोन से नक्सलियों की गतिविधि की टोह लेकर जवान जंगल में उतर गए हैं।

गौरतलब है कि बीते शनिवार को सुकमा जिले के मिनपा इलाके में नक्सलियों ने पीठ पीछे से एंबुस में फंसाकर जवानों पर कायराना हमला किया था, जिसमें 17 जवान शहीद हो गए थे और 14 जवान घायल हुए थे। ऐसे में बुधवार को अच्छी तैयारी के साथ सुकमा-बीजापुर जिले के जंगलों में फोर्स नक्सलियों के सफाए के लिए उतर गई है। सुबह जगदलपुर से दक्षिण बस्तर के लिए दो हेलीकॉप्टर रवाना किए गए।

जिन इलाकों में ऑपरेशन चलाए जा रहे हैं, वहां ड्रोन से लगातार निगरानी की जा रही है। बस्तर के आइजी सुंदरराज पी ने बताया कि जवान नक्सलियों की मांद तक पहुंच चुके हैं। पूरे संभाग में एक साथ नक्सलियों की मांद को भेदने की मुहिम शुरू की गई है।

डीएम अवस्थी। (फाइल)

> नक्सलियों की तलाश की जा रही है। जिन्होंने फोर्स को नुकसान पहुंचाया है, उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। जहां मुठभेड़ हुई थी, उस इलाके से नक्सली अब भाग गए हैं। सुकमा-बीजापुर के जंगलों में उनके आधार इलाकों में फोर्स गश्त कर रही है। जल्द ही जवान उन्हें सबक सिखाएंगे।
>
> **-डीएम अवस्थी, डीजीपी, छत्तीसगढ़**

लूटे हथियार की फोटो वायरल कर नक्सल लड़ाकों की मौत स्वीकारी

बस्तर के आइजी सुंदरराज पी ने मंगलवार को दावा किया था कि शनिवार को हुई मुठभेड़ में कम से कम आठ नक्सलियों के मारे जाने का इनपुट है। इसकी पुष्टि बुधवार को खुद नक्सलियों ने कर दी। नक्सलियों ने फोर्स से लूटे हथियारों की फोटो वायरल की। साथ ही नक्सली लड़ाकों के अंतिम संस्कार की फोटो भी जारी की। हालांकि, जारी फोटो में तीन नक्सलियों की ही अंतिम यात्रा को दिखाया गया है। शनिवार को मिनपा में हुई मुठभेड़ के बाद सोमवार को ये इनपुट मिला था कि मौके पर अब भी नक्सली कमांडर नागेश व अन्य नक्सली मौजूद हैं। नागेश ने ही हिड़मा के निर्देश पर इस मुठभेड़ का नेतृत्व किया था। जिस वक्त नागेश घटनास्थल पर था, उस समय सुकमा में शहीद जवानों को श्रद्धांजलि देने सीएम भूपेश बघेल पहुंचे थे।

मीडियाकर्मी निकला कोरोना पॉजिटिव

नईदुनिया, भोपालः मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमल नाथ की 19 मार्च को भोपाल में हुई पत्रकार वार्ता में शामिल एक मीडियाकर्मी को कोरोना वायरस पॉजिटिव पाया गया है। बुधवार दोपहर को एम्स से आई जांच रिपोर्ट में संक्रमण की पुष्टि हुई। यह जानकारी सामने आने के बाद नेता, अधिकारी व मीडियाकर्मियों में हड़कंप मच गया है। उस दिन मुख्यमंत्री की सुरक्षा में शामिल रहे 50 से ज्यादा सुरक्षाकर्मी भी डरे हुए हैं। बुधवार शाम वे जांच कराने के लिए जेपी अस्पताल पहुंचे।

भोपाल के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) डॉ. सुधीर डेहरिया ने बताया कि गत रविवार को उक्त मीडियाकर्मी की 26 वर्षीय बेटी कोरोना वायरस से संक्रमित पाई गई थी। वह लंदन से आई थी। यह भोपाल में कोरोना से संक्रमण का पहला केस था। इसके बाद मंगलवार को उसके पिता, माता, भाई, नौकर, पड़ोसी समेत 10 लोगों के सैंपल जांच के लिए एम्स भोपाल भेजे गए थे। बुधवार को आई रिपोर्ट में मीडियाकर्मी को छोड़ सभी की रिपोर्ट निगेटिव आई है। इसके बाद सीएमएचओ ने मीडियाकर्मी के संपर्क में आए सभी लोगों को अपने घरों में ही अलग रहने की सलाह दी है। पत्रकार वार्ता में मुरैना जिले के सबलगढ़ से कांग्रेस विधायक बैजनाथ कुशवाह भी शामिल थे।

ममता ने केंद्र से मांगा, 1500 करोड़ का आर्थिक पैकेज

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

- बंगाल की सीएम ने कहा, केंद्र करे सभी राज्यों की मदद
- लोगों से अपील, सामाजिक दूरी बनाए, न कि बीमार का सामाजिक बहिष्कार करें

बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने केंद्र सरकार से कोरोना संकट से निपटने के लिए 1500 करोड़ रुपये के आर्थिक पैकेज की मांग की है। बुधवार को ममता ने कहा-केंद्र से हमें अभी तक कोई आर्थिक मदद नहीं मिली है। कहा कि सिर्फ बंगाल ही नहीं, केंद्र को हर राज्य की आर्थिक मदद करनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि डॉक्टर-नर्स के लिए होटल और लॉज में रहने की व्यवस्था की गई है, ताकि उन्हें सेवाएं प्रदान करने अस्पताल आने-जाने में सुविधा हो। इसी तरह बेघर लोगों को नाइट शेल्टर में ठहराने की व्यवस्था की गई है।

सामाजिक दूरी बनाए, सामाजिक बहिष्कार न करें : ममता ने लोगों से अपील की कि वे सामाजिक दूरी बनाए, न कि बीमार लोगों का सामाजिक बहिष्कार करें। उन्होंने कहा कि अगर किसी को अपने आसपास सर्दी-खांसी या बुखार से पीड़ित देखें तो उससे दूरी बनाने के बदले स्थानीय थाने अथवा बीडीओ को उसके बारे में जानकारी दें।

मेडिकल कॉलेज को बनाया कोरोना मरीजों का अस्पताल : कोलकाता में राज्य सरकार ने एक मेडिकल कॉलेज को पूरी तरह से कोरोना रोगियों के अस्पताल में बदल दिया है। इस अस्पताल में पहले से भर्ती मरीजों को छुट्टी दी जा रही है और नए सामान्य मरीजों का भर्ती बंद कर

ममता बनर्जी। (फाइल)

दिया गया है ताकि कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों का यहां इलाज किया जा सके। एक वरिष्ठ स्वास्थ्य अधिकारी ने बुधवार को कहा,' मंगलवार से हमने मेडिकल कॉलेज अस्पताल, कोलकाता से बेहतर हालत वाले मरीजों को छुट्टी देना शुरू कर दिया है। हमने नए मरीजों को भर्ती करने से भी इन्कार कर दिया है खासतौर से जो महिलाएं गर्भवती हैं तथा उन्हें अन्य अस्पतालों में भेज रहे हैं।'

अधिक संख्या में लोगों के मस्जिदों में प्रवेश पर लगी रोक : बंगाल इमाम संघ के अध्यक्ष मोहम्मद याहिया ने एक बयान में कहा कि चार-पांच लोगों के साथ नियमित रूप से नमाज और अन्य धार्मिक प्रक्रिया जारी रहे, जबकि मस्जिदों में अन्य लोगों के प्रवेश पर रोक लगाई जाए।

चुनाव टलने से दिग्विजय की मुश्किल बढ़ी

राज्य ब्यूरो, भोपाल

- विरोधियों को एकजुट होने का मिला समय
- दूसरे प्रत्याशी बरैया को वरीयता देना चाहते

मध्य प्रदेश की रिक्त होने वाली तीन राज्यसभा सीटों के चुनाव कोरोना की वजह से स्थगित हो गए हैं। इससे कांग्रेस के दोनों प्रत्याशियों-दिग्विजय सिंह और फूल सिंह बरैया की चिंता बढ़ गई है। इसकी वजह पार्टी के कुछ नेताओं द्वारा हाईकमान को अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति वोटों को लुभाने के लिए फूल सिंह बरैया को पहली वरीयता देते हुए राज्यसभा भेजने की कूटनीति अपनाया जाना है। अब चुनाव में ज्यादा वक्त मिलने से पार्टी नेताओं के लामबंद होने की आशंका भी है।

मप्र से राज्यसभा के तीन सदस्य कांग्रेस के दिग्विजय सिंह, भाजपा के प्रभात झा व सत्यनारायण जटिया का कार्यकाल नौ अप्रैल को पूरा होने जा रहा है। मार्च के पहले कांग्रेस के पक्ष में जो स्थितियां थीं, अब वे भाजपा के पक्ष में आ चुकी हैं, क्योंकि विधानसभा में प्रभावी सदस्य संख्या दो सीटों पर भाजपा के प्रत्याशियों को जिताने वाली हो गई है। पहले कांग्रेस को राज्यसभा की दो सीटें मिलना थीं। ज्योतिरादित्य सिंधिया के भाजपा में जाने के बाद उनके समर्थकों व अन्य विधायकों के विस से इस्तीफे से यह स्थिति बनी है।

> सुनने में आया है कि कांग्रेस में ही कुछ लोगों ने कहा है कि मेरे राज्यसभा जाने से कांग्रेस को मप्र में होने वाले उपचुनावों में अजा-जजा वोटों का फायदा होगा।
>
> **-फूलसिंह बरैया, राज्यसभा प्रत्याशी, मप्र कांग्रेस**

दिग्विजय सिंह विफल रहे : दिग्विजय ने सिंधिया के पार्टी छोड़ने के बाद कांग्रेस के 10 विधायकों को वापस लाने की काफी कोशिश की थी, लेकिन कामयाब नहीं हुए इससे राज्यसभा जाने की उनकी राह मुश्किल हो गई। उन्हें पार्टी में बढ़ते विरोध का अंदाज नहीं था। गत दिनों गुपचुप ढंग से कुछ दिग्गजों ने हाईकमान को अजा-जजा वोट के गणित का फायदा बताते हुए बरैया को राज्यसभा में भेजने पर जोर देते हुए कूटनीतिक दांव चला। इस बीच चुनाव स्थगित हो जाने से दिग्विजय विरोधियों को और समय मिल गया है।

कांग्रेस को एक सीट ही मिलेगी : मप्र विधानसभा की प्रभावी सदस्य संख्या 206 है। भाजपा के पास 107 और कांग्रेस के पास 92 विधायक हैं। जो चारों निर्दलीय मार्च के पहले कांग्रेस के साथ नजर आ रहे थे, उनमें से दो ढुलमुल हैं। दो कांग्रेस के साथ हैं। वहीं, बसपा व सपा भी भाजपा सरकार के साथ दिखाई दे रही हैं। विस की प्रभावी संख्या के हिसाब से हर राज्यसभा प्रत्याशी को जीत के लिए कम से कम 52 वोट चाहिए। इस गणित में भाजपा के पास अपने दम पर ही दो प्रत्याशियों को जीता ले जाने की क्षमता है। वहीं कांग्रेस को एक ही सीट मिलेगी।

शोभा ओझा सहित कई आयोग के अध्यक्ष-सदस्यों को हटाया गया

नईदुनिया, भोपाल

- मध्य प्रदेश की सत्ता में आई शिवराज सरकार का फैसला

कमल नाथ सरकार की ओर से करीब हफ्तेभर पहले की गईं सभी राजनीतिक नियुक्तियों को शिवराज सरकार ने निरस्त कर दिया है।

सरकार ने बुधवार को महिला आयोग की अध्यक्ष शोभा ओझा, राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष जेपी धनोपिया, अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष आनंद अहिरवार, अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष गजेंद्र सिंह राजूखेड़ी और मप्र युवा आयोग के अध्यक्ष अभय तिवारी को पद से हटा दिया है। इनके साथ इन आयोगों के सदस्यों की नियुक्ति भी निरस्त कर दी हैं। पूर्व मुख्यमंत्री कमल नाथ ने सभी आयोग के अध्यक्षों को कैबिनेट और सदस्यों को राज्यमंत्री का दर्जा दिया था।

कमल नाथ ने प्रदेश में राजनीतिक अस्थिरता के बीच उक्त नेताओं को विभिन्न आयोगों में नियुक्ति दी थी। तत्कालीन सरकार का मानना था कि इन नेताओं को पदभार ग्रहण करने के बाद नई सरकार नहीं हटा पाएगी, लेकिन शिवराज सिंह चौहान ने सीएम पद संभालने के तुरंत बाद नियुक्ति निरस्त कर दीं। सरकार का मानना है कि कमल नाथ सरकार ने अल्पमत में आने के बाद नियुक्तियां की हैं, इसलिए इनका संवैधानिक आधार नहीं है।

फैसले के खिलाफ अदालत जाएंगे : ओझा

महिला आयोग की अध्यक्ष पद से हटाई गईं शोभा ओझा ने कहा, शिवराज सरकार द्वारा नियुक्तियां निरस्त किया जाना असंवैधानिक व विद्वेषपूर्ण है। आयोग संवैधानिक संस्था होती है। उनके अपने नियम होते हैं, जिनके तहत अध्यक्ष व सदस्यों को हटाया जा सकता है। उन्होंने कहा, शिवराज सरकार के इन फैसलों के खिलाफ वे अदालत की शरण में जाएंगी।

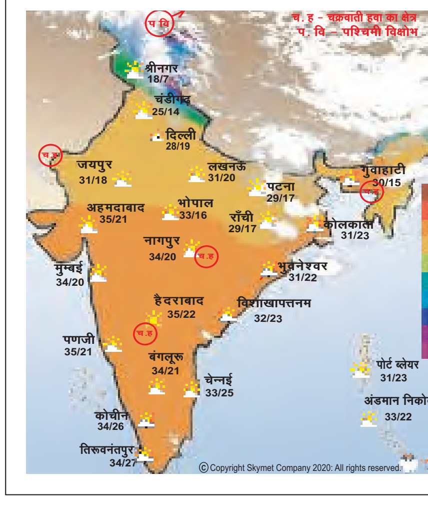

मौसम विशेष

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व राजस्थान में मौसम हल्का गर्म रहेगा। बादलों में वृद्धि होगी। गरज और तेज हवाओं के साथ वर्षा होगी। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख और हिमाचल प्रदेश में गरज और तेज हवाओं के साथ अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होगी। दिन के तापमान में गिरावट आएगी।

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	35/21/आंबा	अहमदाबाद	39/16/व
कोलकाता	33/21/आंबा	बड़ौदा	38/16/सा
चेन्नई	34/26/व	नागपुर	35/20/व
हैदराबाद	35/23/आंबा	इन्दौर	34/17/व
बंगलूरू	34/22/आंबा	रांची	30/16/व
त्रिवेन्द्रम	34/26/आंबा	पटना	32/17/व
गुवाहाटी	34/21/आंबा	जमशेदपुर	32/17/व
गंगटोक	15/08/आंबा	पुणे	35/18/व

92 सैनिकों की मौत हो गई है अफ्रीकी देश चाड में आतंकी संगठन बोको हराम के हमले में। आतंकियों ने बीते सोमवार को देश के दलदली क्षेत्र लेक चाड स्थित एक सैन्य ठिकाने को अपना निशाना बनाया था।

वुहान में दो महीने बाद शुरू हुई बस सेवा

बीजिंग, प्रेट्र : कोरोना वायरस के केंद्र मध्य चीन के हुबेई प्रांत के वुहान शहर में जिंदगी पटरी पर लौटने लगी है। शहर में दो महीने बाद बुधवार से बस सेवा बहाल कर दी गई। वुहान को छोड़ हुबेई के अन्य हिस्सों में लॉकडाउन खत्म होने पर लोग ट्रेन और बस पकड़कर प्रांत से बाहर भाग रहे हैं। रेलवे स्टेशनों पर लोगों की लंबी कतारें लगी हैं। गत दिसंबर में वुहान से ही पूरे चीन और दुनिया में कोरोना वायरस फैला। इस पर अंकुश लगाने के लिए चीन ने गत 23 जनवरी को वुहान समेत छह करोड़ की आबादी वाले हुबेई प्रांत को लॉकडाउन कर दिया था।

चीन ने बीते मंगलवार को वुहान को छोड़ हुबेई में लॉकडाउन खत्म कर दिया था। आठ अप्रैल से 1.1 करोड़ आबादी वाले वुहान से भी प्रतिबंध हटा दिए जाएंगे। शिन्हुआ न्यूज एजेंसी के अनुसार, वुहान में बुधवार सुबह साढ़े पांच बजे पहली बस हैंकाउ रेलवे स्टेशन से रवाना हुई। शहर में अभी 117 रूट पर बस सेवा बहाल की गई है। यह शहर की कुल बस परिवहन क्षमता का 30 फीसद है। इस बीच, हुबेई के अन्य हिस्सों से तमाम पाबंदियां हटने के बाद लोगों में प्रांत छोड़ने की हड़बड़ी दिखी। चीन में कोरोना संक्रमण के सबसे ज्यादा मामले इसी प्रांत में सामने आए थे।

कोरोना वायरस का प्रमुख केंद्र रहे वुहान में आवागमन बढ़ने के दावे किए जा रहे हैं। शिन्हुआ न्यूज एजेंसी ने तस्वीर जारी की है, जिसमें राजमार्ग पर स्थित टोल पर वाहनों की कतारें दिखाई दे रही हैं। एपी

संक्रमण का कोई नया मामला नहीं, चार की मौत

चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग ने बुधवार को बताया कि हुबेई में संक्रमण का कोई नया मामला सामने नहीं आया है। लेकिन वुहान में चार और पीड़ितों की मौत होने से चीन में कोरोना वायरस से मरने वालों की संख्या बढ़कर 3281 हो गई है। देश में 47 नए मामलों की पुष्टि हुई है, लेकिन ये सभी विदेश से आए लोग हैं। ऐसे मामलों की संख्या बढ़कर 474 हो गई है।

शुरू में डॉक्टरों को नहीं दी गई मास्क पहनने की अनुमति

बीजिंग, प्रेट्र : चीन की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने दावा किया है कि वुहान में कुछ अस्पतालों ने कोरोना वायरस के संक्रमण के शुरुआती दौर में स्थानीय लोगों के बीच दहशत फैलने से रोकने के लिए डॉक्टरों को मास्क पहनने से रोका था। मध्य चीन के हुबेई प्रांत में स्टेटिस्टिक्स ब्यूरो के उप निदेशक ये किंग पिछले लगातार 60 दिन से वुहान की कहानियां दर्ज कर रहे हैं। वुहान कोरोना वायरस के संक्रमण से बुरी तरह प्रभावित था और 23 जनवरी से शहर लॉकडाउन था। ये किंग ने सरकारी समाचारपत्र ग्लोबल टाइम्स से कहा, 'संक्रमण फैलने के शुरुआती दौर में कुछ अस्पतालों के अधिकारियों ने डॉक्टरों को मास्क पहनने की अनुमति नहीं दी ताकि लोगों के बीच दहशत नहीं फैले, लेकिन दूसरे अस्पतालों ने हालात को बेहतर तरीके से संभाला।' यह पिछले साल दिसंबर से वुहान में कोविड-19 के मामले शुरू होने के बाद किसी अधिकारी का इस तरह का पहला बयान है।

घर लौटने को 20 हजार डॉलर तक का विमान किराया चुका रहे चीन के छात्र

- अमेरिका में कोरोना का प्रकोप बढ़ने से चीनी छात्रों में दहशत
- धनाढ्य परिवार के बच्चों को घर भिजवाने के लिए एजेंट सक्रिय

बीजिंग, रायटर : अमेरिका में कोरोना वायरस का प्रकोप फैलने के बाद वहां पढ़ाई कर रहे चीन के छात्रों में काफी दहशत है। सबको घर लौटने की हड़बड़ी है। जल्द से जल्द घर पहुंचने के लिए प्राइवेट जेट में सीट हासिल करने के लिए संपन्न घरों के छात्र 20 हजार डालर तक का भुगतान कर रहे हैं।

अमेरिका समेत दुनिया के अनेक देशों में लाकडाउन के कारण जब कामर्शियल उड़ानें बंद हो चुकी हैं तब प्राइवेट जेट ही उम्मीद की आखिरी किरण हैं। ये प्राइवेट जेट कुछ स्टाप लेकर साठ घंटे में अमेरिका से चीन का सफर पूरा कर पा रहे हैं।

शंघाई के एक वकील जेफ गांग ने बताया कि विस्कांसिन में पढ़ाई कर रही अपनी बेटी से जब मैंने पूछा कि उसे जेब खर्च के लिए 1,80,000 (25,460 डालर) युयान चाहिये या घर आने के लिए प्राइवेट जेट का टिकट तो उसने टिकट को प्राथमिकता दी।

अमेरिका में इस समय कोरोना संक्रमितों की संख्या पचास हजार के पार हो हो गई है। जबकि चीन, जहां से यह बीमारी दुनिया भर में फैली है, नये मामले आने बंद हो गये हैं। ऐसे में चीनी छात्र किसी तरह घर पहुंचना चाहते हैं। लेकिन कामर्शियल उड़ानों पर रोक और कटौती उन्हें मुसीबत में डाल दिया है। हवाई आंकड़े उपलब्ध कराना वाली एजेंसी वारी फ्लाइट के अनुसार मंगलवार को चीन से आने-जाने वाली 3800 कामर्शियल उड़ानों में 3102 उड़ानें रद रहीं। इस कारण हवाई टिकटों की मांग बहुत बढ़ गई है।

दुनिया भर में चार्टर्ड फ्लाइट संचालित करने वाली कंपनी प्राइवेट फ्लाई की कामर्शियल डारेक्टर एनेलिस गार्शिया ने बताया कि कई धनाढ्य चीनी परिवारों की ओर एजेंट प्राइवेट जेट विमान कंपनियों से संपर्क साध रहे हैं जो समूहों में छात्रों को स्वदेश ले जा सकें।

बीजिंग से सभी कामर्शियल उड़ानों पर रोक लगाये जाने के बाद माना जाना रहा है कि शंघाई से भी अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर जल्द रोक लग जायेगी। हांगकांग और मकाऊ ने ट्रांजिट उड़ानों पर पहले ही रोक लगा रखी है। ऐसी सूरत में लास एंजलिस से शंघाई तक 14 सीट वाला बंबार्डियर-6000 विमान सवा 325300 डालर में किराया ले रहा है। इस हिसाब से प्रति व्यक्ति किराया करीब 23000 पड़ रहा है। एक अन्य कंपनी एयर चार्टर के पीआर और एडवरटाइजिंग मैनेजर ग्लेन फिलप्स ने बताया कि हाल के दिनों में उन्होंने चीन के नागरिकों के लिए अमेरिका के न्यूयार्क व बोस्टन शहर से शंघाई, सैन जोस से हांगकांग लास एंजलिस से ग्वांगझू के बीच चार्टर्ड फ्लाइट का प्रबंध किया।

न्यूज गैलरी

पाकिस्तान में संक्रमितों की संख्या एक हजार

इस्लामाबाद : पाकिस्तान में कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की संख्या बुधवार को एक हजार हो गई। देश में अब तक एक डॉक्टर समेत सात लोगों की मौत हो चुकी है। सबसे ज्यादा संक्रमित सिंध प्रांत में हैं। यहां अब तक 413 मामले सामने आ चुके हैं। सिंध की सरकार ने सूबे में लॉकडाउन लागू कर दिया है। लेकिन प्रधानमंत्री इमरान खान ने पूरे देश में लॉकडाउन घोषित करने से इन्कार कर दिया है। उन्होंने लोगों से अपने घरों में ही रहने की अपील जरूर की है। सिंध के बाद सबसे ज्यादा मामले बलूचिस्तान में आ रहे हैं। इस प्रांत में ईरान से लगती तफ्तान सीमा पर बने कैंप में पांच नए मामले सामने आए हैं। इस तरह वहां संक्रमित व्यक्तियों की संख्या 115 हो गई है। राष्ट्रीय राजधानी इस्लामाबाद में भी 16 लोग संक्रमित हैं। सरकार ने संक्रमण रोकने के लिए 26 मार्च से सभी घरेलू उड़ानों पर प्रतिबंध लगा दिया है। **इस बीच, इमरान खान ने कहा है कि कोरोना वायरस का कोई भी मामला चीन से देश में नहीं आया है।** (एएनआइ)

160 साल में तीसरी बार बंद हुआ वेटिकन का अखबार

वेटिकन सिटी : पोप मुख्यालय वेटिकन के अखबार एलओजेरवैटोर रोमानो की छपाई बुधवार को अस्थाई रूप से बंद कर दी गई। 160 साल के इतिहास में इस अखबार की प्रिंटिंग तीसरी बार बंद हुई है। अखबार के संपादक एंड्रिया मोंडा ने बताया कि ऑनलाइन संस्करण पहले की तरह आगे भी जारी रहेगा। इस अखबार में मुख्य रूप से अंतरराष्ट्रीय मुद्दों समेत कई विषयों पर रोमन कैथोलिक चर्च के विचारों को प्रकाशित किया जाता रहा है। इससे पहले अखबार की प्रिंटिंग श्रमिक आंदोलन के चलते सौ साल पहले 1919 में बंद करनी पड़ी थी। 20 सितंबर, 1870 को पहली बार इसे तब बंद किया गया था, जब पैपल स्टेट्स पर से चर्च के शासन का अंत हुआ था। 1861 में शुरू हुए इस अखबार की वर्तमान में करीब पांच हजार प्रतियां प्रकाशित होती हैं। (रायटर)

सूडान के रक्षा मंत्री की हार्ट अटैक से मौत

खारतूम : अफ्रीकी देश सूडान के रक्षा मंत्री जमालेलदिन उमर की बुधवार को हार्ट अटैक से मौत हो गई। यह घटना उस वक्त हुई जब वह साउथ सूडान की राजधानी जुबा में विद्रोही गुटों के साथ शांति वार्ता कर रहे थे। वह सूडान की सत्तारूढ़ सैन्य परिषद के सदस्य भी थे। सूडान में पिछले साल बशीर सरकार के तख्तापलट के बाद सैन्य परिषद ने शासन की बागडोर अपने हाथ में ली थी। अशांत सूडान में उमर पहले भी कई शांति वार्ताओं में अहम भूमिका निभा चुके थे। (रायटर)

स्पेन में चीन से ज्यादा मौतें

कोरोना का प्रकोप ▶ पिछले 24 घंटे में गई 738 लोगों की जान

पिछले 11 दिनों से जारी है पूरे देश में लॉकडाउन

मैड्रिड, एजेंसियां : कोरोना की महामारी के चलते पिछले चौबीस घंटे में स्पेन में 738 लोगों की मौत हुई है। इस तरह स्पेन में मृतकों की संख्या 3,434 हो गई है। चीन में यह आंकड़ा फिलहाल 3,281 है। अब तक इटली में सबसे ज्यादा 6820 मौतें हुई हैं जबकि 69,176 लोग संक्रमित हैं। स्पेन का यह हाल तब है जब वहां पर पिछले 11 दिनों से लॉकडाउन है। देश में संक्रमितों की संख्या 47,610 हो गई है। पूरे विश्व में मृतकों की संख्या की बात करें तो यह आंकड़ा 19,751 पर पहुंच गया है। संक्रमित व्यक्तियों की संख्या 4,40,318 हो गई है।

महामारी से सबसे ज्यादा स्पेन की राजधानी मैड्रिड प्रभावित है। वहां पर संक्रमित लोगों की संख्या 14,957 है। यह कुल संक्रमित व्यक्तियों की संख्या का एक तिहाई है। मैड्रिड में होने वाली मौतों की बात करें तो अभी तक 1,825 लोगों की जान जा चुकी है। यह देश में हुई कुल मौतों का 53 फीसद है। कोरोना के टेस्ट में तेजी आने के बाद संक्रमित लोगों की संख्या अकेले मंगलवार को 20 फीसद का उछाल देखा गया। जबकि इसी अवधि में मृतकों की संख्या में 27 फीसद की वृद्धि देखी गई। इमरजेंसी कोऑर्डिनेटर फर्नाडो साइमन ने कहा कि हम महामारी से होने वाले प्रभावों के शिखर पर पहुंच रहे हैं। स्वास्थ्य अधिकारियों का कहना है कि यह जल्द ही स्पष्ट हो जाएगा कि लॉकडाउन का महामारी से लड़ने में कितना फायदा हो रहा है। रोगियों के मुकाबले स्पेन में अस्पतालों की कमी भी देखी जा रही है। इससे निपटने के लिए सेना ने मैड्रिड एक्जीबिशन सेंटर में बड़ा फील्ड हॉस्पिटल बनाया है। इस हॉस्पिटल में 1,500 बेड हैं, जिसे 5,500 बेड तक बढ़ाया जा सकता है।

फ्रांस में 240 और लोगों की मौत : राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन का दूसरा सप्ताह शुरू होने के बाद फ्रांस में एक दिन में 240 और लोगों की मौत हुई है। वहां मृतकों की संख्या 11,00 हो गई है। 2,444 और लोग संक्रमित हैं। संक्रमित लोगों की संख्या 22,300 हो गई है। फ्रांसीसी स्वास्थ्य विभाग के महानिदेशक जेरोम सोलोमन ने कहा कि संक्रमित लोगों में 10,176 लोग अस्पताल में भर्ती हैं। अस्पताल में भर्ती 2,516 लोग आइसीयू में है। अब तक 3281 मरीज ठीक होकर घर जा चुके हैं। मरने वालों में 85 फीसद की उम्र 70 साल से अधिक थी।

अमेरिकी पोत के तीन जवानों का टेस्ट पॉजिटिव : अमेरिकी विमानवाहक पोत यूएसएस थियोडोर रूजवेल्ट में सवार तीन जवानों का कोरोनावायरस का टेस्ट पॉजिटिव आया है। संक्रमित जवानों के साथ ही उन लोगों को भी आइसोलेशन में भेज दिया गया है, जो जो इनके संपर्क में थे। किसी अमेरिकी पोत में इस तरह का यह पहला मामला है। पोत में 5000 से अधिक जवान और कर्मचारी तैनात हैं। पोत ने 15 दिन पहले वियतनाम के एक बंदरगाह पर लंगर डाला था।

दो लाख करोड़ के राहत पैकेज पर सीनेट और व्हाइट हाउस सहमत : अमेरिकी अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए दो लाख करोड़ के राहत पैकेज पर सीनेट और व्हाइट हाउस सहमत हो गए हैं। अंतिम मंजूरी के लिए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को भेजने से पहले सीनेट और अमेरिकी संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा को इसे मंजूरी प्रदान करनी होगी। ट्रंप ने एक प्रेस कांफ्रेंस में अमेरिकियों से सोशल डिस्टेंसिंग की प्रक्रिया अपनाने को कहा।

ब्रिटेन ने फंसे विदेशियों के लिए वीजा की अवधि बढ़ाई : ब्रिटेन की भारतीय मूल की गृह मंत्री प्रीति पटेल ने कोरोना वायरस के कारण लगे यात्रा प्रतिबंधों के कारण ब्रिटेन में फंसे भारत सहित कई देशों के नागरिकों के लिए वीजा की अवधि करीब दो महीने बढ़ाने का आदेश जारी किया है। यह घोषणा एक दिन पहले मंगलवार को की गई। इस घोषणा से उन पर्यटकों, पेशेवरों और छात्रों सहित भारतीय नागरिकों को राहत मिली है जिनकी वीजा अवधि समाप्त हो रही है या समाप्त हो चुकी है।

- नेपाल में वायरस संक्रमित तीसरा मरीज सामने आया है
- न्यूजीलैंड में आपातकाल लागू किया गया

देश	मौत	संक्रमित
इटली	6820	69,176
स्पेन	3434	47,610
चीन	3281	81,218
ईरान	2077	27,017
फ्रांस	1100	22,300
अमेरिका	785	55,081

स्पेन की राजधानी मैड्रिड में एक कोरोना वायरस संक्रमित महिला को एक होटल में स्थानांतरित करते चिकित्सकर्मी। होटल को अस्थाई अस्पताल में बदल दिया गया है। एपी

यूरोपीय संघ के संस्थानों ने स्पेन के साथ एकजुटता दिखाई

स्पेन में महामारी से निपटने के लिए यूरोपीय संघ के विभिन्न संस्थानों ने बुधवार को एकजुटता प्रदर्शित की। यूरोपियन आयोग के अध्यक्ष उर्सुला वॉन डर लेयन ने अपने आधिकारिक ट्विटर अकाउंट पर एक वीडियो संदेश में कहा, 'आपकी मदद के लिए हम अथक प्रयास कर रहे हैं। आप अकेले नहीं हैं।' यूरोपीय संघ के देशों के बीच समन्वय बनाने वाले यूरोपीय परिषद के प्रमुख चार्ल्स मिशेल ने स्पेन को भेजे एक पत्र में कहा, 'यूरोप पूरी एकजुटता से आपके साथ खड़ा है। हम आपकी मदद के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।' यूरोपीय संसद के अध्यक्ष डेविड ससोली ने स्पेन के नागरिकों को किए गए ट्वीट में कहा, 'आप जिस तरह की कठिनाइयों और समस्याओं का सामना कर रहे हैं, उनके साथ हमारी पूरी सहानुभूति है।'

खालिदा जिया सशर्त रिहा

बांग्लादेश ने बुधवार को पूर्व प्रधानमंत्री और मुख्य विपक्षी नेता खालिदा जिया को छह महीने के लिए रिहा कर दिया। हालांकि, उन्हें इस शर्त पर रिहा किया गया है कि वह देश में महामारी के प्रकोप घर पर ही रहेंगी। बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी की प्रमुख 74 वर्षीय हसीना को आठ फरवरी 2018 को भ्रष्टाचार के दो मामलों में 17 साल जेल की सजा सुनाई गई थी। काले रंग की साड़ी में नकाब पहने खालिदा व्हीलचेयर पर जेल से बाहर आईं।

टोक्यो में 40 नए मामले सामने आए

बुधवार को टोक्यो में संक्रमण के 40 नए मामले सामने आए। यह एक दिन में संक्रमित लोगों की सबसे ज्यादा संख्या है। जापान में संक्रमित लोगों की संख्या 1271 है जबकि मृतकों की संख्या 44 है। यह आंकड़ा शिप में हुई 10 मौतों और 712 संक्रमित मामलों से अलग है। टोक्यो की गवर्नर ने लोगों से सिर्फ जरूरी काम के लिए घर से बाहर निकलने को कहा है। उन्होंने कहा कि अगर जनता इस पर अमल करती है तो लॉकडाउन नहीं किया जाएगा।

ईरान में मृतकों की संख्या 2077 हुई

ईरान के राष्ट्रपति हसन रूहानी ने देश में नए साल पर होने वाले सभी कार्यक्रमों पर प्रतिबंध लगा दिया है। पिछले चौबीस घंटे वहां 143 और लोगों की मौत हुई है। मरने वालों की संख्या 2077 हो गया है। संक्रमित लोगों की संख्या 27,017 हो गई है।

काबुल के भारतीय मिशन पर हमले की थी योजना

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- आइएस ने ली जिम्मेदारी लेकिन शक पाक समर्थित हक्कानी नेटवर्क पर
- भारत ने की निंदा, मारे गए लोगों व घायलों के प्रति जताई संवेदना

अफगानिस्तान की राजधानी काबुल स्थित धर्मशाला गुरुद्वारे पर बुधवार को हुए जबरदस्त आतंकी हमले की जिम्मेदारी भले ही आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट (आइएस) ने ली है, लेकिन भारतीय सुरक्षा एजेंसियों को पाकिस्तान के समर्थन से चलने वाले आतंकी संगठन हक्कानी नेटवर्क पर शक है। भारतीय एजेंसियों को पहले से इस बारे में सूचना थी कि काबुल स्थित भारतीय दूतावास से जुडे कार्यालयों पर हमला करने की कोशिश हो सकती है।

हक्कानी नेटवर्क अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिबंधित आतंकी संगठन है। इसे पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आइएसआइ ने उसी तरह से पाला-पोसा है जिस तरह उसने जैश-ए-मुहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा जैसे आतंकी संगठनों को तैयार किया है। भारत सरकार ने इस हमले की कड़े शब्दों में निंदा की है। भारत ने इसे कायरतापूर्ण हमला करार दिया है और हमले में मारे गए लोगों व घायलों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। विदेश मंत्रालय की तरफ से जारी विज्ञप्ति के मुताबिक भारत अफगानिस्तान स्थित हिंदुओं व सिखों की हरसंभव मदद करेगा। भारत ने कहा है कि जब पूरी दुनिया में कोरोना वायरस महामारी का संकट फैल रहा है तब अफगानिस्तान में अल्पसंख्यकों के धार्मिक स्थलों पर इस तरह का कायराना हमला बताता है कि इसे अंजाम देने वाले और उन्हें मदद करने वाले कितने शैतानी प्रवृति के हैं। भारत ने हमलावरों से लोहा लेने वाली अफगानी सुरक्षा एजेंसियों के कर्मियों की तारीफ की है जो बहादुरी से अफगानिस्तान और वहां के लोगों की सुरक्षा कर रहे हैं। भारत ने एक बार फिर अफगानिस्तान की सरकार के प्रति भरोसा जताया है जो वहां शांति और स्थायित्व कायम करने के लिए लगातार प्रत्यनशील है।

अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में स्थित गुरुद्वारे पर बुधवार को हुए आत्मघाती हमले में अपने परिजनों को खोने पर विलाप करती सिख महिला। रायटर

> मैं मारे गए सभी लोगों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं।
> – नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

> काबुल में सिख गुरुद्वारे पर आतंकी हमला बेहद निंदनीय है। मानवता के खिलाफ इस घृणित अपराध में मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति मैं हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं। मैं घायलों के जल्द से जल्द स्वस्थ होने की कामना भी करता हूं।
> – राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री

अफगानिस्तान में 1980 में थे पांच लाख सिख

प्रथम पृष्ठ से आगे

अफगानिस्तान में अब करीब 300 सिख परिवार रहते हैं। इनकी संख्या काबुल और जलालाबाद में ज्यादा है। इन्हीं दो शहरों में गुरुद्वारे भी हैं। 1980 में देश में करीब पांच लाख सिख थे। लेकिन गृहयुद्ध और तालिबान के मजबूत होने के साथ ही ज्यादातर सिख परिवार भागकर भारत आ गए।

सिखों और हिंदुओं के धार्मिक स्थलों पर होते रहते हैं हमले : अफगानिस्तान में अल्पसंख्यक सिखों और हिंदुओं के धार्मिक स्थलों पर आए दिन हमले होते रहते हैं। इससे पहले 2018 में राष्ट्रपति अशरफ गनी से मुलाकात करने जा रहे हिंदुओं और सिखों के काफिले पर आत्मघाती हमला हुआ था। इसमें 19 सिख और हिंदू मारे गए थे। मृतकों में देश के प्रसिद्ध राजनेता अवतार सिंह खालसा भी थे। उस हमले की जिम्मेदारी भी आइएस ने ली थी। इन हमलों से सिख और हिंदू समुदाय भयभीत है। बड़ी संख्या में सिखों और हिंदुओं ने देश छोड़ने का फैसला कर लिया है।

> सिख धर्मस्थलों पर हमला कायराना हरकत है। पीड़ित परिवारों के प्रति मैं संवेदना व्यक्त करता हूं।
> –हामिद करजई, पूर्व राष्ट्रपति

ब्रिटेन के प्रिंस चार्ल्स भी कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए

- पत्नी कैमिला को संक्रमण नहीं, स्कॉटलैंड में आइसोलेशन में रह रहे हैं

लंदन, रायटर : ब्रिटेन के प्रिंस चार्ल्स भी जांच में कोरोना वायरस से संक्रमित मिले हैं। उनका स्वास्थ्य अच्छा है और अब वह स्कॉटलैंड में आइसोलेशन में रह रहे हैं। हालांकि उनकी पत्नी कैमिला को संक्रमण नहीं है।

लंदन स्थित शाही आवास क्लेरेंस हाउस के मुताबिक, महारानी एलिजाबेथ के सबसे बड़े पुत्र चार्ल्स में कोरोना वायरस के हलके लक्षण दिखाई दिए हैं और वह स्कॉटलैंड स्थित अपने बिर्कहॉल रेजीडेंस से काम कर रहे हैं। शाही सूत्रों ने बताया कि प्रिंस चार्ल्स की जांच सोमवार को की गई थी, लेकिन जांच रिपोर्ट मंगलवार को आई। उन्हें सलाह दी गई है कि उनकी स्थिति गंभीर हो सकती है। जांच रिपोर्ट आने के बाद प्रिंस चार्ल्स ने महारानी एलिजाबेथ के अलावा अपने बच्चों प्रिंस विलियम और हैरी से बातचीत भी की। क्लेरेंस हाउस का कहना है, 'यह पता कर पाना संभव नहीं है कि प्रिंस चार्ल्स किस व्यक्ति के कारण संक्रमित हुए हैं क्योंकि पिछले हफ्तों में उन्होंने अपनी सार्वजनिक भूमिका के दौरान कई लोगों से मुलाकात की थी।'

बकिंघम पैलेस के मुताबिक, महारानी एलिजाबेथ इन दिनों विंडसर कैसल में पति फिलिप के साथ हैं और वह भी स्वस्थ हैं। महारानी ने प्रिंस चार्ल्स से 12 मार्च की सुबह मुलाकात की थी।

प्रिंस चार्ल्स। फाइल

कोरोना के सफाये के लिए पोप ने की विशेष प्रार्थना

वेटिकन सिटी, रायटर : ईसाई समुदाय के सर्वोच्च धर्मगुरु पोप फ्रांसिस ने कोरोना के सफाये के लिए दुनिया भर के ईसाइयों के साथ बुधवार को विशेष प्रार्थना की। द लार्ड्स प्रेयर नामक इस प्रार्थना के बाद पोप ने रविवार को दोपहर 12.00 बजे (स्थानीय समयानुसार) अवर फादर नामक प्रार्थना करने के लिए ईसाई धर्म गुरुओं व मतावलंबियों को आमंत्रित किया है।

उन्होंने कहा कि कोरोना की महामारी संपूर्ण मानवता की बहुत कठिन परीक्षा ले रही है। ऐसे मुश्किल वक्त में हम सबकी रक्षा के लिए ईश्वर की प्रार्थना करेंगे। सभी देशों और परंपराओं और विविध भाषाएं बोलने वाले सभी ईसाई मिलकर यह प्रार्थना करेंगे। उन्होंने कहा कि यह प्रार्थना महामारी से जूझ रहे लोगों के साथ उनका इलाज कर रहे मेडिकल स्टाफ, पुलिस प्रशासन और स्वयंसेवियों के लिए भी होगी। विश्व में इस समय करीब 2.3 अरब ईसाई हैं जिनमें 1.3 अरब रोमन कैथोलिक हैं। पोप ने बुधवार की प्रार्थना वेटिकन के अंदर लाइब्रेरी से की।

वैश्विक कूटनीति पर भी दिखने लगा कोरोना का असर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- कोरोना पर आज समूह-20 की बैठक, पीएम मोदी भी करेंगे शिरकत
- अमेरिका और चीन के बीच तनाव और बढ़ने के संकेत

नोवल कोरोना वायरस को लेकर वैश्विक कूटनीतिक सरगर्मी बढ़ने लगी है। एक तरफ अमेरिका और चीन के बीच इसको लेकर आरोप-प्रत्यारोप शुरू हो चुका है, वहीं यूरोपीय संघ के देशों के बीच भी ना सिर्फ आपसी स्तर पर सामंजस्य बिगड़ता दिख रहा है बल्कि चीन को लेकर वहां भी एक तरह का गुस्सा सामने आने लगा है। ऐसे में गुरुवार को समूह-20 देशों के नेताओं की वर्चुअल मीटिंग पर सभी की नजर है। धीरे-धीरे लगभग पूरी दुनिया को अपनी जद में ले चुके इस वायरस को लेकर किसी अंतरराष्ट्रीय मंच पर यह राष्ट्र प्रमुखों की पहली वैश्विक बैठक है। बढ़ते तनाव की इस स्थिति में भारत के लिए भी अपने वैश्विक हितों को सुरक्षित करने की चुनौती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी गुरुवार को इस शिखर बैठक में सम्मिलित होंगे।

मोदी ने भारत में संपूर्ण लॉकडाउन के पहले दिन बुधवार को ट्वीट करके बताया कि उन्हें कोविड-19 के खिलाफ मुहिम पर होने वाली जी-20 की शिखर बैठक को लेकर खासी उम्मीदें हैं। उन्होंने कहा कि इस वैश्विक महामारी से निपटने में जी-20 देशों की अहम भूमिका हो सकती है। उन्होंने कहा कि यह बैठक इस बीमारी के खात्मे के लिए एक कार्ययोजना बनाने को लेकर हो रही है।

भारत भी बदलते हालात पर अपनी नजर रखे हुए है। पिछले दो हफ्तों में मोदी ० जहां दुनिया के कुछ प्रमुख वैश्विक नेताओं से टेलीफोन पर बात की है, वहीं विदेश मंत्री एस. जयशंकर भी अपने समकक्षों के साथ संपर्क में हैं। सरकारी अधिकारियों का कहना है कि भारत की पहली वरीयता दूसरे देशों में रहने वाले अपने नागरिकों को सुरक्षित स्वदेश लाना या जहां वे रह रहे हैं उन्हें सुरक्षा मुहैया कराना है। समूह-20 देशों के प्रमुखों की गुरुवार को होने वाली बैठक में भारत इस बीमारी से लड़ने को लेकर अपने कुछ नए विचार पेश करेगा।

संयुक्त राष्ट्र ने नहीं की है अब तक कोई बैठक : इस बीमारी से अभी तक 19 हजार से ज्यादा जानें जा चुकी हैं लेकिन संयुक्त राष्ट्र ने अभी तक इस पर कोई बैठक नहीं बुलाई है। इसके पीछे वजह यह मानी जा रहा है कि चीन अभी संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) का अध्यक्ष है। यूएनएससी में पांच स्थायी सदस्यों के अलावा 10 अस्थायी सदस्य होते हैं और इनमें से हर सदस्य को एक-एक महीने के लिए प्रमुख बनाया जाता है तो आपातकालीन बैठक आदि बनाने का प्रस्ताव करता है। चीन आधिकारिक तौर पर साफ कर चुका है कि हालात ऐसे नहीं है कि इस पर बैठक बुलाई जाए। सनद रहे कि यूएन की ही स्वास्थ्य इकाई विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने जिस तरह से कोरोनाा को लेकर लचर प्रतिक्रिया दिखाई है उसकी भी आलोचना की जा रही है। आरोप लगाया जा रहा है कि डब्ल्यूएचओ ने समय पर चीन में उत्पन्न इस वायरस को लेकर दुनिया को सतर्क नहीं किया।

'चीनी वायरस' पर अमेरिका सहित कई देश हैं नाराज : अमेरिका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के अलावा वहां के कई वरिष्ठ राजनयिकों ने भी चीन को कठघरे में खड़ा करना शुरू कर दिया है। ट्रंप ने इस वायरस को 'चीनी वायरस' कह कर अपनी मंशा साफ कर दी है कि अमेरिका आने वाले दिनों में इस वायरस को लेकर चीन के प्रति उनका रवैया और सख्त होगा। दूसरी तरफ, यूरोपीय संघ के विदेश मामलों व सुरक्षा नीतियों के मंत्री जे बी फोंटेल्स ने भी चीन की नीति पर सवाल उठा दिया है। उन्होंने सीधे तौर पर कोरोना वायरस से जुड़ी सूचना को छिपाने का भी आरोप लगाया है और कहा है कि अभी चीन की तरफ से दुनिया के कई देशों को चिकित्सा उपकरण दे कर यह साबित करने की कोशिश की जता रही है कि वह अमेरिका से विपरीत एक उत्तरदायी देश है व मदद करने को तैयार है।

सऊदी किंग सलमान करेंगे जी-20 की अध्यक्षता : सऊदी अरब के किंग सलमान गुरुवार को होने वाली जी-20 देशों के नेताओं के ऑनलाइन शिखर सम्मलेन की अध्यक्षता करेंगे। रियाद की ओर से बुधवार को जारी बयान में कहा गया, 'महामारी से मानवीय और आर्थिक हालात बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। विभिन्न देशों द्वारा इससे निपटने के किए जा रहे वैश्विक प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए यह शिखर सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। सऊदी किंग सलमान बिन अब्दुल अजीज अल सऊद इस बैठक की अध्यक्षता करेंगे।' सम्मेलन में जी-20 सदस्य देशों सहित महामारी से प्रभावित देश स्पेन, जार्डन, सिंगापुर और स्विटजरलैंड भी हिस्सा लेंगे। इसके अलावा कई अन्य वैश्विक संगठन जैसे संयुक्त राष्ट्र, विश्व स्वास्थ्य संगठन और विश्व व्यापार संगठन के प्रतिनिधि भी भाग लेंगे।

खशोगी हत्याकांड में तुर्की ने सऊदी के 20 लोगों को बनाया आरोपी

इस्तांबुल, एएफपी : पत्रकार जमाल खशोगी की हत्या के मामले में तुर्की ने 20 लोगों को आरोपी बनाया है। इनमें सऊदी अरब के युवराज मुहम्मद बिन सलमान दो पूर्व सहायक भी शामिल हैं। खशोगी की हत्या 2018 में तुर्की के इस्तांबुल स्थित सऊदी अरब के वाणिज्य दूतावास में हुई थी।

मामले की जांच और कानूनी प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए तुर्की की एजेंसियों ने सऊदी अरब के उप खुफिया प्रमुख अहमद अल असीरी और शाही दरबार के मीडिया प्रमुख सऊद अल कहतानी को भी आरोपी बनाया है। बताया गया है कि इन्हीं दोनों ने मारक दस्ते को तुर्की जाकर खशोगी की हत्या का हुक्म दिया। खशोगी (59) की जिस समय हत्या हुई थी उस समय वह तुर्की मूल की हैटिस सेंगिज के साथ शादी की तैयारी कर रहे थे। खशोगी सऊदी अरब की शाही सत्ता के कटु आलोचक थे और उसके बारे में अमेरिकी अखबार वाशिंगटन पोस्ट में स्तंभ लिखते रहते थे। सऊदी अरब के 15 सदस्यीय मारक दस्ते ने इस्तांबुल स्थित वाणिज्य दूतावास में खशोगी के शरीर के टुकड़े कर दिए थे, जो कभी नहीं मिले। इसके बाद मारक दस्ता वापस सऊदी अरब लौट गया। तुर्की की जांच एजेंसियों ने वाणिज्य दूतावास के अधिकारियों से कई बार सहयोग की अपील की लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।

सऊदी अरब ने इस पूरी वाकये को कुछ लोगों की कपटपूर्ण कार्रवाई बताया है। लेकिन अमेरिकी खुफिया संगठन सीआइए, संयुक्त राष्ट्र के विशेष दूत और तुर्की की एजेंसियों ने इस हत्या में सऊदी युवराज मुहम्मद को जुड़ा हुआ बताया है। सऊदी की शाही सत्ता ने इस आरोप को गलत बताया है। सऊदी अरब ने इस मामले में जांच भी कराई और उसने कुछ लोगों को दंडित भी किया है। लेकिन सऊदी की असहमति के बावजूद तुर्की ने भी मामले की अलग जांच कराई और अब उसने 20 लोगों को आरोपित किया है।

रिषभ पंत को अपनी परेशानियों से निजात पाने के लिए मानसिक कोच का सहारा लेना चाहिए।
— ब्रैड हॉग, पूर्व ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाज

श्रेयस अय्यर बोले, टेस्ट क्रिकेट असली परीक्षा है

मुंबई, प्रेट्र : बल्लेबाज श्रेयस अय्यर टेस्ट क्रिकेट में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। अय्यर ने ट्विटर पर सवालों के जवाब में टेस्ट क्रिकेट के बारे में पूछे जाने पर कहा, 'टेस्ट क्रिकेट वास्तविक परीक्षा है। यह प्रत्येक क्रिकेटर का सपना होता है कि वह टेस्ट क्रिकेट खेले। मैं भी इस लंबे प्रारूप में देश का प्रतिनिधित्व करने के मौके का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं।'

एक नजर में

कोरोना की जानकारी में ही समय बीत रहा है: हरभजन

नई दिल्ली: भारतीय स्पिनर हरभजन सिंह कोरोना के बारे में सोच रहे हैं और उनका अधिकतर समय इस महामारी को लेकर नई जानकारी हासिल करने में बीत रहा है। हरभजन अभी अपने परिवार (पत्नी गीता और पुत्री हिनाया) के साथ मुंबई में हैं और उन्हें उम्मीद है कि वैज्ञानिक और चिकित्सक इस महामारी की दवा खोजने में सफल रहेंगे। हरभजन ने कहा कि संकट की इस घड़ी में आप जिंदगी को पूरी तरह अलग नजरिये से देखते हो। ऐसे समय में खेल आपके दिमाग के किसी दूर कोने में चला जाता है। मैं घर में हूं। मैं अपना अधिकतर समय कोरोना के बारे में जानकारी हासिल करने में बिता रहा हूं। मैं उपलब्ध जानकारी के हर प्रमाणिक हिस्से को पढ़ने की कोशिश करता हूं।' (प्रेट्र)

फुटबॉलर लतीफ का निधन

कोलकाता: भारतीय फुटबॉल टीम के पूर्व मिडफील्डर और 1970 के बैंकॉक एशियन गेम्स की कांस्य पदक विजेता टीम के प्रमुख सदस्य रहे अब्दुल लतीफ का सोमवार को गुवाहाटी में निधन हो गया। उनके परिवार में एक बेटा और दो बेटियां हैं। लतीफ के एक रिश्तेदार ने बताया कि वह उम्र संबंधी बीमारियों से परेशान थे और उन्होंने सोमवार की शाम को अंतिम सांस ली। मंगलवार को उनका अंतिम संस्कार किया गया। लतीफ का जन्म कर्नाटक के मैसुरु में हुआ था। उन्होंने एशिया कप क्वालीफायर 1968 और मर्डेका कप 1969 में भारत का प्रतिनिधित्व किया था। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि उस आखिरी भारतीय टीम का हिस्सा होना था जो एशियन गेम्स में पदक जीती थी। (प्रेट्र)

क्वारंटाइन के लिए ईडन का इस्तेमाल करें

कोलकाता: बीसीसीआइ के अध्यक्ष और पूर्व दिग्गज बल्लेबाज सौरव गांगुली ने कोरोना वायरस के प्रकोप के मद्देनजर बंगाल सरकार को कह दिया है कि वह क्वारंटाइन और अस्थायी मेडिकल सुविधाओं के लिए ईडन गार्डेंस स्टेडियम का उपयोग कर सकती है। बंगाल क्रिकेट संघ (कैब) ने कोरोना वायरस के लिए 25 लाख और इसके अध्यक्ष अभिषेक डालमिया ने पांच लाख रुपये देने की घोषणा की है। वहीं, हैदराबाद क्रिकेट संघ ने राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम को क्वारंटाइन के लिए हैदराबाद सरकार को देने का फैसला किया है। राज्य सरकार इस स्टेडियम का इस्तेमाल जरूरतमंदों के लिए कर सकती है। वही, सौरव गांगुली लॉकडाउन से प्रभावित लोगों के सहयोग के लिए 50 लाख रुपये के चावल दान करेंगे। (राब्यू)

भारत की स्थिति पर नजर रख रहा है फीफा

नई दिल्ली: विश्व फुटबॉल की संचालन संस्था फीफा ने बुधवार को कहा कि वह नवंबर में भारत में होने वाले महिला अंडर-17 विश्व कप को ध्यान में रखकर देश में कोरोना की स्थिति पर नजर रखे है। फीफा इसके साथ ही लोगों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अंडर-17 महिला विश्व कप पर पड़ने वाले संभावित प्रभाव की पहचान करने के लिए स्थानीय आयोजन समिति (एलओसी) के साथ काम कर रहा है। टूर्नामेंट से पहले भारत में जिन प्रतियोगिताओं के आयोजन की योजना बनाई गई है, उनको लेकर वैकल्पिक समाधान भी तलाश रहा है।' पूर्व कार्यक्रम के अनुसार, अंडर-17 महिला विश्व कप दो से 21 नवंबर के बीच होना है। इसके मैच नवी मुंबई, कोलकाता, अहमदाबाद, भुवनेश्वर और गुवाहाटी में खेले जाएंगे। (जेएनएन)

बिना चांद क्या चकोर, बिन बारिश क्या मोर...

कोरोना वायरस के कारण अगर आइपीएल में विदेशी खिलाड़ी नहीं खेले तो आठों टीमों पर इसका असर पड़ना तय

विशाल श्रेष्ठ • कोलकाता

बिन चांद क्या चकोर, बिन बारिश क्या मोर और बिन विदेशी क्रिकेटर क्या आइपीएल! फिलहाल अभी यह तय नहीं है कि दुनिया की सबसे महंगी क्रिकेट लीग आइपीएल होगी या नहीं और अगर होगी तो उसमें विदेशी क्रिकेटर शामिल होंगे या नहीं। टोक्यो ओलंपिक के एक साल के स्थगन के बाद बीसीसीआइ के हुक्मरानों पर इसे भी रद करने का दबाव बढ़ गया लेकिन अभी तक दुनिया के सबसे अमीर क्रिकेट बोर्ड ने इस पर फैसला नहीं लिया है। अभी तक की स्थिति यह है कि 14 अप्रैल तक देश में लॉक डाउन है और 15 अप्रैल तक वीजा संबंधी रोक होने के कारण देश में विदेशी खिलाड़ी प्रवेश नहीं कर सकते।

इस समय जो हालात हैं, उसमें आइपीएल के आयोजन की संभावनाएं कम ही नजर आ रही हैं, लेकिन आगे अगर हालात संभलते हैं और विदेशी खिलाड़ी इसमें शिरकत नहीं कर पाते या खुद ही खेलने नहीं आते तो आठों फ्रेंचाइजियों पर इसका असर पड़ना तय है। आइए जानते हैं कि विदेशी क्रिकेटरों के नहीं खेलने से किस टीम पर कितना असर पड़ सकता है।

महेंद्र सिंह धौनी की तीन बार की चैंपियन टीम में सुरेश रैना के अलावा रवींद्र जडेजा, केदार जाधव, हरभजन सिंह, दीपक चाहर, शर्दुल ठाकुर, अंबाती रायुडु, मुरली विजय और पीयूष चावला सरीखे देसी खिलाड़ी भी हैं। इतने अच्छे भारतीय खिलाड़ियों से लैस होने के बावजूद टीम को ऑस्ट्रेलिया के धाकड़ आलराउंडर शेन वॉटसन और कैरेबियाई आलराउंडर ड्वेन ब्रेवो की कमी खल सकती है। ये दोनों कई मौकों पर मैच विनर रहे हैं। दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज लुंगी नगिदी और अफ्रीकी स्पिनर इमरान ताहिर का न खेलना भी टीम की गेंदबाजी को कमजोर कर सकता है।

वॉटसन • फाइल फोटो, प्रेट्र

मैक्सवेल • फाइल फोटो, एपी

पंजाब की बल्लेबाजी काफी हद तक विदेशी बल्लेबाजों पर ही निर्भर है इसलिए उसे बहुत ज्यादा फर्क पड़ सकता है। कप्तान लोकेश राहुल को छोड़ दिया जाए तो टीम में टी-20 क्रिकेट का और कोई भारतीय स्टार नहीं है, लेकिन विदेशी क्रिकेटरों की बात करें तो इस टीम के पास क्रिस गेल और ग्लेन मैक्सवेल के रूप में दुनिया के दो ऐसे विस्फोटक बल्लेबाज हैं, जो अपने बूते किसी भी मैच का रुख बदल सकते हैं। पिछली नीलामी में टीम को शेल्डन कोट्रेल के रूप में अच्छा कैरेबियाई गेंदबाज भी मिल चुका है।

आइपीएल के इतिहास में साल-दर-साल जितना बदलाव दिल्ली की टीम में देखने को मिला, उतना शायद ही किसी और टीम में दिखा हो। इस टीम की कमान अब श्रेयस अय्यर जैसे युवा के हाथों में है, जो टीम इंडिया में अपनी जगह मजबूत कर चुके हैं। टीम में शिखर धवन, अमित मिश्रा, अजिंक्य रहाणे, रविचंद्रन अश्विन, पृथ्वी शॉ और रिषभ पंत जैसे शानदार भारतीय खिलाड़ी भी हैं लेकिन दक्षिण अफ्रीका के कैगिसो रबादा, इंग्लैंड के जेसन राय व क्रिस वोक्स और वेस्टइंडीज के शिमरोन हेटमायर के बिना दिल्ली की डगर आसान नहीं होगी।

कैगिसो रबादा • फाइल फोटो, प्रेट्र

डिविलियर्स • फाइल फोटो, एपी

जिस टीम के पास विराट कोहली जैसा बल्लेबाज हो, उसके बारे में और क्या कहना, लेकिन आरसीबी की बल्लेबाजी एबी डिविलियर्स पर भी निर्भर रही है। टीम में आरोन फिंच जैसा उम्दा ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज भी है और अब तो उसे डेल स्टेन के रूप में तेज गेंदबाज भी मिल गया है। इनके बिना बेंगलुरु को रॉयल चैलेंज का सामना करना पड़ सकता है। वैसे टीम की स्पिन गेंदबाजी भारतीयों पर ही निर्भर है।

सनराइजर्स हैदराबाद की तो कमान ही विदेशी खिलाड़ी डेविड वार्नर के हाथों में है। न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियमसन और इंग्लैंड के स्टार बल्लेबाज जॉनी बेयरस्ट्रो भी टीम का हिस्सा हैं। ऐसी परिस्थितियों में अफगानी स्पिनर राशिद खान भी उपलब्ध नहीं हो पाएंगे। टीम के पास कई अच्छे भारतीय भी हैं लेकिन इन विदेशी खिलाड़ियों के बिना उसकी राह आसान नहीं होगी।

वार्नर • फाइल फोटो, प्रेट्र

राजस्थान ने पहला और एकमात्र आइपीएल खिताब विदेशी कप्तान शेन वार्न की अगुआई में ही जीता था। इस टीम को पिछली नीलामी में रॉबिन उथप्पा जैसा अनुभवी और यशस्वी जायसवाल जैसा युवा बल्लेबाज मिल चुका है। फिर भी ऑस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ, इंग्लैंड के बेन स्टोक्स व जोस बटलर व जोफरा आर्चर और दक्षिण अफ्रीका के डेविड मिलर न होने से टीम की बल्लेबाजी और गेंदबाजी, दोनों की धार कुंद होगी। स्टीव स्मिथ नहीं खेले तो राजस्थान को नया कप्तान भी तलाशना होगा।

स्टीव स्मिथ • फाइल फोटो, एपी

केकेआर की बात करें तो यह अकेली ऐसी टीम है जो पहले सत्र से ही विदेशी खिलाड़ियों पर निर्भर रही है। पहले ब्रेंडन मैकुलम, क्रिस गेल और जैक कैलिस तो पिछले सत्र में आंद्रे रसेल ने टीम को संभाला है। सुनील नारायण के बिना भी इसका काम नहीं चलता। टीम ने इस साल नीलामी में ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज पैट कमिंस को 15 .5 करोड़ रुपये की भारी-भरकम रकम खर्च करके खरीदा है, जो आइपीएल के इतिहास में किसी विदेशी खिलाड़ी पर लगी अब तक की सबसे ऊंची बोली है। कोलकाता ने ईयान मोर्गन को भी फिर से खरीदा है।

लसिथ मलिंगा • फाइल फोटो, प्रेट्र

रोहित शर्मा भी अपनी टीम को तीन बार आइपीएल ट्राफी जिता चुके हैं। रोहित की टीम में हार्दिक और क्रुणाल पांड्या के अलावा जसप्रीत बुमराह जैसे दिग्गज भारतीय खिलाड़ी हैं। फिर भी कैरेबियाई आलराउंडर किरोन पोलार्ड और श्रीलंकाई तेज गेंदबाज लसिथ मलिंगा के बिना इस टीम की कल्पना नहीं की जा सकती। टीम को ट्रेंट बोल्ट का झटका भी लग सकता है।

लॉक डाउन के दौरान भी अपनी फिटनेस पर पूरा ध्यान देंगे भारतीय क्रिकेटर

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: कोरोना वायरस के कारण भारत सरकार ने समूचे देश में लॉकडाउन घोषित कर दिया है। ऐसे में भारतीय क्रिटकेर भी भी घर पर हैं और अपने परिवार के साथ समय बिता रहे हैं लेकिन स्ट्रेंथ एंड कंडीशनिंग कोच निक वेब ने फिजियो नितिन पटेल के साथ मिलकर भारतीय टीम के खिलाड़ियों के लिए इंडोर वर्कआउट प्लान तैयार किया है, जिससे सभी खिलाड़ी फिट रहें।

टीम प्रबंधन से जुड़े एक सूत्र ने बताया कि सभी खिलाड़ियों, चाहे वे सिर्फ टेस्ट खेलते हों या सिर्फ सीमित ओवरों में या तीनों प्रारूपों में, सभी को एक विशेष फिटनेस रुटीन दिया गया है, जिसे वे मानेंगे। सभी को निक और पटेल को इसकी नियमित जानकारी भी देनी होगी। यह रुटीन खिलाड़ियों की मांग को देखकर बनाया गया है। उदाहरण के तौर पर गेंदबाज को वे एक्सरसाइज दी गई हैं, जिससे उनका कोर और लोअर बॉडी मजबूत होगी। इसी तरह बल्लेबाज को वे एक्सरसाइज दी गई हैं, जिससे उसके कंधे और कलाइयां मजबूत होंगी। विराट कोहली वजन के साथ अभ्यास करना पसंद करते हैं इसलिए उनके वर्कआउट में वजन उठाने वाली एक्सरसाइज जैसे कि क्लीन एंड जर्क, डेडलिफ्ट्स शामिल रहेंगी। वहीं खाली हाथ एक्सरसाइज करने वाले खिलाड़ी को ऐसी एक्सरसाइज दी गई हैं, जिसमें वजन न उठाने पड़े।

कुंबले को सता रही फोटोग्राफी की याद: पूर्व भारतीय कप्तान अनिल कुंबले फोटोग्राफी के जनुनू के लिए जाने जाते हैं। इन दिनों पूरे देश में लॉकडाउन है और ऐसे में पूर्व लेग स्पिनर अपनी फोटोग्राफी को याद करके ही दिन गुजार रहे हैं। कुंबले ने एक ट्वीट किया कि घर पर रहना और अपने अर्काइव को देखना जिसमें कुछ मीठी यादें हैं।

अश्विन को याद आई मांकडिंग: बीते साल आइपीएल में भारतीय गेंदबाज रविचंद्रन अश्विन ने जोस बटलर को मांकडिंग आउट किया था। अश्विन ने उस घटना को याद करते हुए एक ट्वीट किया है। इसके जरिए अश्विन ने हल्के-फुल्के अंदाज में लोगों से लॉक डाउन के दौरान घर से बाहर न निकलने की अपील की है। अश्विन ने ट्वीट किया, हा-हा-हा, किसी ने मुझे यह भेजा और बताया कि आज ही के दिन एक साल पहले यह रन आउट हुआ था।

कोहली-अनुष्का का ज्ञान

नई दिल्ली: विराट कोहली और उनकी पत्नी अनुष्का शर्मा ने ट्विटर पर वीडियो पोस्ट कर लोगों से घर रहने की अपील की है। अनुष्का ने कहा कि कोरोना वायरस से जंग जीतने के लिए समय लगेगा और हौसला लगेगा। विराट ने कहा कि सबसे ज्यादा लगेगा आपका संयम और जिम्मेदारी अगले 21 दिनों तक। एक लापरवाही के लिए देश को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

> हमारी सरकार ने हम सभी से यह विनती की है कि अगले 21 दिन तक हम घर से नहीं निकलें। फिर भी बहुत लोग इस निर्देश का पालन नहीं कर रहे हैं। हम सबका यह कर्तव्य है कि हम घरों में रहें। **सचिन तेंदुलकर**

> सुनने में आया है कि आप की अवस्था भी हमारी तरह है। पीएम मोदी ने 21 दिनों का पूरा देश लॉक डाउन करने का आदेश दिया है। आप इस निर्देश का पालन करें। हम कोरोना को हराएंगे और इससे बाहर निकलेंगे। कृपा कर के अपने घर में रहें। **केविन पीटरसन,** पूर्व इंग्लिश बल्लेबाज

धवन ने धोए कपड़े और साफ किया बाथरूम

नई दिल्ली: भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज शिखर धवन ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर किया है जिसमें वह कपड़े धोते और बाथरूम साफ करते हुए नजर आ रहे हैं। इसके अलावा वह वीडियो में पत्नी आयशा से फटकार खाते हुए भी नजर आ रहे हैं। धवन की पत्नी शीशे के सामने तैयार हो रही हैं।

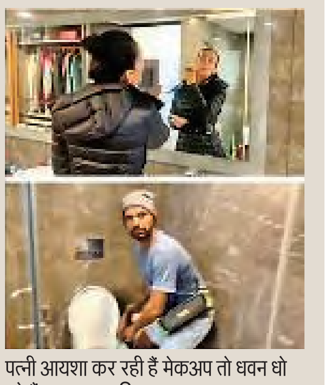

पत्नी आयशा कर रही हैं मेकअप तो धवन धो रहे हैं बाथरूम • ट्विटर

> भारत सरकार ने कोरोना के खिलाफ जरूरी कदम उठाए हैं और हमारी जिम्मेदारी है कि हमें उनका पालन करना चाहिए। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि सभी लोग अपने घरों पर ही रहें। **सुरेश रैना,** भारतीय क्रिकेटर

> कोरोना महामारी के खिलाफ हमें अच्छे से हाथ धोना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील हर हाल में माननी होगी। लोगों को कोरोना से बचना है तो उन्हें घर पर ही रहना चाहिए। **सीके खन्ना,** पूर्व बीसीसीआइ कार्यवाहक अध्यक्ष

टोक्यो ओलंपिक अगले साल गर्मियों में होने की उम्मीद

आइओसी अध्यक्ष बाक ने कहा, ओलंपिक स्थगित होने से सभी को करना होगा बलिदान

लुसाने, एएफपी: अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आइओसी) के अध्यक्ष थॉमस बाक ने बुधवार को कहा कि टोक्यो ओलंपिक अगले साल गर्मियों (जून, जुलाई, अगस्त) से पहले हो सकते हैं लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि इन खेलों के कार्यक्रम को बनाना मुश्किल चुनौतीपूर्ण होगा। जापान के प्रधानमंत्री एबी शिंजो और बाक ने मंगलवार को इस साल होने वाले टोक्यो ओलंपिक को अगले साल के लिए स्थगित कर दिया था।

बाक ने बुधवार को प्रेस कांफ्रेंस में कहा, 'खेलों के स्थगित होने का मतलब है कि सभी पक्षों को बलिदान करने होंगे। आइओसी की भूमिका खिलाड़ियों के ओलंपिक स्वप्न साकार करने की है। मैं शुरू से ही कहता आया हूं कि खेलों को रद करने के पक्ष में आइओसी नहीं है। नया कार्यक्रम बनाने के लिए 'हेयर वी गो' कार्यबल बनाया गया है। सबसे पहले देखना होगा कि क्या विकल्प है। हमें ओलंपिक खेलों के आसपास के खेल कार्यक्रम भी ध्यान में रखना होगा। खेल गर्मी में कराए जा सकते हैं लेकिन हमारे पास सारे विकल्प खुले हैं।' आइओसी गुरुवार को 33 अंतरराष्ट्रीय महासंघों से कांफ्रेंस कॉल के जरिये बात करेगा।

ओलंपिक स्थगित होने से खेलगांव को लेकर नई दुविधा: टोक्यो बे के सामने बने सैकड़ों आलीशान अपार्टमेंटों में जुलाई अगस्त में जमकर रौनक लगने वाली थी, लेकिन अब ओलंपिक स्थगित होने से आयोजकों के सामने नई दुविधा पैदा हो गई है क्योंकि खेल गांव के ये महंगे अपार्टमेंट पहले ही बिक चुके हैं। इस खेल गांव में 11000 खिलाड़ियों को रहना था। शहर का अद्भुत नजारा दिखाते इन अपार्टमेंट में कुछ फ्लैट की कीमत 15 लाख डॉलर (करीब 12 करोड़ रुपये) तक है। अब इन्हें खरीदने वालों के सामने अनिश्चितता की स्थिति बन गई है। टोक्यो प्रॉपर्टी सेंट्रल की निदेशक जो वॉर्ड ने कहा, 'खरीदारों को इससे बड़ी असुविधा होगी। करार में लिखा है कि प्राकृतिक आपदा या विक्रेता के नियंत्रण के बाहर की चीजें इस वर्ग में आएंगी। दाम गिरने को लेकर भी चिंता है। ओलंपिक को लेकर रोमांच और उत्साह खत्म होने के बाद हालात खराब हो जाएंगे। अभी तो सौदे रद होने की भी चिंता है।'

भारतीय कोचों को फिर से तैयार करना होगा खाका: अब तक लगभग 80 भारतीय एथलीटों ने ओलंपिक के लिए क्वालीफाई किया है और क्वालीफायर के दोबारा शुरू होने के बाद यह संख्या बढ़ने की उम्मीद है। भारतीय निशानेबाजों को जल्द ही रेंज सिमुलेटर-एसआइयूएस एस्कॉर की इलेक्ट्रानिक लक्ष्य प्रणाली मुहैया कराई जाएगी जिससे वे इंडोर में भी अच्छी तरह से अभ्यास कर पाएंगे। अपने जमाने के दिग्गज निशानेबाज और राष्ट्रीय पिस्टल कोच जसपाल राणा ने कहा, 'हम पहले ही इसे पाने के लिए काम कर रहे हैं लेकिन इसमें अब भी एक महीने का समय लग सकता है। एसआइयूएस एस्कॉर रेंज से निशानेबाजों को इंडोर अभ्यास करने में मदद मिलेगी।' ओलंपिक के लिए नौ मुक्केबाजों और इतनी ही संख्या में ट्रैक एवं फील्ड खिलाड़ियों ने क्वालीफाई किया है। मुक्केबाजी टीम के कोच सैंटियागो नीवा ने कहा, 'मैं 2021 खेलों की तारीखों की घोषणा होने के बाद ही योजनाओं को फिर से तैयारी करूंगा। हमें यह जानने की जरूरत है कि अगले क्वालीफायर कब हैं। हम वास्तव में चिंतित नहीं हैं क्योंकि हमने 13 में से नौ भार वर्ग में क्वालीफिकेशन हासिल किए हैं।' वहीं, राष्ट्रीय बैडमिंटन कोच पुलेला गोपीचंद ने कहा, 'मुझे लगता है कि एक साल अच्छा समय है। हमारे पास लय हासिल करने का पर्याप्त समय होगा। इसलिए, मुझे नहीं लगता कि तैयारी पर कोई समस्या या नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।' कुश्ती के कोच वाल्लेर एकोस ने के कहा, 'विनेश के लिए इसका सकारात्मक पहलू यह है कि हमें सर्वश्रेष्ठ प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ तैयारी करने के लिए एक साल और मिल रहा है। बजरंग की तैयार भी अच्छी चल रही है और ये दोनों हमारे पदक के दावेदारों में शामिल हैं।'

कोरोना का असर

- लियोन मेसी और मैनचेस्टर सिटी के मैनेजर पेप गॉर्डियोला ने करीब आठ करोड़ 20 लाख रुपये दान देने की घोषणा की।
- रोजर फेडरर करीब सात करोड़ 76 लाख रुपये की मदद करेंगे।
- विश्व एंटी डोपिंग एजेंसी ने आइओसी के ओलंपिक को एक साल के लिए स्थगित करने के फैसले को सही ठहराया।
- जर्मनी की फुटबॉल लीग बुंडिशलीगा 30 अप्रैल तक के लिए स्थगित हुई।
- पेरिस ओलंपिक पर असर नहीं।
- उद्घाटन समारोह के 122 दिन शेष रहने के बाद टोक्यो में ओलंपिक की काउंटडाउन घड़ी को बंद कर दिया गया।
- नोवाक जोकोविक ने कहा खिलाड़ियों के स्वास्थ्य को देखते हुए ओलंपिक स्थगित करना सही।
- शतरंज ओलंपियाड-2020 को अगले साल तक टाल दिया गया है।

लुसाने में बुधवार को प्रेस कांफ्रेंस के दौरान टोक्यो ओलंपिक गेम्स के बारे में जानकारी देते अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के अध्यक्ष थॉमस बाक। रायटर

रस्सी कूदकर फिट रहेंगे एथलीट

नई दिल्ली, जेएनएन : कोरोना महामारी के बीच देश में चल रहे 21 दिनों के लॉकडाउन के बीच खेल मंत्री किरन रिजिजू ने एथलीटों से इस दौरान फिट रहने की अपील की और कहा कि वे रस्सी कूद कर यह कर सकते हैं। रिजिजू ने यह अपील फिट इंडिया मूवमेंट के तहत की है और उनके इस अपील पर देश के शीर्ष खिलाड़ियों ने भी समर्थन किया है।

रिजिजू ने कहा कि एथलीट अपने घर पर ही रस्सी कूद से फिट रह सकते हैं और इससे दूसरे लोगों का भी हौसला बढ़ेगा। वहीं, बजरंग पूनिया ने कहा कि मैं आप सभी से निवेदन करता हूं कि आप घर में दो या तीन मिनट के लिए रस्सी जरूर कूदें। यह हमारी फिटनेस के लिए बहुत अच्छी एक्सरसाइज है और इससे हम हमारे फिट इंडिया मूवमेंट को भी आगे बढ़ा सकते हैं। वहीं, दिग्गज मुक्केबाज एमसी मेरी कॉम ने भी रस्सी कूदने का वीडियो ट्विटर पर शेयर किया। उधर, भारतीय निशानेबाज अंजुम मोदगिल ने इंस्टाग्राम पर वीडियो पोस्ट करते हुए लिखा कि आप रस्सी कूद को घर पर आसानी से कर सकते हैं।

मध्य प्रदेश के भिंड-मुरैना क्षेत्र में फैला बर्ड फ्लू, प्रशासन हरकत में आया

नईदुनिया, मुरैना

> दो हफ्तों से अलग-अलग क्षेत्रों में मर रहे हैं पक्षी, पोरसा में कौओं के मौत भी बर्ड फ्लू के कारण हुई

मध्य प्रदेश के भिंड व मुरैना जिलों में दो हफ्तों से अलग-अलग क्षेत्रों में बर्ड फ्लू से पक्षियों की मौतें हो रही हैं। पोरसा में गत रविवार को 30 कौओं की मौत भी भिंड के मेहगांव में मुर्गों की तरह बर्ड फ्लू से ही हुई थी। मृत कौओं के भोपाल में पोस्टमॉर्टम की रिपोर्ट में बर्ड फ्लू से मौत की पुष्टि हुई है।

रिपोर्ट मिलने के बाद मुरैना के कलेक्टर डॉ. प्रियंका दास ने वन मंडलाधिकारी को पत्र लिखकर आवश्यक कार्रवाई को कहा है। पत्र में मृत पक्षियों की मिलने की जगह से 10 किलोमीटर के दायरे में प्रोटोकोल का पालन करने तथा डिसइंफेक्शन स्प्रे कराने का निर्देश दिया गया है। उधर, मुरैना जिले के कुरैठा पंचायत के हरिहर का पुरा गांव के तालाब में मछलियों के मरने का मामला सामने आया है।

उल्लेखनीय है कि रविवार को पोरसा कस्बे के जनता मांटेसरी स्कूल परिसर में लगे पेड़ों से अचानक ही कौए गिरकर मरने लगे थे। 30 से ज्यादा कौओं की मौत हो गई थी। पोरसा पशु चिकित्सा सेवा विभाग ने दो मृत कौओं को जांच के लिए डायरेक्टर, राष्ट्रीय उच्च सुरक्षा पशुरोग संस्थान भोपाल भेजा था। इसकी रिपोर्ट में पुष्टि हुई है कि इन कौओं की मौत एच5 एन1 बर्ड-फ्लू वायरस के कारण हुई है।

गौरतलब है कि पोरसा में कौओं की मौत से पहले भिंड जिले के मेहगांव में 15 मार्च को 200 से ज्यादा मुर्गे-मुर्गियां मृत मिली थीं। इनमें भी बर्ड फ्लू की पुष्टि हुई थी। इसके बाद 16 मार्च को भिंड में 50 से ज्यादा कौओं की मौत हुई थी।

पांच दिन पहले मरी मछलियां नहीं निकालीं : पक्षियों की मौत के साथ ही यहां मुरैना जिले के हरिहर का पुरा गांव के तालाब में पांच दिन पहले सैकड़ों मछलियों की मौत हो गई, लेकिन अभी तक यहां कोई जांच करने नहीं आया। मृत मछलियां तालाब में ही पड़ी हैं। इनसे इन्फेक्शन होने का खतरा भी मंडरा रहा है।

झारखंड में लॉकडाउन में गांव में घूमने पर हिंसक झड़प, एक की मौत

जागरण संवाददाता, पलामू : झारखंड के पलामू में कोरोना संक्रमण की आशंका से ग्रसित दो पक्षों में जमकर हुई मारपीट में एक की मौत हो गई, जबकि दोनों पक्षों के कई लोग घायल हो गए। यह घटना तब घटी, जब पिछले दिनों राजस्थान और महाराष्ट्र से कामकर लौटा एक युवक घूमते हुए एक ग्रामीण के घर के समीप पहुंच गया। मृतक के बेटे ने इस पर आपत्ति जताई तो विवाद बढ़ा और यह घटना घटी। राजस्थान और महाराष्ट्र से लौटने के बाद अस्पताल में जांच के बाद डॉक्टरों ने सभी युवकों को एहतियात के तौर पर घर में रहने की सलाह दी थी। इससे इतर सोमवार शाम एक युवक घूमते हुए किसी के घर की ओर निकल पड़ा। इस पर एक ने आपत्ति जताई। इसके बाद दोनों में तू-तू मैं-मैं हुई और इसके बाद यह घटना हुई।

कैदियों की रिहाई के आदेश पर अमल कराने की मांग को लेकर याचिका

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दाखिल हुई है जिसमें कोर्ट से कैदियों की रिहाई के आदेश पर अमल सुनिश्चित कराने की मांग की गई है। साथ ही कहा गया है कि रिहा किए होने वालों को कर्फ्यू पास के अलावा दिहाड़ी मजदूर मानते हुए उन्हें आर्थिक मदद भी मुहैया कराई जाए। बुधवार को कोर्ट में यह याचिका सेंटर फार अकाउंटबेलिटी एंड सिस्टेमेटिक चेंज (सीएएससी) ने दाखिल की है। इसके अलावा एक अन्य संस्था ने मुख्य न्यायाधीश को ज्ञापन भेजकर कोरोना के चलते असम के डिटेंसन सेंटर में बंद विदेशियों को तत्काल रिहा किए जाने का आदेश मांगा है। यह ज्ञापन जस्टिस एंड लिबर्टी इनीशिएटिव संस्था ने ईमेल के जरिये भेजा है।

सुप्रीम कोर्ट ने दो दिन पहले जेलों में बंद कैदियों की कोराना संक्रमण से सुरक्षा करने के लिए कई आदेश दिए थे। एक निर्देश सात साल या उससे कम सजा के अपराध में दोषी और ऐसे अपराधों में विचाराधीन कैदियों को उचित समय के लिए पैरोल या अंतरिम जमानत पर रिहा करने के बारे में विचार करने को कहा गया था। सुप्रीम कोर्ट ने इसके लिए सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को उच्चस्तरीय समिति गठित करने का आदेश दिया था। कोर्ट ने किसे जमानत और पैरोल दी जाएगी यह तय करने का अधिकार उच्चस्तरीय समिति को दिया था। कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेने के बाद ये आदेश दिए थे। सीएएससी की ओर से ऑनलाइन दाखिल की गई याचिका में सुप्रीम कोर्ट से कोरोना संकट के चलते कैदियों की रिहाई के गत 23 मार्च के आदेश पर अमल सुनिश्चित कराने का आग्रह किया गया है। अर्जी में कहा गया है कि कोरोना के चलते अमेरिका और ईरान में भी बहुत से कैदी रिहा किए गए हैं। भारत में चल रहे कोरोना संकट को देखते हुए कोर्ट कैदियों की रिहाई के आदेश पर अमल की रिपोर्ट राज्यों से मांगे। इसके साथ ही रिहा होने वाले कैदियों को कर्फ्यू पास जारी किए जाएं और उन्हें दिहाड़ी मजदूर मानते हुए आर्थिक मदद भी मुहैया कराई जाए। अर्जी में मांग की गई है कि कोर्ट मामले पर जल्दी से जल्दी वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये सुनवाई करे।

दैनिक जागरण
सबरंग
साहित्य के...
नई दिल्ली, गुरुवार, 26 मार्च, 2020
सुझाव व प्रतिक्रिया के लिए लिखें : sabrang@nda.jagran.com
https://www.facebook.com/jagransabrang/

उम्मीद रखें, 21 दिन तक घर में बंद रहे तो
ये संकट टल जाएगा

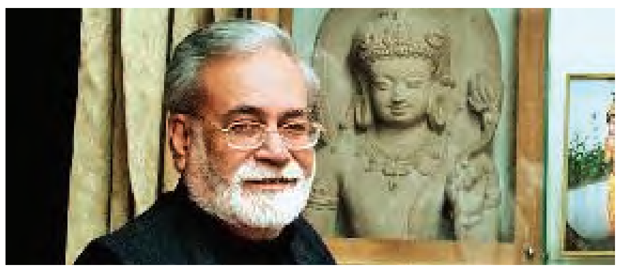
नरेंद्र कोहली
फाइल फोटो

कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए पूर देश में लॉकडाउन जारी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में साफ कहा कि ये लॉकडाउन कर्फ्यू जैसा ही है। दिल्ली में लंबे समय से रह रहे और अपनी जिंदगी के अस्सी बसंत देख चुके ख्यातिप्राप्त साहित्यकार-लेखक नरेंद्र कोहली इस लॉकडाउन से बिल्कुल परेशान नहीं हैं। कर्फ्यू जैसे हालात की बात करते हुए वो भारत विभाजन के दिनों को याद करते हैं, '1947 में जब मैं और मेरा पूरा परिवार सियालकोट, पाकिस्तान से निकलकर हिन्दुस्तान के लिए चले थे तो वहां कर्फ्यू लगा था। जान का खतरा तब भी था, जान का खतरा अब भी है। तब जान लेने वाला सामने से आ रहा था अब जान लेनेवाला अदृश्य है। सियालकोट से जब मैं और मेरा पूरा परिवार रावी नदी के डेरा बाबा नानक पुल पर पहुंचे थे तो हमें मालूम था कि अगर हमारी जान गई तो कौन हमारी जान लेगा, थोड़ी चिरौरी करने पर जान बचने की उम्मीद भी थी। इस वक्त तो हम सिर्फ ये जानते हैं कि कोरोना वायरस की वजह से जान जा सकती है लेकिन न तो चिरौरी की गुंजाइश है और ना ही कोई और रास्ता है, रास्ता है तो बस एक कि घर के अंदर रहो। लेकिन प्राणों का संकट तब भी उतना ही था अब भी उतना ही है। पहले वाले में संकट जमीन पर चलकर आता था और इस बार संकट हवा से आया है, एक दूसरे के पास जाने से बढ़ता है।

'जब हम डेरा नानक पुल के नीचे रेलवे लाइन से वहां पहुंचे तो वो पाकिस्तानी इलाका था और पुल भारत के हिस्से में था। हमें ऊपर पहुंचना था। किसी तरह जान बचाकर पुल के ऊपर पहुंचे तो हमें भारतीय सेना मिली। जान में जान आई। हमें खाने को रोटी और सूखे चने मिले। पुल के बगल के मैदान में बिठा दिया गया था कि सुबह सभी को गंतव्य तक पहुंचाने की व्यवस्था की जाएगी। रात को अचानक बहुत तेज बारिश होने लगी। आप कल्पना करिए कि ऊपर से बारिश और नीचे जमीन की बहती मिट्टी। मुझे तो ऐसा अनुभव कभी नहीं हुआ। इन सारी स्थितियों को झेलते हुए हम अमृतसर पहुंचे।'

'जब हम दिल्ली पहुंचे थे तो कर्फ्यू तो नहीं था लेकिन हालात एकदम असामान्य थे। आज याद आता है सियालकोट का ही एक और प्रसंग। जब विभाजन हुआ था तो मेरे मामा जम्मू जा रहे थे क्योंकि वहां का राजा हिंदू था। तब मेरे पिताजी ने मुझे और मेरे भाई को मामा जी के साथ जम्मू जाने को कहा था। हम कूचेदानी से जैसे ही बाहर निकले तो पाकिस्तानी सेना हमारे सामने आ गई। हम दोनों भाई तो वापस भाग गए लेकिन मामा जी पाकिस्तानी सेना के कहने पर रुके रहे। बाद में मामा जी को सैनिकों ने छोड़ दिया लेकिन उसके पहले वो एक आदमी को गोली से उड़ा चुके थे। मेरा मानना है कि जब वो दौर निकल गया ते ये दौर भी निकल जाएगाा। तब हमारे हाथ में ज्यादा कुछ नहीं था लेकिन इस वक्त हमारे हाथ में सब कुछ है। अगर हम 21 दिनों तक घर में बंद रहे तो ये संकट टल जाएगा, ऐसी मुझे उम्मीद है।

(अनंत विजय से बातचीत पर आधारित)

कोरोना को हराना है

कागज कलम दवात...
कोरोना पर हौसले का प्रहार

थम गई दिल्ली की रफ्तार, सूनी हो गई गलियां और खाली हो गईं सड़कें। ऐसी स्थिति में घबराना नहीं बल्कि ये तो घर

इंद्रनाथ चौधरी

बैठी जनता की एकजुटता का प्रमाण है। निश्चित ही इसके सुखद परिणाम भी होंगे। वरिष्ठ लेखक इंद्रनाथ चौधरी कहते हैं कि हमारे पास करने के लिए बहुत-सी चीजें हैं। जिनके अंदर लेखन की प्रतिभा है वह घर पर बैठकर कुछ क्रियात्मक लेखन कर सकते हैं। जो खेलों में रुचि रखते हैं, वह इंडोर गेम्स लूडो, कैरम, शतरंज आदि खेलकर मनोरंजन कर सकते हैं। इन खेलों में समय का भी पता नहीं चलता। और परिवार में प्रेमभाव की भी अनुभूति होती है। मैं घर पर बैठकर स्वामी विवेकानंद पर किताब लिख रहा हूं। अब तक निश्चिंत होकर स्वामी विवेकानंद के पांचवे पाठ पर आ गया हूं। सात पाठ लिखे जाएंगे। न ही कोई परेशानी है क्योंकि राशन, दूध आदि की दुकानें खुली हैं कहीं कोई परेशानी की बात ही नहीं है। मैं पांच दशक से योग कर रहा हूं। रविवार को जब जनता कर्फ्यू था तो उस दिन टीवी पर बाबा रामदेव का योग कार्यक्रम देखा जिसमें एक नया योग भस्त्रिका सीखा जो एक अच्छी योगिक क्रिया है। सीखने की कोई उम्र नहीं होती है। ऐसी स्थिति में लोगों को घर पर रहना चाहिए बाहर निकलकर कानून नहीं तोड़ना चाहिए। सभी नागरिक प्रशासन का साथ दें ताकि कोरोना जैसे वायरस के संकट से जल्द ही हम बाहर आ पाएं।

ममता कालिया

घर में रहिए, डर में मत रहिए : सभी हौसला बढ़ा रहे हैं एक दूसरे को हिम्मत दे रहे हैं। साहित्यिक समाज का तो यह दायित्व ही रहा है। लेखिका ममता कालिया कहती हैं देखो आज...प्रवीण जी ने कितनी स्वस्थ सकारात्मक पोस्ट लगाई, 'घर में रहिए, डर में मत रहिए। विश्व ने इसके पूर्व भी कई महामारियां देखी हैं। उपन्यासों में प्लेग का चित्रण और हैजा का विवरण रोंगटे खड़े कर देता था। गांव के गांव साफ हो जाते थे। कुनबे के कुनबे निरवंशिया रह जाते। अक्सर महामारी के बाद आता दुर्भिक्ष यानी अकाल पड़ता है। इसी को लक्ष्य कर नागार्जुन ने वह आठ पंक्तियों की कविता लिखी 'अकाल' जिसमें इस दुष्काल की दारुणता और भयावहता दोनों व्यक्त हुई 'कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।'

इसी तरह राष्ट्रकवि दिनकर ने कितना पहले, कितना सही सिखा था...

'मैं भारत के रेशमी नगर (रेशमी नगर दिल्ली के लिए ही लिखा गया है) में रहता हूं, जनता तो चट्टानों का बोझ सहा करती है। मैं चांदनियों का बोझ किसी विध सहता हूं। गंदगी, गरीबी, मैलेपन को दूर करो। शुद्धोधन के पहरेवाले चिल्लाते हैं। है कपिलवस्तु पर फूलों का शृंगार पड़ा, रथ-समारूढ़ सिद्धार्थ घूमने जाते हैं।' इतनी विपदाओं से हम लड़े हैं, इस महामारी से भी लड़ेंगे। और अंत में कृष्ण कालिया के शब्दों में, 'किसी के चलाए नहीं चल रही यह दुनिया यह संसार, अपने ही हिचकोलों से अपने आप चलायमान है। यह पृथ्वी अपने आलय पर झूल-झूम रही है। आलय एक स्वच्छंद हिलते डुलते तरुवर का नाम है। जिस पर यह जग झूल रहा है (सरहपाद)।

हरीश नवल

सच में मानव हो गए... : साहित्यकार हरीश नवल यथास्थिति में सचमुच मानव हो जाने का भाव तलाश रहे हैं। सच भी है हरीश कहते हैं कि हम सच में आज मानव हो गए हैं। और इंसानियत का यह वृहत रूप, कष्ट की इस घड़ी में एक महामारी ने प्रकट करवा दिया है। मैं नई दिल्ली की एक कॉलोनी पश्चिम विहार में रहता हूं, जहां साक्षरा अपार्टमेंट्स नाम से एक दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों की आवासीय समिति है। जब ये अपार्टमेंट बने थे, तब हम यहां के 110 सदस्य युवा थे। यह 36 वर्ष पूर्व की बात है। आज ये सदस्य जो अभी भी इस आवासीय समिति में रह रहे हैं, सभी अवकाशप्राप्त हैं। 65 की आयु से लेकर 80 वर्ष के हैं। प्राय सभी के बच्चे विदेश में हैं। मेरी दोनों बेटियां भी विदेश में हैं, बड़ी इटली में और छोटी अमेरिका में रहती है। साक्षरा अपार्टमेंट के सीनियर सिटिजन इस कोरोना काल में वे बहुत विचलित हैं। कारण स्पष्ट है, जिन देशों में उनके बच्चे रह रहे हैं। वहां लॉकडाउन हैं, लगभग कर्फ्यू सी स्थिति है। वे अपने देश वापस नहीं आ सकते और हम अब भारत में भी वहीं जैसे हालात हैं तो हम भी वहां नहीं जा सकते। हम अभी तक अपने बच्चों के प्रति चिंतित थे। विशेषकर इटली व यूरोप में रहने वाले बच्चों के प्रति, किंतु अब वे हमारे लिए चिंतित हो रहे हैं। पहले हम फेस टाइम या वाट्सएप पर उन्हें बार-बार देखना चाहते थे, आज वे हमें देखना चाहते हैं क्योंकि वे भी जानते हैं कि यदि स्थिति की गंभीरता को समझकर भारतीय नागरिक जरा भी कोताही बरतेंगे, तो भारत टूट जाएगा। हम साक्षर निवासियों ने संकल्प लिया कि हम वही करेंगे जो सर्वथा उचित है। घर में रहेंगे, अपनी क्षमताओं को मजबूत करेंगे, स्वछता का ध्यान रखेंगे, हम वरिष्ठ अध्यापक रहे हैं, गुरुपद का दायित्व निभाएंगे। हम भी कुशल रहेंगे और विदेश में रह रहे बच्चों को निश्चिंतता का भाव देंगे।

कानन झींगन

पीएम के संदेश को 'वेदव्यास' समझकर अनुसरण करें : दिल्ली लॉकडाउन प्राणों पर संकट हो तो सारी सीमाएं टूट जाती हैं। चाहे वह व्यक्तिगत हों, देश की हों या दुनिया की। अब संसार की परिभाषा बदल गई है। गतिशीलता स्वभाव आज जड़ता की ओर जा रहा है। धर्म के सारे संस्थान मौन हो गए हैं। ऐसी स्थिति में कहना चाहूंगी कि लोगों का घबराने की जरूरत नहीं है। कानन झींगन कहती हैं कि यह संकट की घड़ी टल जाएगी बस सभी लोग सहयोग करें। आज प्रधानमंत्री के कट्टर विरोधी भी उनके उनके आदेश को 'वेदव्यास' समझकर अनुसरण कर रहे हैं। नास्त्रेदमस की पुस्तक एक बार फिर खुल गई है तत्वमीमांसा का कहना है जो हो रहा है वो तो होना ही था। इसका अर्थ है कि लोग कोरोना वायरस से बचाव के लिए तरह-तरह के सुझाव दे रहे हैं लेकिन आप अपने घरों में रहें, सुरक्षित रहें क्योंकि जो होना है उसे कोई रोक नहीं सकता। आपकी सुरक्षा आपके हाथ में है।

पुष्पा राही

कर्फ्यू पर है मेरा पेट : पुष्पा राही, जिन्होंने वर्तमान हालात पर बहुत सुंदर कविता भी लिखी है। कहती हैं कि बीते रविवार के मेरे अनुभव से आप समझ सकती हैं और उसी में मेरा संदेश भी छिपा है। हमारे परिवार में हम सात लोग हैं सभी लोगों ने बॉलकोनी में खड़े होकर, ताली, थाली, घंटी बजाई। सबसे ज्यादा उत्साह मेरे पोते में था। वह क्षण ऐसा था कि देश की एकता को देखकर मेरी आंखो में आंसु आ गए थे। इससे पहले कभी ऐसा नजारा नहीं देखा था। मैं यह सब इसलिए बता रही हूं। भले हम एक बीमारी के डर से घरों में कैद हुए हैं लेकिन इसे समझिए, बोझ की तरह मत मानिए इसे। एक और चीज बताती हूं रविवार को मेरा पेट साफ नहीं हुआ था तो मुझे महसूस हुआ कि जैसे मेरा पेट भी कर्फ्यू पर है तो मैंने कविता लिख डाली

'कर्फ्यू पर है मेरा पेट यह भी हुआ आज लमलेट 22 मार्च बीस सौ बीस सेल्फ कर्फ्यू वाली डेट

कर्फ्यू पर है मेरा पेट
मेदी जी का है आदेश
मान रहा है पूरा देश
घर में रहो पकाओ खीर
और पिलाओ लस्सी फेंट
कर्फ्यू पर है मेरा पेट
कोरोना वायरस की है मार
दुनियाभर पर इसका वार
आंसु बम से ज्यादा घातक
खोले इसने सारे गेट
कर्फ्यू पर है मेरा पेट
इसके वायरस के सैनिक
फैला रहे घोर पैनिक
बड़ा कठिन इनसे बचना
नरभक्षी है इनकी हेट
कर्फ्यू पर है मेरा पेट...
कब तक आखिर प्रकृति सहे
कब तक दरियादिली बहे
फूटा है उसका गुस्सा
स्वीकारो अब उसकी भेंट
कर्फ्यू पर है मेरा पेट
प्रकृति तंग हुई हमसे
सहन कर रही है कबसे
करते जब हम उसे कुरुप
पड़ती है तब उसकी रेड
कर्फ्यू पर है मेरा पेट
कोरोना नहीं प्रलय है यह
पछताने का समय है यह
अगर बचानी है अपनी जान
खान-पान की बदलो प्लेट
कर्फ्यू पर है मेरा पेट
वरना कोरोना जैसा रोग
जहर देगा सब भोग
जीवन है तो दुनिया है
करो न अपनी ही आखेट
कर्फ्यू पर है मेरा पेट'

मुरली मनोहर प्रसाद

प्रमाणिक चीजें पढ़ें : मुरली मनोहर प्रसाद कहते हैं कि यह समय ऐसा कि हमें घर रहकर अच्छी और प्रमाणिक चीजें पढ़नी चाहिए। मैं और मेरी पत्नी रेखा जी भी कोरोना से संबंधित चीजें पढ़ रहे हैं। यह क्यों और कैसे इतनी तेजी से फैल रहा है। हम खुद को इससे कैसे बचाए रख सकते हैं। मैंने रविवार को बहुत सारी चीजें पढ़ीं कि किस तरह विज्ञान इससे लड़ने का प्रयास कर रहा है। चीन भी पिछले 15 वर्षों से इस पर शोध कर रहा है। हमने जो विकास का मॉडल अपनाया है उसमें प्रकृति के साथ बहुत छेड़छाड़ हुई है। जिस कारण बहुत सारे वायरस हैं जो जानवरों को छोड़-छोड़कर उड़ रहे हैं। इसलिए इस तरह की बीमारियां फैल रही हैं। हमे सतर्क होना होगा, संयम से रहना होगा।

अशोक वाजपेयी

थोड़ा लिखने और ज्यादा पढ़ने का समय : यह ऐसा अवसर है कि हम थोड़ा लिखें और ज्यादातर पढ़ें। बहुत सारी अच्छी किताबें हैं जो मैंने पढ़ी थीं उन्हें दोबारा पढ़ने का मौका मिल गया। दूसरी बात पुस्तकों से आप दूसरों से संबंधित रहते हैं। जिनसे हम भौतिक रूप से संपर्क नहीं कर सकते वह पुस्तकों के माध्यम से हमारे जीवन में बने रहते हैं। यह कहना है वरिष्ठ साहित्यकार अशोक वाजपेयी का।

कहते हैं कि अब जो जनजीवन है फिलहाल 14 अप्रैल तक भौतिक रूप से बंद हो गया है। उस जीवन से पुस्तकें आपका संपर्क और संवाद बनाए रखेंगी इसलिए जितना हो सके किताबों के साथ समय बिताएं। लोगों को भी घरों में बैठकर पुस्तकें पढ़नी चाहिए। अब स्थिति ऐसी है कि कुछ बेचैनी तो होती है कि हम कहीं बाहर जा नहीं सकते, किसी से मिल नहीं सकते लेकिन हमें घबराना नहीं है। संयम से काम लेना है और अपने परिवार व समाज के बारे में सोचना है। जनहित की दृष्टि से यह बंदिश स्वीकार करना जरूरी है। लोग घरों में बंद हैं तो जनजीवन तो प्रभावित होगा ही लेकिन इससे पारिवारिकता बढ़ेगी। लोग घर में परिवार के साथ समय बिताने के लिए थोड़ा बेहतर अभयस्त हो जाएंगे। दूसरी तरफ इन चीजों की ओर भी ध्यान जाएगा कि हमारी क्या व्यवस्थाएं हैं, वह कैसे बेहतर हों और कैसे हम खुद को सुरक्षित रखें। हम सब कुछ राजनेताओं पर नहीं छोड़ सकते। इससे दो दुखद सबक भी हैं एक सबक यह कि आप दूसरों की उपेक्षा करके सिर्फ अपने लिए ही कुछ करते जाएं तो यह अब संभव नहीं होगा क्योंकि दूसरे जो कर रहे हैं और आप जो कर रहे हैं उससे बहुत सी चीजें प्रभावित होती हैं। दूसरा सबक जिन चीजों के बारे में आप नहीं जानते हैं और ऐसी बहुत सी चीजें हैं जिनके बारे में आप जरूरत से ज्यादा जानते हैं उसमें संतुलन बनेगा।

प्रस्तुति : मनु त्यागी, रितु राणा

बातचीत

दिल्ली हर संकट से पार पा लेती है

वरिष्ठ साहित्यकार कमल किशोर गोयनका। खानदानी व्यापार की परंपरा को छोड़ते हुए दिल्ली आकर पढ़ने का सपना देखा, पूरा भी किया। 40 वर्ष हिंदी के प्रोफेसर के रूप में अध्यापन किया। आपातकाल में चार माह तिहाड़ जेल का दंश भी झेला। उस दौर में भी उन्होंने आज जैसे कोरोना संक्रमण से जूझ रहे देश के हालात नहीं देखे थे। लेकिन इस संक्रमण पर जीत हासिल करने के लिए पूरा देश जिस तरह सक्रिय भूमिका निभा रहा है, यह वाकई दिलेरी है, और दिल्ली पर तो मुझे पूरा भरोसा है, वह हर संकट से जीत लेती है। दिल्ली आने से लेकर साहित्य की दुनिया से जुड़ने तक के सफर पर कमल किशोर गोयनका से रितु राणा ने विस्तार से बातचीत की। प्रस्तुत हैं प्रमुख अंश :

● परिवार के विपरीत जाकर, दिल्ली आकर पढ़ाई करना, कितना चुनौतीपूर्ण था?

- हां, दरअसल मेरे परिवार का मन था मैं व्यापार करूं लेकिन मुझे दिल्ली आकर आगे की पढ़ाई करनी थी। परिवार की परंपरा को तोड़ते हुए दिल्ली आया। ये 1958 की बात है, अपनी बड़ी बहन के पास कुछ समय चांदनी चौक में रहा। उस समय भविष्य स्पष्ट नहीं था कि मुझे क्या करना है लेकिन यह निश्चय लेकर आया था कि आगे पढ़ना है और जीवन में आगे बढ़ने का रास्ता बनाना है। अब मेरे सामने समस्या थी कि बहन के यहां भी व्यापार ही होता था। फिर मैंने पांचजन्य पत्रिका में 90 रुपये की नौकरी शुरू की। उसके बाद एक सरकारी नौकरी भी की। दिल्ली विवि में सांध्यकालीन कक्षा में दाखिला ले लिया था और 1961 में एमए हिंदी प्रथम श्रेणी से पास किया। बस यहीं मेरा लक्ष्य स्पष्ट हो गया कि दिल्ली से ही पीएचडी करके भविष्य बनाऊंगा। बुलंदशहर से आकर दिल्ली में मुझे एक बड़ी दुनिया दिखाई दी और उस दुनिया के साथ मैं धीरे-धीरे ढलता गया।

● दिल्ली विश्वविद्यालय पहुंचे तो कैसा माहौल मिला?

-उन दिनों दिल्ली विश्वविद्यालय में डॉ. नगेंद्र हिंदी विभाग के अध्यक्ष होते थे। और उस जमाने में उनका बौद्धिक आतंक था। वह बहुत अनुशासन में रहते थे मुझे उनका व्यक्तित्व खूब बौद्धिक एवं शोधपरक लगता था। पीएचडी में शोध के लिए मुझे प्रेमचंद विषय उन्होंने ही दिया था। उस समय साहित्यिक वातावरण बहुत अनुकूल और सुखद था। आगे चलकर उनकी बनाई परंपरा खराब होती गईं जिससे दिल्ली विवि की साहित्यिक श्रेष्ठता धीरे-धीरे कम होती गईं। तभी तो डॉ. धीरेंद्र वर्मा ने 1972 में हिंदी साहित्य कोष तैयार किया लेकिन आज तक उसका पुनर्लेखन नहीं हो सका। मैंने दिल्ली विवि में हिंदी विभाग में आए हर अध्यक्ष से कहा कि इस पर काम किया जाए लेकिन आज तक उस पर किसी ने काम नहीं किया। डॉ.नगेंद्र का बनाया हिंदी अनुसंधान परिषद भी नहीं बचा। विवि में भारतीय हिंदी परिषद का एक बड़ा राष्ट्रीय सम्मेलन तब शुरू हुआ था शुक्र है आज भी उसके आयोजन होते हैं। कला विभाग और विभिन्न कॉलेजों में उन दिनों खूब गोष्ठी होती थीं। पहले गोष्ठियों में लेखकों, शिक्षकों के साथ-साथ छात्र-छात्राएं भी उत्साह से भाग लेते थे लेकिन अब वह माहौल कम दिखाई देता है। डॉ. पूरनचंद टंडन अवश्य ही अपनी संस्था से अच्छा काम कर रहे हैं। मैंने प्रेमचंद के शोधकार्य के लिए आधी शताब्दी लगा दी, अब ऐसा कोई दूसरा उदाहरण देखने को नहीं मिलता है।

कमल किशोर गोयनका

● कॉफी हाउस के साहित्यिक अड्डे पर आपके कैसे अनुभव रहे?

- हां, पहले तो वहां जाए बगैर हर साहित्यकार का जीवन अधूरा ही लगता था। विष्णु प्रभाकर, धर्मेंद्र, राजकुमार सैनी, हरदयाल, आदि आते थे। मुझे याद है, उस समय में वहां कभी कोई लेखक राजनीति नहीं करता था। हां, कभी-कभार एक-दूसरे पर व्यंग्य जरूर कसते थे अपनी-अपनी रचनाओं पर बात करते थे। मैं बहुत वर्षों तक वहां गया था। एक और जगह थी, जहां मैं जाता था। वो थी डॉ. विनय की साहित्यिक मंडली। जिसमें मेरे साथ अश्वनी पराशर, नरेंद्र मोहन, महीप सिंह, सुखबीर सिंह और भी बहुत से साहित्यकार शामिल होते थे। बंगलो रोड स्थित डॉ. विनय के निवास स्थान पर ही गोष्ठी होती थी। हम सभी लोग वहां इकट्ठे होते थे और खुलकर साहित्य पर चर्चा करते थे।

● आप जाकिर हुसैन कॉलेज में थे तो वहां के रोचक संस्मरण भी रहे होंगे?

-कॉलेज में हमारे कई मुस्लिम साथी थे। लेकिन उनको लगता था कि गोयनका तो थोड़ा हिंदू माइंडेड आदमी है। एक बार की घटना है रमजान का महीना था हमारे एक मित्र प्रोफेसर ने मुझसे कहा कि गोयनका जी आज तो आप हमारे साथ रोजा खोलेंगे। उन्हें लगता था कि शायद मैं मना कर दूंगा लेकिन मैंने कहा हां, जरूर खोलेंगे। हम कई सारे शिक्षक व विद्यार्थी गोला लगाकर बैठ गए मेरे उन मित्र ने कहा शुरू करिए, मैंने एक केला उठाया और खा लिया। मेरे मित्र कहने लगे कि गोयनका जी आज तो आप मुसलमान हो गए। लेकिन मैंने भी उन्हें ऐसा जवाब दिया कि उन्होंने फिर कभी मुझसे कॉलेज में मजाक नहीं किया। मैंने कहा भाई आज मैं मुसलमान नहीं, आज तुम सब हिंदू हो गए। मेरे यहां बैठकर रमजान खोलेने से ऐसा प्रताप हुआ है कि आप सब हिंदू हो गए। ऐसे मजाक हमेशा चलते रहे और कभी सांप्रदायिकता का भाव पैदा नहीं हुआ। जाकिर हुसैन कॉलेज धार्मिक सद्भाव की बेमिसाल नजीर है। आपातकाल का दंश भी मैंने इसी कॉलेज में रहते झेला था जिसे आजतक भुला नहीं पाया।

● मतलब आपातकाल में क्या झेला था?

- आपातकाल के समय मैं जाकिर हुसैन कॉलेज के इवनिंग शिफ्ट का इंचार्ज था और कॉलेज में वाइस प्रिंसिपल के रूप में कार्यरत था। मैं 26 जुलाई 1975 को घर से रात एक बजे गिरफ्तार हुआ। अचानक से पुलिस आई और बिना कुछ बताए उठाकर ले गई थी। चार महीने मैं तिहाड़ जेल में बंद रहा। मेरे परिवार ने इस दौरान बहुत कष्ट झेले। मेरे जेल जाने की खबर से लोग इतने भयभीत थे कि मेरे परिवार वालों से भी बात नहीं करते थे लेकिन जब जनता पार्टी की सरकार बनी तो मुझसे कहा गया कि आप फिर से कॉलेज में शाम की शिफ्ट की जिम्मेदारी संभालें लेकिन मैंने साफ इन्कार कर दिया था। इतना ही नहीं जेल से मेरी रिहाई के बाद जब मैं कॉलेज आने लगा था तो जो लोग आपातकाल के दौरान मेरे परिवार से दूर रहते थे, वह जनता पार्टी आने के बाद कहने लगे थे कि अब तो आप मंत्री हो जाएंगे। तो आपातकाल में मैंने मनुष्य की परिवर्तित होती स्थिति को खूब देखा। एक बार कॉलेज में लाल कृष्ण आडवाणी को बुलाया गया था तब हमारे प्रधानाचार्य ने उनसे मेरा परिचय कराते हुए कहा कि यह गोयनका जी हैं जो आपातकाल में जेल थे, तब आडवाणी जी ने तुरंत कहा हां मैं इन्हें जानता हूं और इस बात से भी परिचित हूं कि यह जेल गए थे।

● बाहर तो मानवीय व्यवहारिक परिवर्तन देखा, लेकिन जब जेल में थे तो उस दौरान वहां कौन साथी बने, कैसा माहौल था?

-आपातकाल के दौरान दिल्ली विवि के करीब 150 प्रोफेसरों को जेल में डाला गया था। मेरे साथ जेल में डॉ. देवव्रत थे जो संस्कृत के बड़े विद्वान थे। ओपी कोहली को तो मीसा की जेल हुई थी। हमें जेल के एक ऐसे हॉल में रखा गया जहां केवल 20 कैदियों के रहने की जगह थी और उसमें हम 90 प्रोफेसर रहे। हम लोग फर्श पर एक कपड़ा बिछाकर सोते थे। जेल का जीवन बहुत नरकीय था और उस भयानक स्थिति में हम लोग रहने को मजबूर थे। हम लोग जेल में राशन लाने की व्यवस्था भी खुद करते थे। जेल की व्यवस्था ऐसी थी कि जो कैदी है वही कैदी पर शासन करता है। एक बार इतवार के दिन कैदी से हमने कचौड़ी बनवाई थी मैं कचौड़ी खाकर अपनी बैरक से बाहर आया तो एक कैदी मेरे पास आकर बोला कि मैं पांच साल से यहां हूं अगर आप मुझे दो कचौड़ी देंगे तो मैं खाना चाहता हूं, मैंने एक कागज में उसे कचौड़ी दे दीं। उसने एक साथ वह दोनों कचौड़ी खा लीं और उसकी आंख से आंसू भी निकलने लगे। मैंने उसे पूछा कि क्या हुआ तो वह बोला कि पांच साल बाद मुझे आज पता चला कि नमक का स्वाद कैसा होता है, तब मैंने सोचा गोयनका एक दिन ऐसी स्थिति तेरी भी हो सकती है। हमने बहुत ही भयावह स्थिति में जेल के अंदर दिन और रातें काटी थी।

● इतने वर्षों में आपने दिल्ली को कैसे बदलते देखा है?

- मुझे दिल्ली में आए 60 वर्ष हो गए। पहली बार जब दिल्ली आया था तब रेलवे स्टेशन के पास एक हैदरकुली बस स्टैंड भी होता था। मैं एक रिक्शा करके बहन के पास चांदनी चौक गया था। उस समय दिल्ली बहुत बड़ी लगती थी लेकिन धीरे-धीरे महसूस होने लगा कि जो दिल्ली उस जमाने में थी वह अब नहीं है। मेरे बहनोई का चांदनी चौक में होलसेल का बहुत बड़ा काम था उनके जरिए कई बड़े-बड़े व्यापारी मेरे संपर्क में भी आए। कुछ से अच्छे संबंध हो गए थे जो आज भी कायम हैं। इसमें में कुछ को मैं साहित्य और भाषा की ओर लाने में सफल भी हुआ। दिल्ली का विस्तार तो खूब हुआ लेकिन यहां की हवा बदल गई और लोग भी बदल गए। पहले बसों में दस पैसे का टिकट आता था और लोग दूर-दूर तक पैदल भी चल लेते थे लेकिन अब ऐसा वातावरण नहीं है।

मिले सम्मान

- हिंदी अकादमी द्वारा दो बार पुरस्कृत व सम्मानित।
- केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा का पं राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार।
- भारतेंदु हरिशचंद्र पुरस्कार।
- हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरिशस 2002।
- केके बिड़ला फाउंडेशन का व्यास सम्मान।
- प्रेमचंद पर 35 किताबें लिखने वाले साहित्यकार

● और आज देश जिस कोरोना संक्रमण से विश्व जूझ रहा है, राजधानी के साथ पूरा देश लॉकडाउन है, इस स्थिति को आप कैसे देखते है? आपने पहले कभी ऐसा अनुभव किया है इस शहर में?

– मैंने आपात का दंश झेला, चार माह की जेल का कष्ट भी देखा, लेकिन जीवन की यह अकल्पनीय घटना है। कोरोना वायरस के खतरे को देखते हुए पहले रविवार को जनता कर्फ्यू लगा। और अब 21 दिन तक पूरा देश लॉकडाउन। जिस ट्रेन के पहिए युद्ध के समय में नहीं थमे, आज सिर्फ उन पर मालगाड़ी ही चल रही हैं।

ऐसी स्थिति और, ऐसी महामारी हमने कभी नहीं देखी थी। इस महामारी ने हमें ही नहीं पूरे विश्व को संकट में डाल दिया है। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरे देश को सावधान करते हुए लॉकडाउन की घोषणा कर दी है और जनता को भी अपने साथ दूसरों की रक्षा के लिए इस लॉकडाउन का पालन करना चाहिए। लोग घर पर रहें सुरक्षित रहें, मैं भी अपने लिए और अपने परिवार व समाज के लिए घर पर हूं। परिवार के साथ समय बिताने का यह अच्छा मौका है। जनता इसमें अवश्य ही सफल होगी लेकिन इस महामारी के बाद हमें अपने रहने-सहने के तरीकों को बदलना होगा। अन्यथा प्रकृति ने बता दिया है कि उसके साथ खिलवाड़ मनुष्य को महंगा पड़ेगा।

इजराइल और मिस्र के बीच हुआ ऐतिहासिक शांति समझौता

1979 में आज ही इजराइल और मिस्र ने 30 वर्ष से जारी युद्ध को खत्म कर शांति समझौता किया। अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर की मौजूदगी में मिस्र के राष्ट्रपति अनवर-अल-सादात और इजराइली पीएम मेनाचेम बेगिन ने इसे अहम करार दिया।

लंदन स्टॉक एक्सचेंज में पहली बार महिलाओं की भर्ती

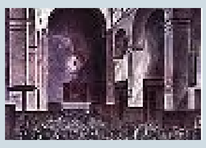

लंदन स्टॉक एक्सचेंज ने आज ही के दिन 1973 में अपने 200 वर्ष के इतिहास में पहली बार महिलाओं की भर्ती शुरू की थी। इसी वर्ष हुए चुनावों के बाद 10 निर्वाचित महिलाओं ने इसी दिन अपना कार्यभार संभाला था।

चिपको आंदोलन की हुई थी शुरुआत

1973 में आज ही के दिन उत्तराखंड में पेड़ों को बचाने के लिए चिपको आंदोलन के रूप में अनोखी पहल शुरू हुई। चमोली जिले के गोपेश्वर से आंदोलन की शुरुआत चंडीप्रसाद भट्ट और गौरा देवी ने की। सुंदरलाल बहुगुणा की भी सक्रिय भूमिका रही। इसमें पेड़ों को बचाने के लिए लोग उनसे चिपक जाते थे। आंदोलन के कई राज्यों में फैलने के बाद पर्यावरण देश का मुद्दा बन गया। इसके बाद केंद्र सरकार ने न सिर्फ वनों की रक्षा के लिए कानून बनाया, बल्कि पर्यावरण मंत्रालय का भी गठन किया।

इधर-उधर की

सोशल डिस्टेंसिंग का आइडिया हुआ वायरल

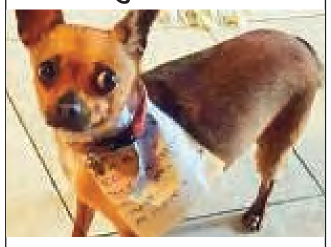

मेक्सिको सिटी, एजेंसी : बात मेक्सिको की है। यहां भी कोरोना का प्रकोप व्याप्त है। लिहाजा लोगों ने खुद को घरों में कैद कर लिया है। कुछ लोग तो जरूरी सामान खरीदने भी दुकान तक नहीं जा रहे हैं। ऐसे ही एक सज्जन हैं एंटोनियो मुनोज। तीन दिन सेल्फ आइसोलेशन में रहने के बाद इन्हें रोजमर्रा के कुछ सामान की जरूरत पड़ी तो अपने पालतू कुत्ते को भेज दिया। दुकान पर कुत्ते को भेजने के साथ ही उसके गले में लगे पट्टे पर बीस डॉलर का नोट और सामानों की सूची लगा दी। एक हिदायत भी लिख दी, कि अगर इसके साथ सही से नहीं पेश आया गया तो यह काट भी सकता है। हालांकि इस तरीके से उन्हें उनके जरूरत का सामान मिल गया। पूरे घटनाक्रम की तस्वीरें फेसबुक पर डाली तो 2.50 लाख लोगों ने शेयर किया। बाद में ट्विटर पर भी ये वायरल हो रही है।

अकाल मृत्यु से बचना है तो खूब चलें पैदल

अध्ययन ▸ अमेरिका स्थित नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने किया दावा

इस शोध का प्रकाशन जर्नल जामा में किया गया है

न्यूयॉर्क, आइएएनएस : यह हम सभी जानते हैं कि स्वस्थ रहने के लिए शारीरिक गतिविधि करना बेहद जरूरी है। ऐसे में फिट रहने के लिए पैदल चलना सबसे आसान तरीकों में से एक है। अब शोधकर्ताओं ने पाया है कि ज्यादा समय तक पैदल चलने से असामयिक (अकाल) मृत्यु से जुड़े खतरे कम हो जाते हैं। जर्नल जामा में प्रकाशित अध्ययन में बताया गया है कि एक व्यक्ति हर दिन कितने कदम पैदल चलता है, उसका मृत्यु से सीधा संबंध होता है। अध्ययन में यह भी कहा गया है कि कदम बढ़ाने की तीव्रता का मृत्यु के साथ कोई संबंध नहीं है।

अध्ययन के मुख्य लेखक अमेरिका स्थित नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट के पेड्रो सेंट-मौरिस ने कहा कि हम सभी यह जानते हैं कि शारीरिक गतिविधि स्वस्थ रहने के लिए जरूरी है, लेकिन हम यह नहीं जानते कि असामयिक मृत्यु के जोखिम को कम करने के लिए हमें कितने कदम रोजाना उठाने की जरूरत है या फिर तेजी से कदम उठाने से क्या असर होता है। हम इस सवाल की जांच इसलिए करना चाहते हैं ताकि लोग फिटनेस ट्रैकर्स और फोन एप के जरिऐ की जाने वाले कदमों की गिनती के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले असर को बेहतर ढंग से समझ सकें।

प्रतीकात्मक।

सेंट-मौरिस ने कहा कि अब तक के अध्ययन कदमों की संख्या और मृत्यु से उसके संबंधों को जानने के लिए की गई है। हालांकि, वे मुख्य रूप से बुजुर्गों के या फिर पुरानी बीमारी से पीड़ित लोगों पर किए गए थे। मौजूदा अध्ययन में 40 वर्ष और उससे अधिक आयु के 4,800 अमेरिकी वयस्कों को शामिल किया गया। इन लोगों ने 2003 और 2006 के बीच सात दिनों तक एक्सेलेरोमीटर पहना। इसके बाद 2015 के राष्ट्रीय मृत्यु सूचकांक के माध्यम से मृत्यु दर को आंका गया।

शोधकर्ताओं ने मृत्यु दर और कदमों की संख्या और इसकी तीव्रता के बीच की गणना के दौरान जनगणना, जोखिम, बॉडी मास इंडेक्स और स्वास्थ्य की स्थिति को भी ध्यान में रखा। निष्कर्ष के तौर पर उन्होंने पाया कि प्रतिदिन 4,000 कदम चलना वयस्कों के लिए पर्याप्त नहीं था। प्रति दिन 8,000 कदम चलने से मृत्यु का जोखिम 51 फीसद कम पाया गया। प्रति दिन 12,000 कदम चलने वालों में 4,000 कदम चलने वालों की तुलना में मृत्यु का जोखिम 65 फीसद तक कम पाया गया। इसके विपरीत, शोधकर्ताओं को कदमों की तीव्रता और मृत्यु के जोखिम के बीच कोई संबंध नहीं मिला।

शोधकर्ताओं के अनुसार, प्रतिभागियों के उपसमूहों के विश्लेषण में पाया गया कि ज्यादा कदम चलने वाले पुरुषों और महिलाओं, वयस्कों और बच्चों, सभी में मृत्यु का जोखिम कम हुआ। इसके अलावा ज्यादा कदम चलने वालों में हृदय रोगों और कैंसर का खतरा भी कम पाया गया। साथ ही इससे मोटापा कम करने में भी मदद मिली। शोधकर्ताओं का कहना है कि इससे मधुमेह-2 का खतरा भी कम हुआ। इसका सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि लोग खुद बेहतर महसूस करने लगे और उन्हें अच्छी नींद भी आई। इसलिए हमें रोजाना ज्यादा से ज्यादा पैदल चलना चाहिए।

फोटो न्यूज

चीन की पहली सौर दूरबीन

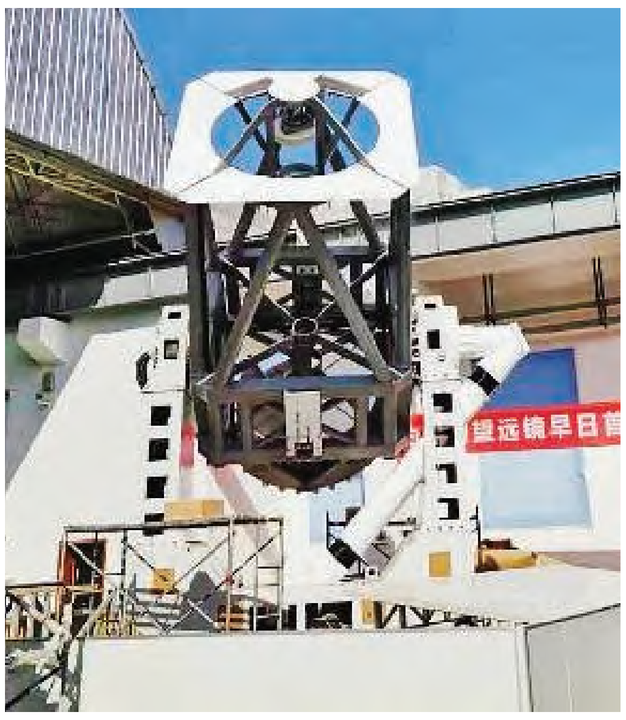

चीन की पहली और दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सौर दूरबीन ने काम करना शुरू कर दिया है। दूरबीन ने सौर वातावरण की पहली तस्वीर दिसंबर 2019 में ली थी। अमेरिका की चार मीटर व्यास की डीकेआइएसटी के परीक्षण के चरण में होने के कारण यह चीनी दूरबीन सबसे बड़ी सक्रिय दूरबीन बन गई है। चीनी विज्ञान अकादमी के वैज्ञानिकों के अनुसार इससे सौर गतिविधियों को बेहतर तरीके से देखा और अनुमान लगाया जा सकेगा। दूरबीन का अपर्चर 1.8 मीटर है। ट्विटर

वैज्ञानिकों ने चीते के पुनरुद्धार की उम्मीद जताई

नई दिल्ली, आइएसडब्ल्यू : अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं के एक संयुक्त अध्ययन में भारतीय वैज्ञानिकों ने भारत से लुप्त हो चुके चीते को दोबारा देश में उसके वन्य आवास में स्थापित करने की संभावनाओं का आकलन किया है। इस अध्ययन में वैज्ञानिकों ने जानने का प्रयास किया है कि अफ्रीकी चीता भारतीय परिस्थितियों में किस हद तक खुद को अनुकूलित कर सकता है। शोधकर्ताओं ने इस आनुवांशिक अध्ययन में एशियाई और अफ्रीकी चीतों के विकास क्रम में भी भारी अंतर का पता लगाया है।

इस अध्ययन में कोशिकीय एवं आणविक जीव विज्ञान केंद्र (सीसीएमबी), हैदराबाद के वैज्ञानिकों ने विलुप्त हो चुके भारतीय चीते के स्रोत का पता लगाया है। अध्ययन से पता चलता है कि विकास के क्रम में दक्षिण-पूर्व अफ्रीकी और एशियाई चीता दोनों का उत्तर-पूर्वी अफ्रीकी चीते के बीच विभाजन 100,000-200,000 साल पहले हुआ है। लेकिन दक्षिण-पूर्वी अफ्रीकी और एशियाई चीता एक दूसरे से 50,000-100,000 साल पहले अलग हुए थे।

अध्ययन में शामिल कैंब्रिज विश्वविद्यालय के डॉ. गाई जैकब्स के अनुसार यह मौजूदा धारणा के विपरीत है कि एशियाई और अफ्रीकी चीतों के बीच विकासवादी विभाजन मात्र 5,000 वर्षों का ही है। हालांकि, वैज्ञानिकों का कहना है कि

- **वैज्ञानिक यह जानना चाहते हैं कि अफ्रीकी चीता भारतीय परिस्थितियों में खुद को कैसे अनुकूलित कर सकता है**
- **अध्ययन में सीसीएमबी, हैदराबाद के वैज्ञानिक भी हैं शामिल**

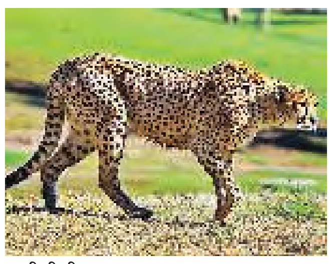

अफ्रीकी चीता। फाइल

भारत में एशियाई और अफ्रीकी प्रजातियों के चीतों के बीच प्रजनन के निर्णय को निर्धारित करने वाले प्रमुख मापदंडों में यह देखना अहम होगा कि चीतों की दोनों आबादी परस्पर रूप से कितनी अलग हैं। तभी इस बारे में सही निर्णय लिया जा सकता है।

सीसीएमबी के वरिष्ठ शोधकर्ता डॉ. के. थंगराज ने बताया कि हमने चीतों के तीन अलग-अलग नमूनों का विश्लेषण किया है। पहला नमूना चीते की त्वचा का था, जिसके बारे में माना जाता है कि उसे 19वीं शताब्दी में मध्य प्रदेश में मार दिया गया था, जो कोलकाता के भारतीय प्राणी सर्वेक्षण की स्तनपायी गैलरी से प्राप्त किया गया है। दूसरा नमूना मैसूर प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय से प्राप्त 1850-1900 के समय के चीते की हड्डी का है। जबकि, तीसरा नमूना नेहरू जूलॉजिकल पार्क, हैदराबाद से प्राप्त वर्तमान में पाए जाने वाले एक आधुनिक चीते के रक्त का है। सीसीएमबी की प्राचीन डीएनए सुविधा में दोनों ऐतिहासिक नमूनों (त्वचा और हड्डी) से डीएनए को अलग किया गया है और उसका विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन में शामिल एक अन्य शोधकर्ता डॉ. नीरज राय ने बताया कि हमने इन दो नमूनों के मिटोकांड्रियल डीएनए और वर्तमान में पाए जाने वाले चीतों के नमूनों को क्रमबद्ध किया है और अफ्रीका व दक्षिण-पश्चिम एशिया के विभिन्न भागों में पाए जाने वाले 118 चीतों के मिटोकांड्रियल डीएनए का विश्लेषण किया है। डॉ. थंगराज ने बताया कि भारतीय प्राणी सर्वेक्षण के संग्रहालय से प्राप्त नमूने एवं नेहरू प्राणी उद्यान के आधुनिक नमूने पूर्वोत्तर अफ्रीकी मादा वंश के हैं, जबकि मैसूर के संग्रहालय से प्राप्त नमूने दक्षिण-पूर्वी अफ्रीकी चीतों के साथ घनिष्ठ संबंध दर्शाते हैं।

चीता, जो बिल्ली की सबसे बड़ी प्रजाति है, की आबादी में लगातार कमी हो रही है। वर्तमान में इनकी सबसे बड़ी आबादी अफ्रीका में पाई जाती है, जिन्हें अफ्रीकी चीता कहा जाता है। दूसरी ओर, सिर्फ ईरान में मात्र 50 एशियाई चीते बचे हैं। लगभग एक दशक से भी अधिक समय से भारत में इस पर विचार किया जा रहा है कि क्या देश में चीतों को फिर से जंगलों में लाना चाहिए। इस अध्ययन में यह जानने की कोशिश की जा रही है कि क्या अफ्रीकी चीता भारतीय परिस्थितियों में खुद को ढाल सकता है। इस वर्ष के आरंभ में सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को देश में दक्षिणी अफ्रीकी चीते को अनुकूल आवास में रखने की अनुमति दी थी।

यह अध्ययन सीसीएमबी के अलावा बीरबल साहनी पुरा-वनस्पति विज्ञान संस्थान, लखनऊ, कैंब्रिज विश्वविद्यालय, ब्रिटेन, जोहानिसबर्ग विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका, नानयांग टेक्नोलॉजिकल विश्वविद्यालय, सिंगापुर के वैज्ञानिकों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया है। वैज्ञानिकों ने एशियाई और दक्षिण अफ्रीकी चीतों के विकास क्रम के विवरण को गहराई से समझने के लिए मिटोकांड्रियल डीएनए का विश्लेषण किया है। उन्होंने पाया कि क्रमिक विकास के साथ चीतों की ये दोनों आबादी एक-दूसरे से भिन्न होती गईं। यह अध्ययन हाल ही में शोध पत्रिका साइंटिफिक रिपोर्ट्स में प्रकाशित किया गया है।

सीसीएमबी के निदेशक डॉ. राकेश कुमार मिश्र ने कहा है कि यह अध्ययन एशियाई चीतों की आनुवांशिक विशिष्टता स्थापित करने की दिशा में साक्ष्य प्रदान करता है और उनके संरक्षण के लिए प्रयासों में मददगार हो सकता है।

क्लोरहेक्सिडाइन माउथवॉश से बढ़ता है दांतों के नुकसान का जोखिम

लंदन, आइएएनएस : आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले क्लोरहेक्सिडाइन माउथवॉश से लार अधिक अम्लीय हो सकती है और शोधकर्ताओं के अनुसार दांतों के नुकसान का खतरा बढ़ सकता है। जर्नल साइंटिफिक रिपोर्ट्स में प्रकाशित इस अध्ययन में क्लोरहेक्सिडाइन माउथवॉश का मौखिक माइक्रोबायोम पर प्रभाव देखा गया। अध्ययन में पाया गया कि इसके उपयोग से लैक्टेट बनाने वाले बैक्टीरिया की प्रचुरता बढ़ गई है जो लार में पीएच की मात्रा कम करते हैं। इससे अम्लता की मात्रा बढ़ती है और दांतों को नुकसान का जोखिम बढ़ सकता है। अध्ययन के अनुसार, शोधकर्ताओं ने प्रतिभागियों को सात दिनों के लिए एक प्लेसबो माउथवॉश दिया और इसके बाद सात दिनों के लिए क्लोरहेक्सिडाइन माउथवॉश दिया। प्रत्येक अवधि में, शोधकर्ताओं ने मुंह में बैक्टीरिया की प्रचुरता और विविधता (मौखिक माइक्रोबायोम) और साथ ही पीएच, लार बफरिंग क्षमता (मुंह में एसिड को बेअसर करने की क्षमता), लैक्टेट, ग्लूकोज और नाइट्रेट का विश्लेषण किया। अध्ययन के मुख्य लेखक ब्रिटेन के प्लायमाउथ विश्वविद्यालय के राउल बेस्कोस ने बताया क्लोरहेक्सिडाइन मुंह में माइक्रोबियल विविधता को कम करता है। उन्होंने यह भी कहा कि इस कमी को निर्धारित करने के लिए अधिक शोध की आवश्यकता है।

हृदय रोग से बचना है तो गुनगुने पानी से नहाएं

शोध अनुसंधान

अगर आप लंबी जिंदगी चाहते हैं तो गुनगुने पानी से भरे टब में नहाना शुरू कर दीजिए। एक नए अध्ययन से पता चला है कि गरम पानी से नियमित स्नान करने से हृदय रोग और स्ट्रोक से मौत का खतरा कम हो सकता है। जर्नल हार्ट में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, हफ्ते में एक-दो दिन की अपेक्षा रोजाना गुनगुने पानी से स्नान को ज्यादा सुरक्षित पाया गया है। यह दिल की सेहत के लिए बेहतर पाया गया। यह निष्कर्ष 45 से 59 साल की उम्र के करीब 43 हजार प्रतिभागियों पर किए गए वैज्ञानिकों के अध्ययन के आधार पर निकाला गया है। इन लोगों से नहाने की आदत और उनकी जीवनशैली के बारे में विस्तृत प्रश्नावली भरवाई गई थी। जापान के शोधकर्ताओं ने कहा, 'हमने गुनगुने पानी से भरे टब में स्नान का संबंध हाइपरटेंशन (उच्च रक्तचाप) के निम्न खतरे से पाया।' -आइएएनएस

पर्याप्त नींद की कमी दे सकती है डायबिटीज

अच्छी सेहत के लिए पर्याप्त नींद की भी जरूरत पड़ती है। इसकी कमी के चलते सेहत संबंधी कई समस्याएं खड़ी हो सकती हैं। अब एक नए अध्ययन में पाया गया है कि कम समय सोने से डायबिटीज का खतरा बढ़ सकता है। डायबिटीज विशेषज्ञों के अनुसार, जब हम पर्याप्त नींद लेते हैं तो ब्लड शुगर को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है। जबकि रात में ज्यादा खाना खाने और देर से सोने का संबंध ब्लड शुगर के खराब नियंत्रण से पाया गया है। ब्लड शुगर के उच्च और निम्न स्तरों का हमारी नींद में दखल होता है। इससे पूरे दिन थकावट महसूस होती है। यह निष्कर्ष टाइप-2 डायबिटीज से पीड़ित 194 रोगियों पर किए गए एक अध्ययन के आधार पर निकाला गया है। -आइएएनएस

मनरंजन

'खाने का बिल नहीं चुकाने देते थे फारुख साहब'

'गरम हवा', 'उमरावजान', 'साथ-साथ', 'चश्मे बद्दूर', 'नूरी', 'बाजार' जैसी फिल्मों में अपने अभिनय की छाप छोड़ चुके दिवंगत फारुख शेख के जन्मदिवस पर उनके करीबी मित्र राकेश बेदी ने उन्हें याद किया और यादें साझा कीं। दोनों ने साथ में 'चश्मे बद्दूर' और 'साथ-साथ' जैसी फिल्में की हैं। राकेश बेदी ने फोन पर बताया कि कॉल आने से पहले वह उन्हीं को याद कर रहे थे। मोबाइल पर वह 'उमराव जान' फिल्म का गाना सुन रहे थे और उनके सामने फारुख की तस्वीर आ गई थी। वह कहते हैं, 'मैंने सोचा था कि आज घर पर आंखें बंद करके उन्हें श्रद्धांजलि दूंगा।' राकेश बताते हैं कि 'हमारा ताल्लुक केवल फिल्मों के कारण ही नहीं था। हम दोनों इप्टा (इंडियन पीपल्स थियेटर एसोसिएशन) से जुड़े हुए थे। जब भी देश पर कोई आपदा आती थी, हम दोनों उस पर बातचीत करते थे। इन दिनों देश के जो हालात बन गए हैं, उसमें उनकी काफी याद आ रही है।' इन दिनों राकेश बेदी अपने घर में कविताएं और नाटक लिखने में वक्त बिता रहे हैं। वह जो नाटक लिख रहे हैं, वह दो किरदारों पर आधारित है, जिसमें एक हीरोइन है, जिसका वक्त

खत्म हो गया है, एक एक्टर है, जो महान एक्टर है, जिसे तरह-तरह के अवॉर्ड मिल चुके हैं। राकेश बताते हैं, 'अगर फारुख साहब जिंदा होते तो मैं उन्हें इस नाटक में जरूर कास्ट करता। फारुख साहब मुझे बहुत प्यार करते थे। उन्होंने कभी भी मुझे मेरे नाम से नहीं पुकारा। वह मुझे हमेशा 'यंग धरम' कहते थे। मैं उनसे कहता था कि न तो मेरी धर्मेंद्र जैसी पर्सनैलिटी है, न मेरी लंबाई है। तो वह कहते थे कि यह नाम लेते ही आपके चेहरे पर मुस्कान आती है, जो मुझे अच्छी लगती है। कम लोग जानते हैं कि फारुख साहब खान-खिलाने के बहुत ही शौकीन थे। अगर आप उनके साथ कहीं खाना खाने गए हैं, तो मजाल है कि वह आपको होटल का बिल भरने दें। अगर हम कहीं आउटडोर पर दस दिनों के लिए होते थे तो वह उस जगह के जितने भी प्रसिद्ध खाने की जगहें होती थीं, वह वहां सभी को साथ ले जाते थे, दस दिन खाना खिलाते थे, और किसी को पैसे नहीं देने देते थे। उनका सेंस ऑफ ह्यूमर ऐसा था कि अपने वन लाइनर से सभी को चित कर देते थे। उन्होंने कभी गाड़ी नहीं खरीदी, हमेशा टैक्सी और ऑटो में आते-जाते थे। एक और बात यह है कि वह कब व्यायाम करते थे, इसका किसी को पता नहीं है। पत्थर जैसे मजबूत उनके बाजू थे। उन्होंने कभी नहीं बताया कि वह कब व्यायाम करते हैं। उन्होंने कभी अपनी बॉडी का प्रदर्शन नहीं किया। हमारी कॉमन दोस्त हनी ईरानी के घर हम तीन चार दोस्त मैं, फारुख साहब, रमन कुमार, रमेश तलवार, अवतार गिल जी सालोंसाल हनी के यहां शाम को पहुंच जाते थे। वह हम सबको बढ़िया खाना खिलाती थीं। हम साथ बैठकर शाम को एक अच्छी फिल्म देखते थे।'

सुनीता कपूर को जन्मदिन पर मिलीं शुभकामनाएं...

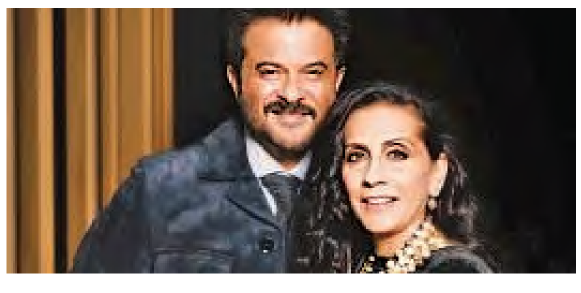

बुधवार को अनिल कपूर की पत्नी सुनीता कपूर ने अपना 55वां जन्मदिन मनाया। सुनीता के इस जन्मदिन पर अनिल और उनकी बेटी सोनम ने सोशल मीडिया पर उन्हें शुभकामनाएं दीं। मां के जन्मदिन पर उन्हें याद करते हुए सोनम ने सोशल मीडिया पर कई तस्वीरें साझा कीं। सोनम ने लिखा, 'आपने अपनी पूरी जिंदगी में प्यार और धैर्य के साथ हमारा मार्गदर्शन किया है। आपका जुनून, बुद्धिमत्ता और रचनात्मकता प्रेरणादायक है और आपकी बेटी होकर मैं अपने आप को खुशनसीब मानती हूं। जन्मदिन की शुभकामनाएं मां।' अनिल कपूर ने भी सुनीता के साथ तस्वीर साझा करते हुए लिखा, 'मेरी जिंदगी की उस वंडर वूमन को शुभकामनाएं, जिनका रवैया हमेशा नरम रहा। विश्वास करो, तुमसे ज्यादा तुम्हारा जन्मदिन मेरे लिए खास है। मैं खुश हूं, आप यहां हर दिन मेरे साथ हैं।' अनिल की इस शुभकामना का जवाब देते हुए सुनीता लिखा, 'मैं आपके बिना अपनी जिंदगी की कल्पना भी नहीं कर सकती हूं।'

बॉलीवुड अपडेट

रितिक के घर रहने आईं सुजैन...

कोरोना वायरस को हराने की जंग में बच्चों की देखरेख और उन्हें घरों तक सीमित रख पाना किसी चुनौती से कम नहीं है। ऐसे में माता-पिता की जिम्मेदारी ज्यादा बढ़ गई है। वहीं अपने बच्चों की कस्टडी साझा कर रहे पैरेंट्स के लिए बच्चों से दूर रह पाना आसान नहीं है। इसे ध्यान में रखते हुए रितिक रोशन से तलाक ले चुकीं उनकी पूर्व पत्नी सुजैन खान अपने बच्चों की खातिर उनके घर पर रहने आ गई हैं, ताकि उनके बच्चे दोनों में से किसी से भी दूर न रह सकें। 14 अप्रैल तक चलने वाले लॉकडाउन को देखते हुए दोनों ने उन पैरेंट्स के लिए मिसाल पेश की है, जो अपने बच्चों की कस्टडी को साझा करते हैं। बुधवार को रितिक ने सुजैन का आभार व्यक्त करते हुए भावुक संदेश सोशल मीडिया पर पोस्ट किया। उन्होंने लिखा, 'जब पूरा देश लॉकडाउन से गुजर रहा है और कई हफ्तों तक सोशल डिस्टेंसिंग की संभावना है, बतौर अभिभावक मैं अपने बच्चों से

दूर रहने की कल्पना नहीं कर सकता हूं। ऐसे समय में जब दुनिया एक साथ आ रही है और इंसानियत की बात कर रही है, अपने बच्चों की कस्टडी साझा करने वाले पैरेंट्स के लिए एक-दूसरे के अधिकारों का उल्लंघन किए बिना उन्हें अपने करीब रखना किसी आइडिया से बढ़कर है। रितिक ने सुजैन की तस्वीर पोस्ट करने के संदर्भ में आगे लिखा कि वह अस्थायी रूप से अपना घर छोड़कर बच्चों के पास पहुंची हैं, ताकि दोनों बच्चे हमसे डिस्कनेक्ट न हो सके।

रितेश, शरद समेत कई सितारों ने मनाया गुड़ी पड़वा

गुड़ी पड़वा को महाराष्ट्र में नए वर्ष के तौर पर मनाया जाता है। कई सितारों ने घरों में रहकर इस त्योहार को मनाया। रितेश देशमुख ने स्वस्थ रहने की कामना करते हुए महाराष्ट्रियन अंदाज में सिर पर पगड़ी बांधी। श्रद्धा कपूर ने भी ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीर साझा की है, जिसमें उनके साथ उनकी मम्मी और नानी नजर आ रही हैं। अभिनेता शरद केलकर ने एक तस्वीर साझा की है, जिसमें वह बेटी के साथ नजर आ रहे हैं। अमृता खानविलकर ने भी पारंपरिक वेशभूषा में अपनी तस्वीर साझा करते हुए सबको शुभकामनाएं दी हैं।

पोंछा लगाते हुए संजय मिश्रा ने कहा एंज्वॉइंग लाइफ...

इन दिनों घरों में सितारे घरवालों का हाथ भी बटा रहे हैं। इतना ही नहीं, वे ऐसा करते हुए अपने वीडियो और तस्वीरें भी सोशल मीडिया पर साझा कर रहे हैं। अभिनेता संजय मिश्रा ने भी एक वीडियो साझा की है, जिसमें वह फर्श पर पोंछा लगा रहे हैं। साथ ही उन्होंने लिखा, 'नवरात्र का पहला दिन, 21 दिनों का लॉकडाउन। सच कहा है किसी ने, बस एंज्वॉइंग लाइफ और ऑप्शन क्या है। अपने घरों में रहिए।' दरअसल, यह उनकी फिल्म 'कामयाब' का डायलॉग है, जो इसी महीने की शुरुआत में रिलीज हुई थी।

सोनाक्षी सिन्हा ने दिखाया अपना टशन...

सोनाक्षी सिन्हा ने एक बेहद दिलचस्प तस्वीर शेयर करते हुए घर पर रहने का संदेश दिया है। सोनाक्षी ने जो तस्वीर साझा की है, उसमें वह कैमरे पर टशन दे रही हैं और उनके हाथ में पिस्तौल है। इस तस्वीर के साथ उन्होंने अपने अंदाज में कैप्शन लिखा है, 'गलती से भी बाहर मत दिखना (केवल उन लोगों के लिए जो मेरी खिड़की से नजर आते हैं)।' इसके साथ ही सोनाक्षी ने हैशटैग के साथ स्टे होम स्टे सेफ और चुपचाप घर पे बैठो जैसी लाइनें लिखी हैं।

भड़के फैन, तो कट्रीना कैफ ने दी सफाई...

देश में डिजिटलीकरण का विकास होने के साथ जहां सितारों को अपने प्रशंसकों तक संदेश पहुंचाना आसान हुआ है, वहीं दूसरी तरफ ट्रोलिंग के रूप में उन्हें लोगों के गुस्से का भी शिकार होना पड़ता है। इस बार ट्रोलिंग का शिकार कट्रीना कैफ बनीं। दरअसल, कुछ दिनों से खबरें चल रही थीं कि कट्रीना विकास बहल के साथ किसी फिल्म में काम करने वाली हैं। जबकि विकास पर मीटू अभियान के तहत आरोप लगाया गया था कि फिल्म 'बांबे वेलेवेट' के दौरान उन्होंने अपनी एक महिला सहयोगी का यौन शोषण किया था। इसी बात को लेकर उन्हें ट्रोल किया जाने लगा। यह भी कहा जा रहा था कि इस फिल्म में वह अमिताभ बच्चन की बेटी के किरदार में दिखेंगी। इस पूरे मामले में कट्रीना ने स्वयं सफाई दी है। एक साक्षात्कार के दौरान उन्होंने इन खबरों का खंडन किया। और इसे अफवाह बताया।